गांधीजी
के पत्र
नेहरू
के नाम
(४२)
८१६
गांधी।गां

महात्मा गांधी के पत्र
नेहरू के नाम

महात्मा गांधी के पत्र नेहरू के नाम

महात्मा गांधी

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान
के सौजन्य से

लाईब्रेरी बुक सेन्टर
दिल्ली

MAHATMA GANDHI KE PATRA
NEHRU KE NAAM

MAHATMA GANDHI

मूल्य : 125 रुपये मात्र / प्रकाशन वर्ष : 1995
प्रकाशक : लाईब्रेरी बुक सेन्टर, दिल्ली-110006
टाइपसैटिंग : मानस टाइपसैटर, 21, दरियागंज, नयी दिल्ली-2
मुद्रक : एस० एन० प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

महात्मा गांधी के पत्र नेहरू के नाम **Rs. 125/-**

हरिजन-आन्दोलन ऊँच-नीच के भाव तक ही सीमित है। मैं मुसलमानों और भंगियों के साथ खाता हूँ, पर यह तो मेरी व्यक्तिगत बात है। मैं तो अपने को भंगी मानता हूँ, इसमें मेरे लिए कोई शर्म की बात नहीं। पर इसमें मेरा स्वेच्छाचार नहीं है, संयम है ओर ऐसा करने को मैं आपसे नहीं कहता। मैं शास्त्र के बाहर नहीं जाता। मैं तो सिर्फ धर्म का तत्व ही लोगों के सामने रख रहा हूँ। इस आन्दोलन का तो यही उद्देश्य है कि जो सामाजिक, नागरिक और धार्मिक हक दूसरे सवर्ण हिन्दुओं को मिले हुए हैं वही सब हरिजनों को भी मिलने चाहिएं।

—महात्मा गांधी

महात्मा गांधी के पत्र नेहरू के नाम

14 सितम्बर, 1921

भाई जवाहरलाल,

यू० पी० की कमेटी ने जो स्वदेशी प्रचार के लिये ग्रांट माँगी है उस बारे में बहुत सी खबर चाहिए। स्वदेशी का कारोबार किसके हाथ में रहेगा ? उनको चरखा का, करघा का, कपास का कुछ ज्ञान है ? किस तरह से व्यय किया जायेगा। मेरी सलाह है कि जो इस काम को करना चाहते हैं उनको मेरे पास मुंबई भेज दिया जाए। मैं इस माघ की आखिरी को मुंबई पहुँचने की उम्मीद रखता हूँ।

पिताजी मुझे कहते थे की अब भी तुम्हारी तबियत की रक्षा चाहिये। इतनी नहीं करते हो। ऐसा न होना चाहिए। दूध और रसमय फल का उपयोग करने की डाक्टर की सलाह को संपूर्ण अमल करने की मेरी सलाह है।

आपका

मोहनदास गांधी

20 सितम्बर, 1921

प्रिय मित्र,

मौलाना शौकत अली तथा मौ० मुहम्मद अली एवं अन्य लोगों की गिरफ्तारी को देखते हुए हम कार्यकर्त्ताओं में से कुछ को मिलने और स्थिति पर विचार करने की जरूरत है। कार्य-समिति की बैठक अहमदाबाद में 6वीं अक्तूबर को

होगी। परन्तु यदि हम 4 थी अक्तूबर को ठीक 1 बजे दिन में बम्बई में लेबर्नम रोड पर मिल सकें तो अच्छा होगा। क्या तुम कृपापूर्वक मुझे बम्बई के पते पर सूचित करोगे कि क्या तुम उपस्थित रहोगे ? मैं 2 अक्तूबर को बम्बई पहुँचूँगा।

तुम्हारे प्रान्त से मैंने केवल तुम्हें और मौलाना अब्दुल बारी, मौ० हसरत मोहानी तथा श्री ख्वाजा को निमन्त्रित किया है। तुम ऐसे किसी और मित्र को भी ला सकते हो जिसकी उपस्थिति (कार्य में) सहायक हो।

तुम्हारा निश्छल
मोहनदास क० गांधी

19 फरवरी, 1922

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे मालूम हुआ है कि तुम सबको कार्यसमिति के प्रस्तावों पर भयंकर पीड़ा हुई है। मुझे तुमसे हमदर्दी है और पिताजी की बात सोचकर मेरा दिल टूटता है। उन्हें जो पीड़ा हुई होगी, उसकी मैं अपने मन में कल्पना कर सकता हूँ। परन्तु मुझे यह भी अनुभव होता है कि यह पत्र अनावश्यक है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि पहले आघात के बाद स्थिति ठीक तरह से समझ में आ गई होगी। बेचारे देवदास की बचपन भरी नासमझियों का हमारे दिमाग पर बहुत बोझ नहीं होना चाहिए। बिल्कुल सम्भव है कि उस गरीब लड़के के पैर उखड़ गये हों और उसका मानसिक सन्तुलन जाता रहा हो। परन्तु इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि असहयोग आन्दोलन से सहानुभूति रखने वाली क्रोध से पागल भीड़ ने पुलिस के सिपाहियों की बर्बर ढंग से हत्या की। इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह भीड़ राजनीति चेतना रखने वाली भीड़ थी। ऐसी साफ चेतावनी पर ध्यान न देना बड़ा अपराध होता।

मैं बता दूँ कि यह चरम सीमा थी। वाइसराय के नाम मेरी चिट्ठी शंकाओं से रहित नहीं थी, जैसा कि उसकी भाषा से प्रकट है। मद्रास की करतूतों से भी मैं बहुत अशान्त हुआ था, किन्तु मैंने चेतावनी की आवाज को दबा दिया। मुझे कलकत्ता, इलाहाबाद और पंजाब से हिन्दुओं और मुसलमानों के पत्र मिले थे। यह सब गोरखपुर की घटना से पहले की बात है। उनका कहना था कि सम्पूर्ण दोष सरकारी पक्ष का ही नहीं है, हमारे लोग आक्रामक, हैकड़ और धमकाने वाले बनते जा रहे हैं; हाथ से निकले जा रहे हैं और उनका रवैया अहिंसक नहीं है। जहाँ फीरोजपुर जिले की घटना सरकार के लिए अपयशकारी है, वहाँ हम भी

एकदम निर्दोष नहीं हैं। हकीम जी ने बरेली के बारे में शिकायत की। मेरे पास झज्झर के विषय में कड़ी शिकायतें हैं। शाहजहाँपुर में भी टाउनहाल पर जबर्दस्ती कब्जा करने की कोशिश की गई। कन्नौज से भी स्वयं कांग्रेस के मन्त्री ने तार दिया कि स्वयंसेवक उद्दण्ड हो गये हैं और हाईस्कूल पर धरना देकर सोलह वर्ष से छोटे लड़कों को स्कूल जाने से रोक रहे हैं। गोरखपुर में छत्तीस हजार स्वयं सेवक भर्ती किये गये, जिनमें से सौ भी कांग्रेस की प्रतिज्ञा का पालन नहीं करते। जमनालाल जी मुझे बताते हैं कि कलकत्ता में घोर असंगठन है। स्वयंसेवक विदेशी कपड़े पहनते हैं और अहिंसा की प्रतिज्ञा से कतई बँधे हुए नहीं हैं। ये सब खबरें और दक्षिण से आई इससे भी अधिक सूचनाएँ मेरे पास थीं, तब चौरी-चौरा के समाचारों ने बारूद में जबर्दस्त चिनगारी का काम दिया और आग लग गई। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यदि यह चीज स्थगति न कर दी जाती तो हम एक अहिंसक आन्दोलन के स्थान पर वस्तुतः हिंसक संग्राम को चलाते। यह निस्सन्देह सत्य है कि देश के एक कोने तक अहिंसा गुलाब के इत्र की सुगन्ध की भाँति फैल रही है। परन्तु हिंसा की दुर्गन्ध भी अभी तक प्रवल है और उसकी उपेक्षा करना, उसे तुच्छ समझना, बुद्धिमानी नहीं है। हमारे इस तरह पीछे हटने से काम आगे बढ़ेगा। आन्दोलन, अनजाने ही, सही रास्ते से हट गया था। अब हमने अपनी पतवार फिर सँभाल ली है और सीधे आगे जा सकते हैं। घटनाओं को सही रूप में देखने के लिए तुम्हारी स्थिति जितनी प्रतिकूल है मेरी उतनी ही अनुकूल है।

दक्षिण-अफ्रीका का अपना अनुभव मैं बताऊँ ? जेलों में हमारे पास तरह-तरह की खबरें पहुँचाई जाती थीं। अपने पहले अनुभव के दो-तीन दिनों में तो मैं इधर-उधर के समाचार सुनकर प्रसन्न होता रहा, किन्तु मैंने तुरन्त समझ लिया कि इस रिश्वतखोरी में मेरा दिलचस्पी लेना बिल्कुल व्यर्थ है। मैं कुछ कर तो सकता नहीं था, मेरे किसी सन्देश के भेजने से कोई लाभ नहीं था और मैं व्यर्थ अपनी आत्मा को कष्ट पहुँचाता था। मैंने अनुभव किया कि जेल में बैठकर आन्दोलन का पथ-प्रदर्शन करना मेरे लिए असम्भव है। इसलिए मैं तो तब तक प्रतीक्षा ही करता रहा जब तक बाहरवालों से मुलाकात होकर खुलकर बातें नहीं हुईं। फिर भी मेरी बात सच मानो कि मैंने दिमागी दिलचस्पी ही ली, क्योंकि मैंने अनुभव किया कि किसी बात का निर्णय करना मेरे अधिकार के बाहर है। और मुझे मालूम हो गया कि मैं सही रास्ते पर हूँ। मुझे याद है कि किस तरह हर बार मेरे जेल से छूटने के समय तक जो विचार बनते थे, वे रिहाई के बाद और रूबरू जानकारी मिलने पर तुरन्त बदल जाते थे। जो, हो जेल के वायुमण्डल के कारण

हमारे मन में सारी बातें नहीं रहतीं। इसलिए मैं चाहूँगा कि तुम बाहर की दुनिया को अपने ख्याल से ही निकाल दो और यही समझ लो कि वह है ही नहीं। मैं जानता हूँ कि यह काम बहुत कठिन है, परन्तु यदि कोई गम्भीर अध्ययन शुरू कर दो और कोई शरीर-श्रम का काम हाथ में ले लो तो यह काम हो सकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि तुम कुछ भी करो किन्तु चर्खे से न उकताओ। तुम्हारे और मेरे पास बहुत-सी बातें करने और बहुत-सी मोन्यताएँ रखने पर अपने-आपसे अरुचि होने के कारण हो सकते हैं, किन्तु इस बात पर अफसोस करने का कभी कारण न मिलेगा कि हमने चर्खे पर श्रद्धा क्यों केन्द्रित कर ली या मातृभूमि के नाम पर हमने नित्य इतना अच्छा सूत क्यों काता। तुम्हारे पास "सांग सिलेशियल" है। मैं तुम्हें एडविन आर्नल्ड जैसा अप्रतिम अनुवाद तो नहीं दे सकता, किन्तु मूल संस्कृत का उल्था यों है :—"शक्ति व्यर्थ नहीं जाती, नष्ट तो होती ही नहीं। थोड़े-से धर्म से भी मनुष्य कई बार गिरने से बच जाता है।" इस धर्म का आशय कर्मयोग से है और हमारे युग का कर्मयोग चर्खा है। प्यारेलाल की मार्फत तुमने मुझे खून सुखानेवाली खुराक पिलाई है, उसके बाद तुम्हारा उत्साहवर्द्धक पत्र आना चाहिए।

तुम्हारा
मो० क० गांधी

15 मार्च, 1924

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। पणिक्कर के सम्बन्ध में तुम्हारा और मुहम्मद अली का, दोनों तार पहले ही मिल गये थे। तुम्हारे पत्र से मैं कुछ परेशानी में पड़ गया हूँ। नियुक्तियाँ और वेतन-निर्धारण आदि के बारे में कोई निश्चित मत बनाने का न मेरा इरादा कभी रहा और न इस समय है। चूँकि मैं जोजेफ के इस विचार से सहमत था कि पत्नी जब इतने कष्ट में है तब उनका उसके पास रहना जरूरी है और चूँकि जो सिख भाई मुझसे मिलने आये, वे इस बात के लिए बहुत उत्सुक जान पड़े कि गिडवानी के स्थान पर कोई अच्छा व्यक्ति मिल जाए, ऐसा व्यक्ति जो उनके पत्र 'आनवर्ड' का सम्पादन भार भी सम्हाल ले, इसलिए मैं उसकी तलाश में था। वे सुन्दरम को लेना चाहते थे, जो 'इण्डिपेण्डेण्ट' में काम करते थे और उन्होंने कहा कि वह प्रचार कार्य और सम्पादन दोनों कर सकते हैं। जब मैं अन्धेरी के निकट स्थित विश्राम-गृह में आया तो यही पणिक्कर से मेरी मुलाकात

हुई। श्री पणिकक्र को 'इण्डियन डेलीमेल' ने अपने यहाँ नौकरी करने को आमन्त्रित किया था। वह श्री एण्डरूज से इसी सम्बन्ध में सलाह मश्विरा करने आये थे। वह इस नौकरी को स्वीकार करने में हिचकिचा रहे थे, क्योंकि 'मेल' का राजनीतिक दृष्टिकोण उनके विचारों से भिन्न था, तब मुझे प्रचार कार्य का ध्यान आया और मैंने उनसे पूछा कि क्या वह इस भार को सँभाल सकेंगे। चूँकि मैं उन्हें अच्छी तरह से नहीं जानता था, मैंने श्री एण्डरूज से भी सलाह की और जब श्री पणिक्कर ने यह कहा कि अगर नेहरू जी को जरूरत हो तो मैं अमृतसर जा सकता हूँ। और चूँकि एण्डरूज की राय थी कि वह श्री गिडवानी के स्थान पर योग्य ठहरेंगे, मैंने तुम्हें तार कर दिया। लेकिन मेरी यह इच्छा नहीं थी कि तुम सिर्फ इसलिए अपने निर्णय में कोई रद्दोबदल करो कि तार मैंने भेजा है। यदि मैं स्वस्थ होता और सभी तथ्यों की जानकारी पा सकता तो मैं उम्मीदवारों के चुनाव के सम्बन्ध में बेशक, अपनी सलाह और विचार व्यक्त करता। लेकिन इस समय तो मैं उन चन्द बातों के अलावा, जो अत्यन्त आवश्यक हैं और किसी भी बात में अपनी शक्ति नहीं लगाना चाहता।

जहाँ तक वेतन का सवाल है, स्थिति यह थी। पणिक्कर 'स्वराज्य' कार्यालय में 700 रुपये माहवार पर नियुक्त हुए थे, लेकिन चूँकि पत्र आत्मनिर्भर नहीं है, वे लोग उन्हें कुछ महीनों का वेतन नहीं दे पाये हैं। श्री पणिक्कर ने नौकरी छोड़ दी, क्योंकि इस सवाल पर श्री श्रीनिवास आयंगार से उनका समझौता नहीं हो पाया। उन्हें मद्रास में 900 रुपये का एक कर्ज चुकाना है। उन्हें 300 रुपये माहवार की जरूरत है। इसलिए मैंने सोचा उन्हें 900 रुपये पेशगी दे दिये जाएँ तो वे अपना कर्ज चुकाकर अमृतसर के लिए रवाना हो जाएँगे। अमृतसर में अपना खर्च चलाने के लिए तो उन्हें फिर भी पैसों की जरूरत होगी ही। इसके लिए उन्हें ऋण के रूपमें 100 रुपये प्रतिमास दिया जाना चाहिए। इस तरह तीन महीने नौकरी करने के बाद वह कांग्रेस के 300 रुपये के कर्जदार होंगे। फिर यह रकम 100 रुपये प्रतिमास के हिसाब से उनके वेतन से ली जा सकती है। इसका अर्थ यह हुआ कि उन्हें जो कर्ज मिलेगा उसे चुकाने के लिए उन्हें छः महीने तक काम करना होगा। लेकिन अब मैं परेशानी में पड़ गया हूँ, क्योंकि तुम्हारे पत्र के द्वारा पता चलता है कि इतने अर्से के लिए शायद उनकी सेवाओं की जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं कांग्रेस पर व्यर्थ का खर्च लादने का निमित्त नहीं बनना चाहूँगा। इसलिए मैं सारी स्थिति श्री पाणिक्कर के सम्मुख रख देना चाहता हूँ। वह शायद इस बात पर सहमत हो जाएँगे कि अगर उनकी नौकरी छः महीने से पहले ही खत्म हो गई तो वह कर्ज की बकाया रकम अदा करने के लिए जिम्मेदार होंगे।

वह इस समय यहाँ नहीं हैं, अन्यथा मैं तुम्हें अधिक निश्चित पत्र भेजता।

मेरा ख्याल है, मुमकिन हुआ तो तुम नहीं चाहोगे कि मैं नौकरी की बाबत पणिक्कर के साथ तय हुई बात तोड़ दूँ। इसलिए उस बात को बरकरार रखकर मैं उन्हें कल अमृतसर भेज रहा हूँ। तुम्हारे सबसे आखिरी तार के मुताबिक वह सीधे अमृतसर जाएँगे। मैं पणिक्कर को जो रकम दूँगा, तुम खजांची से वह रकम फिर मुझे वापस देने को कह देना।

निश्चय ही अगर मेरा इरादा तुमसे अपने विचारों के अनुसार काम कराने का हो तो मैं तुमसे नियुक्ति के बारे में दो बातों को ध्यान में रखकर फिर से विचार करने के लिए कहूँगा।

(1) क्या कांग्रेस को कांग्रेस से बाहर के कार्य पर पैसा खर्च करना चाहिए ?

(2) कांग्रेस को अपने सेवकों को अधिक से अधिक कितना वेतन देना चाहिए ?

यह तो हुई काम-काज की बात। मेरा घाव पूरी तरह भर गया है, लेकिन चीरे की जगह अभी नरम है और उसके बारे में देखभाल और सावधानी रखना अत्यन्त आवश्यक है। अभी जो मैं समुद्र-तट पर आराम ले रहा हूँ, आशा है वह अनुकूल पड़ेगा। इसलिए सामान्यता यहाँ तीन महीने रहने का इरादा करता हूँ। इस अवधि में मुझसे जितना हो सकेगा उतना ही लिखने का काम करूँगा और कौंसिल प्रवेश आदि के सम्बन्ध में नेताओं से सलाह-मशविरा करता रहूँगा। इस महीने के अन्त तक (तुम्हारे) पिता जी, हकीम जी और अन्य लोगों के यहाँ आने की आशा है। मेरे साथ सलाह-मशविरा करने के लिए जब भी तुम्हारी इच्छा हो तुम निःसंकोच यहाँ आ जाया करो। चाहे जो हो, मुझे उम्मीद है कि तुम अगले महीने की 20 तारीख के आसपास तो मुझसे मिलने आओगे ही, क्योंकि मुझे मालूम हुआ है कि इस तारीख को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक होने वाली है। मुझे विश्वास है, तुम स्वस्थ हो और अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रख रहे हो।

पणिक्कर ने इस पत्र को पढ़ लिया और तुम जब भी चाहोगे, वह नौकरी से मुक्त होने तथा कर्ज की बाकी रकम चुकाने के लिए तैयार रहेंगे।

हृदय से तुम्हारा,

27 जुलाई, 1924

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मेरी राय में, तुम्हें जब्ती के कारण का पता लगाने के लिए सरकार से

पत्र-व्यवहार करना चाहिए, जिसमें तुम कहो कि यदि समिति को सचमुच आपत्तिजनक कोई बात बताई जाएगी तो तुम्हारी समिति उन अंशों को निकाल देने के लिए तैयार होगी। यदि सरकार असन्तोषप्रद उत्तर भेजती है, तो तुम उसे सूचित कर सकते हो कि कृतियाँ बन्द नहीं की जायंगी।

सरकार के बच्चों को छेड़ने की उम्मीद नहीं है और यदि वह ऐसा करती भी है तो वह सिर्फ इतना ही कर सकती है कि वह बच्चों से किताब लें ले। ऐसी हालत में बच्चों को सलाह दी जा सकती है कि पर्वा न करें और पुस्तकें पुलिस को सौंप दें। मैं नहीं समझता कि इसमें कोई दूसरा दण्ड भी है। कृपया कानून देखकर सूचित करो। मैं अनुभव करता हूँ कि हम चाहे जितने भी दुर्बल हो गये हों, यदि हम पर लड़ाई थोपी गई तो उस हम उससे भाग नहीं सकते। हम भले ही आक्रामक सविनय अवज्ञा न करें, हम भले ही सामूहिक सविनय अवज्ञा न शुरू करें, किन्तु जो हमारी राह में आता है और हमारी परीक्षा लेता है, उसका सामना तो हमें करना ही पड़ेगा। क्या तुम ऐसा नहीं समझते ? लड़ाई कैसे की जाए, यह ऐसा सवाल है जिसका स्थिति की आवश्यकतानुसार तुम्हें निर्णय करना है।

तुम्हारा सच्चा
मो० क० गांधी

6 सितम्बर, 1924

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा तार मिला। पिताजीकी ओर से भी मुझे तार और पत्र मिले हैं। जो कुछ हुआ, उसके लिए मुझे खेद है। मैंने सोचा था कि अपनी भावना की उत्कटता बताने के लिए मैं एक निर्दोष पत्र लिख रहा हूँ।

o o o

मैंने पिताजी से प्रार्थना की हैं कि मेरे प्रस्ताव के गुण दोष पर ही वह मुझे अपने विचार बतायें। स्वराज्य दल के बहुत मित्रों के साथ मैंने इसकी चर्चा कर ली है। कठिनाई में से और कोई सम्मानपूर्ण मार्ग मुझे दिखाई नहीं देता। इस बारे में उनका क्या ख्याल है, मुझे लिखना।

नाभा का जवाब उनके दृष्टिबिन्दु से तो पूरा और आखिरी था। उन्हें एक ही उत्तर दिया जा सकता है कि कैद करने की उनकी चुनौती स्वीकार कर ली जाए। परन्तु वर्तमान स्थिति में यह कदम उठाना समझदारी का काम नहीं दीखता।

इसलिए उत्तम बात यह है कि मौन रखकर और अधिक अच्छे अवसर की प्रतीक्षा की जाए।

अमेठी के बारे में तुमने जल्दी ही निवारण भेजा, वह मुझे मिल गया। गुलबर्गा की घटनाओं की जाँच करने के लिए मैंन श्वेब और कृष्णदास को खानगी तौर पर भेजा है। तुम यथाशक्ति जल्दी साँभर जाओ। अपने साथ...को और...को (ये नाम पढ़े नहीं जाते) लेते जाना। वे वहाँ के जानकार जरूर होंगे। मुहम्मद अली कोई खास प्रगति नहीं कर सके, इसलिए मेरे कार्यक्रम के सम्बन्ध में कुछ कहना कठिन है। सोमवार तक तो यहाँ हूँ ही।

बापू के आशीर्वाद

15 सितम्बर, 1924

प्रिय जवाहरलाल,

दिल को छूनेवाला तुम्हारा निजी पत्र मिला। मैं जानता हूँ कि इन सब चीजों का तुम बहादुरी से सामना करोगे। अभी तो पिता जी चिढ़े हुए हैं और मैं बिल्कुल नहीं चाहता कि तुम या मैं उनकी झुँझलाहट बढ़ाने का जरा भी मौका दें। सम्भव हो तो उनसे जी खोलकर बातें कर लो और ऐसा कोई काम न करो, जिससे वह नाराज हों। उन्हें दुःखी देखकर मुझे दुःख होता है। उनकी झुँझलाहट उनके दुःख की अचूक निशानी है। हसरत आज यहाँ आये थे। उनसे पता चला कि हर कांग्रेसी के कातने-सम्बन्धी मेरे प्रस्ताव से भी उन्हें अशान्ति होती है। मुझे ऐसा महसूस होता है कि कांग्रेस से हट जाऊँ और चुपचाप तीनों काम करने लगूँ। उनमें जितने भी सच्चे स्त्री-पुरुष मिल सकते हैं उन सबके खपने की गुंजाइश है। किन्तु इससे भी लोगों को अशान्ति होती है। पूना के स्वराज्यवादियों से मेरी लम्बी बातचीत हुई। वे कातने को भी जरा राजी नहीं और मेरे कांग्रेस छोड़ देने से भी सहमत नहीं। उनकी समझ में यह नहीं आता कि ज्योंही मैं अपना स्वरूप छोड़ दूँगा, मेरा कोई उपयोग नहीं रह जाएगा। यह भद्दी स्थिति है, किन्तु मैं निराश नहीं हूँ। मेरा ईश्वर पर विश्वास है। मैं तो इतना ही जानता हूँ कि इस घड़ी में मेरा क्या धर्म है। इससे आगे का मुझे मालूम ही नहीं। फिर मैं क्यों चिन्ता करूँ ?

क्या तुम्हारे लिए कुछ रुपये का प्रबन्ध करूँ ? तुम कुछ कमाई का काम हाथ में क्यों न ले लो ? आखिर तो तुम्हें अपने ही पसीने की कमाई पर गुजर करनी होगी, भले ही तुम पिताजी के घर में रहो। कुछ समाचारपत्रों के संवाददाता

बनोगे या अध्यापकी करोगे ?

प्रेम सहित, तुम्हारा
मो० क० गांधी

19 सितम्बर, 1924

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हें स्तब्ध नहीं होना चाहिए, बल्कि हर्ष मनाओं कि ईश्वर तुम्हें अपना कर्त्तव्य पालन करने का बल और आदेश दे रहा है। मैं और कुछ कर ही नहीं सकता था। असहयोग के प्रवर्त्तक की हैसियत से मेरे कन्धों पर भारी जिम्मेदारी है। लखनऊ और कानपुर में क्या छाप पड़ी, यह मुझे जरूर लिख भेजो। मुझे यह प्याला पूरा पी लेने दो। मुझे पूर्ण आन्तरिक शान्ति है।

प्रेम सहित
तुम्हारा
मो० क० गांधी

12 नवम्बर, 1924

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे यह बात जरूरी लगती है कि हमारे पास हिन्दू और मुसलमान कार्यकर्त्ताओं की एक द्रुतगामी टुकड़ी होनी चाहिए जो क्षणभर की सूचना पर प्रभावित क्षेत्रों में जाँच के लिए जा सके। हमें सदा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के ही जाने की राह नहीं देखनी चाहिए। उदाहरण के लिए कल जो मामला तुम्हारे पास भेजा गया है उसे ही लो। यदि उसमें दिये गये बयान ठीक है, तो अपराधियों का पर्दाफाश हो जाएगा। यदि वे झूठे हैं तो समाचारपत्रों के संवाददाता दोषी सिद्ध होंगे। जाँच कार्य तुरन्त और मुकम्मिल होने चाहिए। मैं महादेव को इस काम के लिए तैयार कर रहा हूँ और प्यारे लाल को भी इसके लिए राजी करना चाहता हूँ, जो अनावश्यक रूप से झिझक रहा है। क्या मंसूर अली यह काम करेंगे ? उन्हें इसके लिए उजरत दी जा सकती है। उन्हें पारिश्रमिक लेने पर कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए। उनके चर्खे के काम में बाधा पड़ने की जरूरत नहीं। उनका कार्य क्षेत्र संयुक्त प्रान्त तक ही सीमित रखा जा सकता है, यद्यपि मैं तब तक इस प्रकार के प्रतिबन्ध लगाने की तर्जीह न दूँगा। जब तक हमें इस क्षेत्र में काम

करने के लिए कार्यकर्त्ताओं की एक सेना न मिल जाए।

जो मामला कल तुम्हारे पास भेजा गया है, उसके लिए मुझे आशा है, तुम तुरन्त किसी को भेजोगे। उस मामले का क्या हुआ जो कुछ हफ्ते पहले तुम्हें भेजा गया था ?

तुम्हारा सच्चा
मो० क० गांधी

16 नवम्बर, 1924

प्रिय जवाहरलाल,

यह पंक्ति इस मंगल-कामना के साथ लिख रहा हूँ कि मातृभूमि की सेवा और आत्म-दर्शन के हेतु यह शुभ दिन बार-बार आता रहे।

सम्भव हो तो पिता जी को लेकर जरूर आना।

सस्नेह तुम्हारा
मो० क० गांधी

25 अप्रैल, 1925

प्रिय जवाहरलाल,

मैं तीथल में हूँ। यह जगह कुछ-कुछ जुहु जैसी है। यहाँ मैं बंगाल की अग्नि-परीक्षा के लिए तैयार होने को चार दिन से आराम ले रहा हूँ। मैं यहाँ अपना पत्र-व्यवहार निपटाने की कोशिश कर रहा हूँ। उसमें तुम्हारा वह पत्र भी है, जिसमें 'ईश्वर और कांग्रेस' शीर्षक लेख का जिक्र है। तुम्हारी कठिनाइयों में मेरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है। चूँकि सच्चा धर्म जीवन में और संसार में सबसे बड़ी चीज है, इसलिए इसी का सबसे अधिक दुरुपयोग किया गया है और जिन लोगों ने इन शोषकों और शोषण को तो देखा और वास्तविकता को नहीं देख पाये, उन्हें स्वभावतः इस वस्तु से ही अरुचि हो गई। परन्तु धर्म तो आखिर प्रत्येक व्यक्ति की वस्तु है और वह भी हृदय की वस्तु है, फिर चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारो। जो चीज मनुष्य को घोर ज्वालाओं के बीच अधिक-से-अधिक सान्त्वना देती है वही ईश्वर है। कुछ भी हो, तुम सही रास्ते पर हो। बुद्धि ही एकमात्र कसौटी हो तो भी मुझे पर्वा नहीं। हालांकि उससे प्रायः मनुष्य पथभ्रष्ट हो जाता है और ऐसी गलतियाँ कर बैठता है जो लगभग अन्धविश्वास के निकट

पहुँच जाती हैं। गोरक्षा मेरे लिए केवल गाय को बचाने से कहीं बड़ी चीज है। गाय तो प्राणि-मात्र का प्रतीक है। गोरक्षा का मतलब है दुर्बलों, असहायों, गूँगों और बहरों की रक्षा। फिर तो मनुष्य सारी सृष्टि का प्रभु और स्वामी न रहकर सेवक बन जाता है। मेरी दृष्टि में गाय दया का जीता-जागता उपदेश है। फिर भी हम तो गोरक्षा के साथ निरा खिलवाड़ करते हैं, किन्तु हमें शीघ्र ही वस्तु-स्थिति के साथ जूझना पड़ेगा।

आशा है, मेरे पिछले पत्र सब तुम्हें मिल गये होंगे। डा० सत्यपाल का एक दुःखभरा पत्र मुझे मिला है। काश तुम, भले कुछ ही दिन के लिए सही, पंजाब जा सको। तुम्हारे जाने से उनका उत्साह बढ़ेगा। मैं चाहता हूँ कि पिताजी दो महीने किसी शान्त और ठण्डे स्थान पर रहें और तुम हफ्ते दस दिन के लिए अल्मोड़ा क्यों नहीं चले जाते, ताकि काम के साथ ठण्डी हवा में भी साँस ले सको?

सस्नेह, तुम्हारा
बापू

30 सितम्बर, 1925

प्रिय जवाहर,

हम विचित्र समय में रह रहे हैं। शीतला सहाय अपना बचाव कर सकते हैं। आगे की घटनाओं से मुझे परिचित रखना। वह क्या है ? वकील हैं ? उनका कभी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों से कोई सम्बन्ध रहा है ?

कांग्रेस की बात यह है कि उसे जितना सादा बना दिया जाए उतना अच्छा है ताकि जो कार्यकर्त्ता रह गए हैं, वे उसे सँभाल सकें। मैं जानता हूँ, तुम्हारा बोझ अब बढ़ेगा। परन्तु तुम्हें अपने स्वास्थ्य को किसी भी तरह खतरे में नहीं डालना चाहिए। मुझे तुम्हारी तन्दुरुस्ती की चिन्ता है। तुम्हें बार-बार बुखार आना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। काश तुम स्वयं और कमला थोड़ी छुट्टी ले लो।

पिताजी का पत्र मेरे पास आया है। बेशक जहाँ तक उनकी मान्यता है, उतनी दूर जाना मैं हर्गिज नहीं चाहता था। मैं पिताजी को आर्थिक सहायता देने के लिए किसी से कहने की बात सोचता तक नहीं। किन्तु किसी मित्र या मित्रों से, जो तुम्हारी सार्वजनिक सेवाओं के वदले में तुम्हारी सहायता करना अपना सौभाग्य समझें, कहने में मुझे कोई संकोच न होगा। मैं तो आग्रह करूँगा कि तुम्हारी जो स्थिति है और रहेगी, उसके कारण, यदि तुम्हारी आवश्यकताएँ

असाधारण न हों तो तुम्हें सार्वजनिक कोष से लेना चाहिए। मेरा अपना तो दृढ़ मत है कि कोई व्यवसाय करके या अपनी सेवा सुरक्षित रखने के लिए किसी मित्र को अपने लिए रुपया जुटा देने देकर तुम सामान्य कोष की वृद्धि करोगे। तुरन्त कोई जल्दी नहीं है, किन्तु इधर-उधर परेशान न होकर किसी अन्तिम निश्चय पर पहुँच जाओ। तुम कोई व्यवसाय करने का फैसला करो तो भी मुझे आपत्ति नहीं होगी। मुझे तो तुम्हारी मानसिक शान्ति चाहिए। मैं चाहता हूँ कि किसी व्यवसाय के प्रबन्धक की हैसियत से भी तुम देश की सेवा ही करोगे। मुझे विश्वास है, जब तक तुम्हारे किसी भी निश्चय से तुम्हें पूर्ण शान्ति मिलती होगी, तब तक पिताजी को कोई आपत्ति नहीं होगी।

सस्नेह, तुम्हारा
बापू

21 जनवरी, 1926

प्रिय जवाहर,

मुझे खुशी है कि तुम कमला को अपने साथ ले जा रहे हो। हाँ, दोनों नहीं आ सको तो जाने के पहले कम से कम तुम्हें तो यहाँ आना चाहिए। देशबन्धु स्मारक के बारे में जमनालाल जी के नाम तुम्हारा पत्र काफी होगा। चर्खा संघ के मन्त्री तो तुम रहोगे ही, किन्तु यदि कोई सहायक चाहिए तो शंकरलाल के पास होना चाहिए। नक्शा तैयार न करने के लिए मैं तुम्हें दोष नहीं दे सकता। तुमने अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाया है। तुम्हारे पास यूरोप में काम करने लायक कपड़े होने चाहिए।

सस्नेह, तुम्हारा
बापू

5 मार्च, 1926

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पहली तारीख का पत्र मिला। यद्यपि तुम डा० मेहता के नाम पत्र छोड़ ही गये हो, फिर भी दुगनी निश्चिन्तता कर लेने के लिए मैंने भी उन्हें लिखा है। आशा है, जहाज पर कमला का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहा होगा। तुम सबको

समुद्र-यात्रा से लाभ हुआ ? अधिक लिखने के लिए समय नहीं है।

सस्नेह, तुम्हारा
मो० क० गांधी

23 अप्रैल, 1926

प्रिय जवाहरलाल,

मैं प्रति सप्ताह तुम्हें लिखने का विचार करता रहा और हर बार असफल रहा। किन्तु यह सप्ताह मैं यों ही नहीं गुजर जाने दूँगा। तुम्हारे बारे में ताजे समाचार मुझे पिताजी से मिले, जब वह प्रतिसहयोगवादियों के साथ यहाँ आये थे। जो समझौता हुआ, वह तुमने देख लिया होगा।

हिन्दू और मुसलमान दिन-दिन एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं, किन्तु इस बात से मुझे अशान्ति नहीं होती। किसी भी कारण से सही, मुझे मालूम होता है कि यह अलगाव इसीलिए बढ़ रहा है कि आगे चलकर वे सब और नजदीक आयें।

मैं आशा करता हूँ, कमला को लाभ हो रहा है।

सस्नेह, तुम्हारा
बापू

25 मई, 1927

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र तब मिला जब मैं रोग-शय्या पर था और बहुत पत्र-व्यवहार नहीं कर सकता था। अभी मैं अच्छा हो रहा हूँ और हल्का-हल्का काम ही कर पाता हूँ। किन्तु मेरी प्रगति बराबर जारी है।

अब तुम्हें वहाँ लम्बा समय हो गया, किन्तु मैं जानता हूँ कि तुमने उसे बेकार नहीं खोया है। फिर भी मुझे आशा है कि जब तुम लौटेगे तब तक कमला पूरी तरह स्वस्थ हो जाएगी। यदि उसके स्वास्थ्य के लिए ज्यादा दिन रहना जरूरी हो तो मैं मान लेता हूँ कि तुम वहाँ रह जाओगे।

दलित राष्ट्र-सम्मेलन की कार्रवाइयों के बारे में मैंने तुम्हारा सार्वजनिक विवरण और तुम्हारा निजी गुप्त विवरण भी खूब ध्यान लगाकर पढ़ा। खुद मुझे इस संघ से बहुत आशा नहीं है, क्योंकि और कुछ कारण न भी हो तो यह तो है

ही कि उसकी स्वतन्त्र प्रवृत्ति का दारोमदार उन्हीं सत्ताओं के सद्भाव पर है, जो दलित राष्ट्रों के शोषण में भागीदार हैं, और मेरा ख्याल है कि यूरोपीय राष्ट्रों के जो सदस्य इस संघ में सम्मिलित हुए वे अन्त तक गर्मी कायम नहीं रख सकते। कारण, जिसे वे अपने स्वार्थ की हानि समझेंगे उसमें वे अपने को अनुकूल नहीं बना सकेंगे। इधर यह खतरा है कि हमारे लोग अपनी भीतरी शक्ति का विकास करके मुक्ति प्राप्त करने के बजाय उसके लिए फिर बाहरी शक्तियों की ओर देखने और बाहरी सहायता ढूँढ़ने लगेंगे। किन्तु यह तो कोरी दिमागी राय है। मैं यूरोप की घटनाओं का ध्यानपूर्वक अवलोकन नहीं कर रहा हूँ। तुम मौके पर हो और तुम्हें वहाँ के वातावरण में वास्तविक सुधार दिखाई दे सकता है, जो मुझे बिल्कुल दिखाई नहीं देता।

तुम्हारे आगामी कांग्रेस का अध्यक्ष चुने जाने की कुछ चर्चा है। इस विषय में मेरा पिताजी से पत्र-व्यवहार हो रहा है। हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पर महासमिति के सर्वसम्मत प्रस्ताव के बावजूद यहाँ भविष्य बिल्कुल उज्जवल नहीं है। पता नहीं कि सिर फोड़ने का सिलसिला किसी भी तरह रोका जाएगा या नहीं। आम लोगों पर हमारा नियन्त्रण नहीं रहा और मुझे ऐसा दिखाई देता है कि अगर तुम अध्यक्ष बन गये तो सर्वसाधारण की दृष्टि से तुम कम-से कम साल भर के लिए तो खो जाओगे। फिर भी इसका यह अर्थ नहीं कि कांग्रेस के काम की उपेक्षा करनी है। किसी न किसी को तो उसे करना ही है। किन्तु बहुत लोग हैं जो इस काम को करने के लिए रजामन्द और उत्सुक हैं, उनकी नीयत मिली-जुली या स्वार्थपूर्ण भी हो सकती है, परन्तु वे कांग्रेस की गाड़ी किसी न किसी तरह चलाते रहेंगे। संस्था सदा उनकी मर्जी पर उनके हाथ में रहेगी, जिनमें सामूहिक कार्य करने के गुण होंगे और जिनका आम लोगों पर काबू हो जाएगा। तब प्रश्न यह है कि तुम्हारी सेवाओं का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जा सकता है ? तुम्हारा अपना जो विचार हो, वह तुम्हें करना चाहिए। मुझे मालूम है कि तुममें अनासक्त विचार करने की क्षमता है और तुम दादाभाई या मैकस्विनी की तरह बिल्कुल निःस्वार्थ होकर कहोगे कि "यह ताज मेरे सिर पर रख दो।" और मुझे कोई सन्देह नहीं कि वह रख दिया जाएगा। स्वयं मुझे मार्ग इतना स्पष्ट नहीं दिखाई देता कि मैं वह ताज जबर्दस्ती तुम्हारे सिर पर रख दूँ और उसे पहनने के लिए तुम्हें समझाऊँ। पिताजी ने यदि पहले ही न लिख दिया हो तो इसी डाक से तुम्हें लिखेंगे। इस पत्र की एक नकल उनके पास भिजवा रहा हूँ।

अच्छा हो, तुम भी अपनी इच्छा की सूचना समुद्री तार द्वारा दे दो। जुलाई के अन्त तक मेरे बंगलौर में रहने की सम्भावना है। इसलिए तुम अपना तार

सीधे बंगलौर भेज सकते हो, या बिल्कुल पक्की बात करनी हो तो आश्रम के पते पर भेज दो। मैं जहाँ भी जाऊँगा वहीं वह तार दोहरा दिया जाएगा।

तुम सबको प्यार।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

4 जनवरी, 1928

प्रिय जवाहरलाल,

मेरा ख्याल है, तुम्हें मुझसे इतना अधिक प्रेम है कि मैं जो कुछ लिखने जा रहा हूँ उसका तुम बुरा नहीं मानोगे। मुझे तो तुमसे इतना अधिक प्रेम है कि जब मुझे लिखने की आवश्यकता प्रतीत हो तब मैं अपनी कलम को रोक नहीं सकता।

तुम बहुत ही तेज जा रहे हो। तुम्हें सोचने और परिस्थिति के अनुकूल बनने के लिए समय लेना चाहिए था। तुमने जो प्रस्ताव तैयार किये और पास कराये उनमें अधिकांश के लिए एक साल ठहरा जा सकता था। "गणतन्त्री सेना" (रिपब्लिकन-आर्मी) में तुम्हारा कूद पड़ना जल्दबाजी का कदम था। परन्तु मुझे तुम्हारे कामों की इतनी चिन्ता नहीं, जितनी तुम्हारे शरारतियों और हुल्लड़बाजों को प्रोत्साहन देने की है। पता नहीं, तुम अब भी विशुद्ध अहिंसा में विश्वास रखते हो या नहीं। परन्तु तुमने अपने विचार बदल दिये हों तो भी तुम यह नहीं सोच सकते कि अनधिकृत और अनियन्त्रित हिंसा से देश का उद्धार होने वाला है। यदि अपने यूरोपीय अनुभवों के प्रकाश में देश के ध्यानपूर्वक अवलोकन से तुम्हें विश्वास हो गया हो कि प्रचलित तौर-तरीके गलत हैं तो बेशक अपने ही विचारों पर अमल करो, किन्तु कृपा करके कोई अनुशासनबद्ध दल बना लो। कानपुर का अनुभव तुम्हें मालूम है। प्रत्येक संग्राम में ऐसे मनुष्यों की टोलियाँ चाहिए जो अनुशासन मानें। तुम अपने अस्त्रों के बारे में लापरवाह होकर इस तत्व की उपेक्षा कर रहे हो।

अब तुम राष्ट्रीय महासभा के कार्यवाह मन्त्री हो। ऐसी सूरत में मैं तुम्हें सलाह दे सकता हूँ कि तुम्हारा कर्त्तव्य है कि केन्द्रीय प्रस्ताव अर्थात् एकता पर और साइमन कमीशन के बहिष्कार के महत्वपूर्ण किन्तु गौण प्रस्ताव पर अपनी सारी शक्ति लगा दो। एकता के प्रस्ताव के लिए संगठन करने और समझाने बुझाने के तुम्हारे समस्त बड़े गुणों के उपयोग की जरूरत है। मेरे पास अपनी बातों का विस्तार करने के लिए समय नहीं है, परन्तु बुद्धिमान के लिए इशारा

काफी होना चाहिए।

आशा है, कमला का स्वास्थ्य यूरोप की तरह ही अच्छा होगा।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

11 जनवरी, 1928

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

मैं आशा करता हूँ, चाँद संकट से मुक्त हो गई होगी।

मेरा मुद्दा यह नहीं है कि तुमने अपने किसी प्रस्ताव पर विचार नहीं किया था, फिर स्वतन्त्रता के प्रस्ताव की तो बात ही क्या, किन्तु मेरा मुद्दा यह है कि न तो तुमने, न और किसी ने सम्पूर्ण परिस्थिति पर विचार किया या प्रस्तावों के परिणाम एवं औचित्य पर ध्यान दिया। सर्वोत्तम प्रस्ताव भी असम्बद्ध और अप्रासंगिक हो सकते हैं। किन्तु तुम्हें कांग्रेस पर मेरे लेखों को ध्यान देकर पढ़ना चाहिए। स्वतन्त्रता पर मेरा विशेष लेख कल प्रकाशित होगा।

एकता प्रस्ताव में बहुत सुधार की जरूरत है।

जब भी तुम आ सको, अवश्य आओ और जब आने लगो तो अपनी रचना साथ ले जाओ और अपने को काफी वक्त दो।

यह (पत्र) खण्डान्वित-सा लगेगा परन्तु इस समय मैं तुम्हें और ज्यादा नहीं लिख सकता।

बापू

15 जनवरी, 1928

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला है जिसे तुम्हारे द्वारा मुझे लिखे जा सकने वाली और सब चीजों से मैंने ज्यादा पसन्द किया है क्योंकि इसे तुमने पूरी तरह खुलकर लिखा है और मैं वह लेख लिखकर प्रसन्न हूँ कि (उसके कारण) मैं तुम्हारे मन से वे सब बातें बाहर ला सका, जिन्हें तुम इन लंम्बे वषो में अपने अन्दर रखे हुए थे। किन्तु इसके विषय में बाद में।

यह पत्र बोलकर मैं तुम्हें यह कहने के लिए लिखा रहा हूँ कि बेचारा ब्राकवे

बुरी हालत में है। मुझे ज्ञात हुआ है कि उन्हें और भी गम्भीर ढंग का एक दूसरा आप्रेरशन करवाना होगा और हिन्दुस्तान में और कई महीनों तक रुकना पड़ेगा। मुझे यह भी पता चला है कि पिताजी द्वारा भारतीय कांग्रेस कमेटी के साथ यह बात हुई थी कि उनके इंग्लैण्ड से भारत आने और लौटने का राह खर्च कांग्रेस देगी। अगर बात ऐसी ही है तो मैं समझता हूँ कि हमें उनका अस्पताल का खर्च भी देना चाहिए, यह देखते हुए कि वह कांग्रेस में ही आ रहे थे। मुझे पता चला है कि अपने अस्पताल के खर्च के कारण वह शीघ्र ही ऋणी हो जाएँगे। क्या तुम पता लगाकर आवश्यक कार्रवाई करोगे तथा जरूरी हो तो खुद ही कार्रवाई चालू करोगे।

मुझे पता लगा है कि मद्रास कमेटी ने पहले ही लगभग चार सौ दिये हैं। सिर्फ अस्पताल के चार्ज ही बारह रुपये प्रतिदिन हो जाते हैं। मैं श्रीनिवास आयंगर को भी लिख रहा हूँ।

तुम्हारा सच्चा

बापू

17 जनवरी, 1928

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे बोलकर लिखवाने के द्वारा समय बचाना और अपने दुखते हुए कन्धे को आराम देना होगा। रविवार को मैंने तुम्हें फेनर ब्राकवे के बारे में लिखा था। आशा है कि तुम्हें वह पत्र ठीक समय पर मिल गया होगा।

तुम्हें मालूम है कि जिन लेखों की तुमने आलोचना की है, उन्हें सिवा कथित 'अखिल भारतीय प्रदर्शिनी' वाले लेख के, मैंने इसीलिए लिखा था कि तुम उल्लिखित कार्य-विवरण में मुख्य हिस्सेदार थे। मुझे एक प्रकार की सुरक्षा महसूस होती थी कि तुम्हारे मेरे बीच के सम्बन्धों को देखते हुए मेरे लेखों को उसी भावना से समझा जाएगा, जिससे वे लिखे जाते थे। फिर भी मैं देखता हूँ कि यह तो सब ओर भूल ही भूल हुई। मुझे इसकी परवाह नहीं। कारण यह स्पष्ट है कि ये लेख ही तुम्हें उस आत्मदमन से मुक्त कर सकते थे, जिसके नीचे तुम इतने वर्षों से दबे जा रहे थे। यद्यपि मुझे तुम्हारे मेरे बीच का दृष्टि-भेद कुछ-कुछ दिखाई देने लगा था, फिर भी मुझे तनिक भी कल्पना नहीं थी कि ये मतभेद इतने भयंकर हो जाएँगे। जहाँ तुम देश की खातिर और इस विश्वास में कि मेरे साथ और मेरे नीचे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी काम करके तुम राष्ट्र की सेवा

करोगे और आँच आये बिना निकल आओगे, तुम अपने-आपको बहादुरी के साथ दबा रहे थे, वहाँ तुम उस स्थिति में रहे, तुम उन्हीं चीजों की उपेक्षा करते रहे, जो अब तुम्हें मेरी गम्भीर त्रुटियाँ दिखाई देती हैं। मैं 'यंग इण्डिया' के पृष्ठों में तुम्हें दिखा सकता हूँ कि इतने ही जोरदार लेख मैंने महासमिति की कार्रवाइयों की बाबत तब लिखे थे जब मैं कांग्रेस का सक्रिय पथ-प्रदर्शन कर रहा था। जब कभी महासमिति की बैठकों में गैर-जिम्मेदारी और जल्दबाजी की बातें या कार्रवाई होती थी तब भी मैं इसी तरह बोला हूँ। किन्तु जब तक तुम मूर्छित अवस्था में थे तब तक ये चीजें आज की तरह नहीं खटकीं और इसलिए तुम्हारे पत्र की असंगतियाँ बताना मुझे बेकार मालूम होता है। इस समय मुझे तो भावी कार्रवाई की ही चिन्ता है।

यदि मुझसे कोई स्वतन्त्रता चाहिए तो मैं उस नम्रतापूर्ण अचूक वफादारी से तुम्हें पूरी स्वतन्त्रता देता हूँ, जो तुमसे मुझे इन तमाम वर्षों में मिली है और जिसकी मैं तुम्हारी स्थिति की जानकारी प्राप्त हो जाने के कारण अब और भी कद्र करता हूँ। मुझे बिल्कुल साफ दिखाई देता हे कि तुम्हें मेरे और मेरे विचारों के विरुद्ध खुली लड़ाई लड़नी चाहिए। कारण, यदि मैं गलती पर हूँ तो मैं स्पष्ट ही देश की वह हानि कर रहा हूँ, जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती और उसे जान लेने के बाद तुम्हारा धर्म है कि मेरे विरुद्ध विद्रोह में खड़े हो, अथवा तुम्हें अपने निर्णयों के ठीक होने में कोई शंका है तो मैं खुशी से तुम्हारे साथ निजी रूप में उनकी चर्चा करने को तैयार हूँ। तुम्हारे और मेरे बीच मतभेद इतने विशाल और मौलिक हैं कि हमारे लिए कोई मिलन की जगह दिखाई नहीं देती। मैं तुमसे अपना यह दुःख नहीं छिपा सकता कि मैं तुम्हारे जैसा बहादुर, वफादार, योग्य और ईमानदार साथी खोऊँ, परन्तु कार्य की सिद्धि के लिए साथीपन की बलि देनी पड़ती है। इन सब विचारों से कार्य को श्रेष्ठ मानना चाहिए। किन्तु साथीपन के इस विछोह से—यदि विछोह होना ही है—हमारी व्यक्तिगत घनिष्ठता में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। हम लम्बे अर्से से एक ही परिवार के सदस्य बन चुके हैं और राजनीतिक मतभेदों के होते हुए भी हम वैसे ही बने रहेंगे। मुझे कई लोगों के साथ ऐसे सम्बन्ध रखने का सौभाग्य प्राप्त है। उदाहरण के लिए शास्त्री को ही ले लो। उनके मेरे राजनीतिक दृष्टिकोण में जमीन-आसमान का फर्क है, किन्तु उसके मेरे बीच जो स्नेह सम्बन्ध राजनीतिक मतभेदों का भान होने के पहले ही पैदा हो चुका था, वह बना हुआ है और कई अग्नि परीक्षाएं पास करके भी जीवित रह गया है।

तुम्हारी पताका फहरे, इसका शानदार तरीका सुझाऊँ ? मुझे प्रकाशन के

लिए एक पत्र लिखो, जिसमें तुम्हारे मतभेद प्रकट किये गये हों। मैं उसे 'यंग इण्डिया' में छाप दूँगा और उसका संक्षिप्त उत्तर लिख दूँगा। तुम्हारा पहला पत्र मैंने पढ़ने और जवाब देने के बाद फाड़ दिया था। दूसरा रख लिया है और अगर तुम कोई और पत्र लिखने का कष्ट नहीं उठाना चाहते तो जो पत्र मेरे सामने है उसी को छापने के लिए तैयार हूँ। मुझे पता नहीं, इसमें कोई बुरा लगनेवाला अंश है। किन्तु कोई हुआ तो, विश्वास रखो, मैं ऐसे हर अंश को निकाल दूँगा। मैं उस पत्र को एक स्पष्ट और प्रामाणिक दस्तावेज मानता हूँ।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

26 फरवरी, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारे पत्र मिले हैं। दिल्ली में जो रहा है वह सब मैं महसूस कर रहा हूँ और तुमने अपने पत्र में जो कुछ लिखा है, उसका प्रत्येक शब्द समझ सकता हूँ। ज्यों-ज्यों दिन-प्रति-दिन मैं कान्फरेंस की कार्रवाई का अध्ययन करता हूँ और उनके आशय का अनुमान करता हूँ तो उससे मुझे कितनी वेदना होती है उसकी पर्याप्त धारणा तुम्हें नहीं करा सकता। पिताजी के प्रकाशपूर्ण पत्र ने दूर से किये मेरे अध्ययन की पुष्टि ही की है। इसके बाद कल कृष्णदास को कृपलानी का पत्र मिला और उस पर आखिरी रंग देनेवाला तुम्हारा पत्र आज मिला। हम लोग लार्ड बर्केनहेड की गुस्ताखी और कमिश्नरों की कुटिलता के विरुद्ध कैसा दुःखद पार्ट कर रहे हैं ? मैंने सर जान साइमन से कुछ विशेष आशा नहीं की थी, किन्तु मैं उनके द्वारा नौकरशाही की सब ज्ञात चालबाजियाँ ग्रहण किये जाते देखने के लिए तैयार नहीं था और यह अस्पृश्यों विषयक नवीनतम व्यापार तो सम्पूर्ण चित्र को ही गन्दा कर देता है। फिर भी हमें धीरज रखना होगा। इसलिए तुम धैर्यपूर्वक इस यन्त्रणा को बर्दाश्त करो और उसमें जहाँ सुधार कर सको, करो।

जितनी जल्द सम्भव हो, आ जाओ। मैं आशा करता हूँ कि कमला, यदि अपनी शक्ति बढ़ा नहीं पा रही है तो उसे रख तो रही है। मुझे पता नहीं कि पिताजी ने तुमसे वह बात कही है या नहीं कि जब तुम्हारे आने के पूर्व, वह मेरे साथ बंगलौर में थे तो उन्होंने और मैंने, गर्मियों में उसके भव्य मौसम के कारण बंगलौर में तुम्हारे ठहरने के बारे में सोचा था। अब कष्टप्रद मौसम के सिर्फ चार सप्ताह ही शेष बचे हैं किन्तु तुम सदा नदी हिल पर जा सकते हो, जो बंगलौर से

केवल 35 मील की दूरी पर है और जहाँ तुम्हें आनन्दायिनी शीलत ऋतु मिलेगी। स्विटजरलैण्ड में कमला ने जो प्राप्त किया है उसे किसी भी तरह खोने का मौका उसे नहीं देना चाहिए।

तुम्हारा सच्चा
बापू

20 मार्च, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। अभी तो मैं तुम्हारे द्वारा बताये हुए मित्र को एक सन्देश भेजन के लिए ही यह पत्र लिख रहा हूँ। अब तो उन्होंने सीधे मुझे लिखा है किन्तु जैसा कि मैंने वादा किया था, सन्देश तुम्हें भेज रहा हूँ। वह साथ है।

मैं आशा करता हूँ कि तुम मेरे लेखों को, जो मैं बहिष्कार और मिलों के ऊपर लिख रहा हूँ, पढ़ते जा रहे होगे। मैं मिल मालिकों के साथ सलाह मश्विरा भी कर रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि वे किसी बात पर राजी होंगे किन्तु यदि तुम्हें कोई बात गलत या कमजोर मालूम पड़े, तो तुम कृपा करके मुझे बता दोगे।

कमला का क्या हाल-चाल है ? गर्मियों की ऋतु में उसे रखने के लिए तुम कहाँ जा रहे हो ?

तुम्हारा सच्चा
बापू

1 अप्रैल, 1928

मेरे प्रिद जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है।

साथ की प्रतियों से तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मिल-मालिकों के साथ समझौते में क्या प्रगति हुई है। फिर भी मैं तुम्हारी इस बात से सहमत हूँ कि इस समय उनसे कुछ परिणाम नहीं निकल सकता। किन्तु उचित समय आने पर समझौतों का फल निकल सकता है। एक समय वह था कि मिल-मालिक बहिष्कार तथा खादी-प्रचार के सर्वथा विरुद्ध थे। इन समझौते की बातों के समाप्त होने पर मैं फिर लिखूँगा।

यद्यपि रोमें रोलां का प्रथम पत्र, जिसकी उम्मीद थी, आ गया है और उसमें मेरे प्रस्तावित प्रवास के प्रति बड़े उत्साह का भाव है, फिर भी उससे मैं किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका हूँ। ज्यों-ज्यों किसी निश्चित निर्णय पर पहुँचने का समय नजदीक आता जा रहा है, मेरी हिचकिचाहट बढ़ रही है। परन्तु शायद अगले सप्ताह रोलां से कोई समुद्री तार प्राप्त हो और वह मेरे भाग्य का निर्णय कर दे।

इसी बीच, सिंगापुर जाना तो नहीं ही हो रहा है। अभी तो मैं यहीं रहूँगा। यदि मैं यूरोप नहीं गया तो मुझे बर्मा जाना और दो महीने वहाँ पहाड़ियों में जाकर तथा अपने निवास काल को वहाँ धनसंग्रह करके बिताना है।

मैं भी तुम्हारे इस मत का हूँ कि किसी न किसी दिन हमें धनिकों और बोलने वाले शिक्षित वर्ग के बिना ही कोई गहरा आन्दोलन छेड़ना होगा। किन्तु वह समय अभी नहीं आया है।

तुमने यह नहीं लिखा कि कमला गर्मी के महीने कहाँ बितायेगी ?

तुम्हारा सच्चा
बापू

5 अप्रैल, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

'यंग इण्डिया' के अंक में तुम मिलों पर मेरा लेख देखोगे। सबसे ताजी बात यह है कि वे, हमारे सन्दर्भ के बिना ही, अपनी तरफ से एक स्वदेशी संघ खोलना चाहते हैं। ऐसा ख्याल न करो कि मेरी चेष्टा से कोई ठोस बात होने वाली है। उन्हें अपनी योजनाओं पर जाने दो। जहाँ तक मैं देखता हूँ, हमें निश्चित रूप से अपना ध्यान घूम-घूम कर खादी बेचने पर सीमित करना चाहिए।

यूरोपीय प्रवास के विषय में अभी तक कोई अन्तिम निर्णय नहीं हो पाया है। मैं खुद ही इससे दूर हट रहा हूँ और यह रोलां से कुछ और संकेत पाने पर, जो मुझे अगले सप्ताह मिलेगा, निर्भर करता है।

तुम्हारा सच्चा
बापू

8 अप्रैल, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है। मुझे याद नहीं पड़ता कि पिताजी ने मुझसे यह बात कही हो कि वह इस महीने के अन्तिम सप्ताह में मिल-मालिको से मश्विरा करने के लिए बम्बई लौटेंगे। किन्तु उन्होंने और मैंने विस्तार के साथ, विदेशी वस्त्र-बहिष्कार के प्रश्न पर बातचीत की थी और (इस विषय पर) सेठ लाल जी, शान्तिकुमार, सेठ अम्बालाल, कस्तूर भाई और मंगलदास की कान्फ्रेंस में मश्विरा भी किया था। यह एक अच्छी कान्फरेंस थी किन्तु उसमें कोई निश्चित बात नहीं हुई। अब मैंने निश्चित रूप से सुना है कि मिल-मालिक अपनी खुद की स्वदेशी लीग स्थापित करने जा रहे हैं, जिसका मतलब यही है कि हमारे बीच किसी प्रकार का समझौता नहीं हो पा रहा है।

आज लाल जी से मेरी लम्बी वार्त्ता हुई है क्योंकि वह यहाँ दो दिनों तक थे। वह विदेशी वस्त्र-बहिष्कार के विषय में उत्साहित हैं। मैंने उन्हें साहित्य दिया है। उन्होंने यहाँ तक सुझाव दिया कि मैं कुछ नेताओं को निमन्त्रित करूँ और उनसे बहिष्कार के विषय पर बातचीत करूँ। मैंने उनसे कहा कि मुझमें वैसा करने की हिम्मत नहीं है। उनकी राय है कि यदि बहिष्कार के विषय में गहरा प्रचार कार्य करना है, तो मुझे देश के बाहर नहीं जाना चाहिए। इस बात में तो मैं भी उनसे सहमत हूँ, किन्तु जब तक राजनीतिक मानस वाला भारत पूरे हृदय से मेरे साथ न हो और जब तक ब्रिटिश माल, मुख्यतः ब्रिटिश माल, मुख्यतः ब्रिटिश वस्त्र, के अस्थायी बहिष्कार का आन्दोलन बन्द न कर दिया जाए, तब तक मैं गहरे प्रचार का काम नहीं ले सकता। इसलिए हम इस अस्थायी व्यवस्था पर सहमत हुए हैं कि यदि प्रसिद्ध नेताओं की ओर से स्वयं प्रसूत कार्य के रूप में कोई ठोस बात सामने आती है, तब मैं यूरोप जाने का विचार छोड़ दूँगा। इसके विपरीत यदि कोई ठोस बात नहीं होती, और मुझे और तरह से भी अपना रास्ता साफ दिखाई देता है, तो मैं यात्रा पर रवाना हो जाऊँ और लाल जी तथा दूसरे ऐसे लोग जो उनके जैसे मानस के हो, विदेशीवस्त्र-बहिष्कार के गहरे प्रचार कार्य के लिए वातावरण तैंयार करें—फिर चाहे इसमें मिलों की मदद न भी मिले। इसलिए मेरा सुझाव है कि तुम डा० अंसारी तथा दूसरों से सलाह मश्विरा करो—मैं समझता हूँ कि सभी पंजाब जाएँगे—और खादी के जरिये विदेशी वस्त्र बहिष्कार का प्रस्ताव पास करो। मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहूँगा कि उसमें विदेशी मिलों के वस्त्र की कोई चर्चा न हो। तुम तो बस इतना कह सकते हो : "चूँकि राष्ट्र की सम्मिलित शक्ति के तुरन्त प्रदर्शन रूप में विदेशी वस्त्र बहिष्कार का एकमात्र साधन ही

उपलब्ध है, यह सम्मेलन सब सम्बन्धित जनों से अनुरोध करता है कि वे विदेशी वस्त्रों का पूर्ण बहिष्कार करें और उनकी जगह हाथ की कती-बुनी खादी को अपनायें—फिर चाहे इसके कारण परिधान के विषय पर अपनी रुचि बदलनी ही क्यों न पड़े और चाहे इसमें कुछ आर्थिक क्षति ही क्यों न हो।" तुम मुझे उस व्यक्तिगत वार्तालाप के परिणाम से भी सूचित करना जो तुम मित्रों के साथ करोगे और फिर मुझे सलाह भी देना कि क्या मुझे यूरोप जाने के विचार को त्याग कर देना चाहिए। डा० अंसारी को, वस्तुतः यह निर्णय करने में समर्थ होना चाहिए।

तुम्हारा सच्चा

बापू

17 अप्रैल, 1928

प्रिय मेरे जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है। क्या तुम जानते हो कि जब तुमने मुझे लिख दिया था कि तुम पंजाब जा रहे हो, तब भी मुझे यह मालूम नहीं था कि तुम सम्मलेन के अध्यक्ष के रूप में जा रहे हो ? जब डा० किचलू ने मुझे लिखा था तब उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं कहा कि अध्यक्ष कौन होने वाला है। जो भी हो, जब मुझे मालूम हुआ कि अध्यक्षता तुमने की, तो मुझे खुशी हुई।

निश्चय मैं सब जगह वही देखता हूँ जो तुमने सम्मेलन में देखा। मुझे ताज्जुब है कि मैं जो कुछ सर्वत्र अनुभव कर रहा हूँ—गम्भीरता का सर्वथा अभाव तथा निरन्तर लगन के साथ कोई ठोस काम करने की ओर अरुचि, उस पर तुम्हारा ध्यान गया है या नहीं।

क्या तुम्हें पंजाब में हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के लिए कोई आशा प्राप्त होती है ?

जहाँ तक यूरोप यात्रा का सवाल है, अब भी मैं तुम्हें कोई निश्चित समाचार देने में असमर्थ हूँ।

जहाँ तक मिलों की निष्फल बातचीत का सवाल है, तुम अब तक पिताजी से सब कुछ जान चुके होंगे।

बापू

24 अप्रैल, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र मुझे मिल गया। मगनलाल की मृत्यु के रूप में मुझ पर जो विपत्ति आई है, उसे तुम निश्चित रूप से जान ही चुके हो। यह स्पष्ट ही असहनीय है। फिर भी, मैं वीर मुद्रा बनाये हुए हूँ।

मैंने उस प्रस्ताव को नहीं पढ़ा था जिसमें कांग्रेस से "शान्तिमय एवं उचित साधनों का "त्याग कर" सम्पूर्ण सम्भव उपायों के रूप में अभिव्यक्ति को बदलने के लिए कहा गया था। मैं स्वतन्त्रता (इण्डिपेण्डेण्ट) को तो निगल सकता हूँ, 'सम्पूर्ण सम्भव उपायों' तो अग्राह्य है। किन्तु मैं समझता हूँ कि हमें ऐसे पेट का विकास करना होगा जो किसी भी विष को घूँटने के लिए पर्याप्त शक्तिमान हो। फिर भी मैं आशा करता हूँ कि तुम अपनी इच्छा और समार्थ्य के बाहर अपना शोषण नहीं होने दोगे।

अब यह स्पष्ट हो गया है कि मिल-मालिक कांग्रेस से सौदा करना चाहते थे। किन्तु मैं इन निष्फल समझौता वार्त्ताओं के लिए दुखी नहीं हूँ। उन्होंने वातावरण को स्पष्ट कर दिया है।

रोमें रोलां के जिस पत्र की प्रतीक्षा थी, वह रविवार को मिल गया। मैं उनसे जिस भार को उठाने की आशा रखता था, उसे वह उठा सकेंगे। इसलिए मैं इस साल (यूरोप) नहीं जा रहा हूँ। किन्तु इस विषय में सब कुछ 'यंग-इण्डिया' के पृष्ठों में पढ़ोगे

तुम्हारा सच्चा
बापू

17 जून, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिल गये। कमला और इन्दु विषयक समाचार चिन्ताजनक हैं। मैं तुमसे और निश्चित सूचना की आशा कर रहा हूँ। मैं दोनों के लिए और कम से कम कमला के लिए तो निश्चित रूप से, गरीब आदमियों की दवा अर्थात् नितम्ब-स्नान एवं कटि-स्नान सुझाने को ललच रहा हूँ। परन्तु मैं जानता हूँ कि यह व्यवहारिक नहीं है और उसे मामूली उपचार के बीच से ही गुजरना होगा।

मुझे आशा है, एक सर्वसम्मत विधान का मस्विदा परिपूर्ण रूप में कमेटी

द्वारा प्रकाशित किया जाएँगा।

महादेव एक आश्रम कूप के चबूतरे से बुरी तरह गिर पड़े हैं। वह शय्याग्रस्त परन्तु पहले से अच्छे हैं।

बापू

3 जुलाई, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला है, पिताजी ने कमला एवं इन्दु के विषय में सब कुछ मुझे लिखा था।

इतना स्पष्ट है कि हमें किसी उचित समझौते के योग्य वातावरण प्राप्त नहीं है। जरा खड्गपुर की विभीषिका को तो देखो। दोनों पक्ष अपने होश में आवें, इसके पहले जमकर और लड़ाइयाँ लड़नी पड़ेंगी।

मेरी कामना है कि तुम अकेला अनुभव न करोगे। हमें इतना मान लेना चाहिए कि कार्यकर्त्ताओं के सामने का काम सरल नहीं है, जैसा कि एक समय हम उसे समझते थे। मैं चाहूँगा कि तुम धीरज न खोओ और कोई मशक्कत का काम, उसमें जीवित श्रद्धा रखकर, अपना लो। भगवद्गीता तुम्हारी पथदर्शक पुस्तिका हो।

प्रेमपूर्वक

बापू

29 जुलाई, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

मैं आशा करता हूँ, कमला और इन्दु विकसित हो रही हैं। मुझे तुम्हारा तार और पत्र मिल गये हैं। अध्यक्षता का मामला तो अब खत्म हुआ।

मैं यह पत्र भीवज जी (भुवरजी ?) के विषय में तुमसे सलाह लेने के लिए लिख रहा हूँ। उन्होंने आश्रम से अपने को बीस रुपया प्रति मास देने को कहा है और इसके लिए वह एक सौ रुपये पेशगी चाहते हैं। मैं चाहूँगा कि तुम मुझे बताओ कि वह कैसे काम कर रहे हैं और आया तुम्हें सन्तोष दे रहे हैं। अखिल भारतीय चर्खा संघ तो उन्हें कुछ देगा नहीं और दे सकता भी नहीं। क्या तुम आश्रम को उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की सलाह देते हो ? वह किस तरह काम कर रहे हैं ?

तुम्हारा सच्चा

बापू

17 नवम्बर, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम्हारे पत्र से मेरी सब चिन्ता दूर हो गई है। जब तक तुम एजेण्ट के रूप में काम करने को राजी हो, तब तक कोई परिवर्तन करने की जरूरत नहीं और तब तो निश्चित रूप से नहीं, जब तुम्हारे पकड़कर भगा लिये जाने की अफवाह उठ रही है। जब घटना घटेगी तब हमें देखेंगे। जब तुम अपने कन्धे पर यह बोझ न उठा सको तब के लिए मैं व्यक्तिशः कृपलानी के एजेण्ट बनने के विचार को पसन्द करता हूँ। यदि तुम 19 दिसम्बर को वर्धा आ सकते हो तब तक इस विषय पर और बातचीत कर लेंगे या फिर वैसा कलकत्ता में करेंगे।

शीतला सहाय और किसी बात से अधिक अपने मानसिक सन्तुलन के ख्याल से कुछ महीने आश्रम में रहना चाहता था। कुछ घरेलू तथा अन्य चिन्ताएँ उसके दिमाग पर सवार हैं। वह शान्त समय चाहता था और वह उसे पा रहा है।

कमला के लिए मैं दुखी हूँ। स्पष्ट है कि स्विटजरलैण्ड में वह पूर्णतः नीरोग नहीं हुई थी। मुझे खुशी है कि तुम उसे कलकत्ता ले जा रहे हो। (वहाँ) उसे सम्भव सर्वोत्तम सलाह तो मिलेगी।

मुझे आशा है, तुम अपनी सीमा से ज्यादा श्रम नहीं कर रहे हो। लालाजी की मृत्यु एक भारी संकट है।

तुम्हारा सच्चा

बापू

28 नवम्बर, 1928

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र प्राप्त हो गया है। यदि तुम फिर म्यूनिसपलटी में प्रवेश करते हो– जब तक कि तुम इस शर्त पर प्रवेश नहीं करते कि तुम्हारे प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता का पालन किया जाएगा, निश्चय ही मुझे दुःख होगा। यदि तुम्हें झगड़ों को सुलझाने के लिए अन्दर जाना पड़ रहा हो, तो यह तुम्हारे योग्य बात नहीं है। मेरा विश्वास है कि तुम अपने अखिल भारतीय काम को ठोस म्युनिसपल कार्य के साथ संयुक्त नहीं कर सकते। ठोस म्युनिसपल कार्य खुद अपने में एक पूरा काम है और वह एक आदमी की सम्पूर्ण क्रियाशक्ति, जो वह लगा सकता है, चाहता है और मैं यह नहीं पसन्द करूँगा कि वहाँ तुम्हारा काम ठोस के सिवा कुछ और हो।

मुझे क्रिश्चियन कान्वेशन में शरीक होने के लिए मैसूर जाना था। मैंने वर्ष के मध्य भाग में मित्रों को ऐसी आशा दिलाई थी, किन्तु एक महीने पूर्व उन लोगों का सूचित कर दिया कि यदि मुझे जरा भी विश्राम लेना हो तो मेरा जाना असम्भव है।

तुमने कमला के विषय में मुझे जो समाचार दिया था, वह बुरा है। कलकत्ता में उसका इलाज किये जाने का विचार मुझे पसन्द है। वहाँ उसे सर्वोत्तम सम्भव डाक्टरी सलाह प्राप्त होगी।

मैं आशा करता हूँ कि तुम यहाँ बैठक में उपस्थित होने के लिए समय निकालोगे।

तुम्हारा सच्चा
मो० क० गांधी

3 दिसम्बर, 1928

प्रिय जवाहर,

तुम्हें मेरा प्यार। सब काम वीरतापूर्वक किया गया। तुम्हें इससे भी अधिक वीरता के कार्य करने हैं। भगवान तुम्हें दीर्घायु करे और भारत को गुलामी के जुए से छुड़ाने से तुम्हें अपना विशेष अस्त्र बनाए।

तुम्हारा,
बापू

12 जनवरी, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम्हारा तार मुझे मिला। बाँदा और झाँसी के कुछ कार्यकर्त्ताओं के आग्रह को मानकर मैं निश्चय ही संयुक्त प्रान्त के कुछ हिस्सों की यात्रा करना चाहता था। किन्तु संयमशील होने के कारण उन्होंने आग्रह वापिस ले लिया। अब एक दूसरी सम्भावना और है और वह मेरठ तथा दिल्ली के समीप की है। वे लोग चाहते हैं कि मैं वही मार्च में जाऊँ किन्तु मार्च के लिए मेरे पास इतने अधिक ठहराव हैं कि उनमें से मुझे चुनाव करना पड़ेगा। दिल्ली और मेरठ के साथ आंध्र की बात है, कर्नाटक भी है और बर्मा की बात भी है, फिर पंजाब भी तो है। लाला जी की सोसाइटी के लोग अपने वार्षिक समारोह के लिए मुझे वहाँ चाहते

हैं। प्रस्तावित यूरोपीय प्रवास के विषय में मैं पिताजी के निर्णय की राह देख रहा हूँ। यदि वह उस प्रवास को खत्म कर देते हैं तो मेरा समय लेने की सब माँगों को सन्तुष्ट कर सकने की राह मेरे लिए खुल जाएगी। यदि वह चाहते हैं कि यूरोप की यात्रा हो तब मैं अपना दौरा अप्रैल के प्रथम सप्ताह के आगे नहीं बढ़ा सकता। फिलहाल मैं इस मामले को इससे आगे नहीं ले जा सकता। किन्तु मैं चाहूँगा कि चुनाव करने में तुम मेरी मदद करो। तुम पिताजी से उनकी इच्छा के बारे में राय लोगे तो इससे तुम मेरा ज्यादा अच्छी तरह पथ-दर्शन कर सकोगे।

जब तक यह (पत्र) तुम्हारे पास पहुँचेगा तब तक शायद पिताजी मुझे अपनी राय तार से भेज चुके रहेंगे। यदि वह न भेज पाएँ तो कृपया देखना कि वह वैसा करें।

अब कमला की क्या हातल है ? और खुद तुम कैसे हो ? तुम सेक्रेटरी (सचिव) हो गये हो, इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम दिलोजान से अपने को कार्यक्रम में लगा दो और कार्य-समिति के आदेशों का पालन हो, इस पर बाध्य करो और वर्तमान लज्जाजनक अव्यवस्था के बीच व्यवस्था लागू करने की कोशिश करो।

तुम्हारा सच्चा
बापू

17 जनवरी, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया। संयुक्त प्रान्त के दौरे के विषय में मैं तुम्हें पहले ही लिख चुका हूँ। यह (पत्र) मैं कृपलानी के बारे में लिख रहा हूँ। जमनालाल जी ने मुझे बताया कि तुम्हारी इच्छा है कि कृपलानी तुम्हारे नीचे संघटन का काम करें—मतलब यह कि वह काम करें, जो शीतला सहाय कर रहे थे तथा उसमें और जो वृद्धि कर सकें करें। तुम्हारे जिस पत्र का मैं उत्तर दे रहा हूँ, उससे तो मुझ पर ऐसी छाप नहीं पड़ती। मैं समझता हूँ कि कृपलानी तुमको इसके पहले ही लिख चुके हैं, क्योंकि तुम्हारा पत्र पाने के पहले ही, जमनालाल जी के पत्र के आधार पर मैं उनसे बातें शुरू कर चुका था; शंकरलाल ने भी ऐसा ही किया था। इसलिए अब तुम मुझे लिखो कि इस मामले में ठीक-ठीक क्या चाहते हो।

यदि मैं निकट भविष्य में संयुक्त प्रान्त का प्रवास नहीं करता और यदि तुम एक-दो दिन के लिए भी साबरमती आ सको तो हम बहुत-सी बातों पर विचार

कर सकते हैं।

वे अनुकूल हों या प्रतिकूल, मैं कमला के विषय में डाक्टरों की रिपोर्टों पर पूर्णतः अविश्वास करता हूँ। मेरी इच्छा है कि तुम और पिताजी तथा कमला अपने मन को इस बात के लिए तैयार कर लें कि वह प्राकृतिक चिकित्सा का आश्रय ले—इसका मतलब है कूने के स्नान तथा सूर्य-स्नान। सूर्य स्नान तो अब डाक्टरी पेशे में प्रचलित हो गया है और उससे असाधारण परिणाम निकलने का दावा किया जाता है।

यदि जरूरी हो तो कृपलानी के विषय में तुम तार दे सकते हो।

तुम्हारा सच्चा
बापू

24 जनवरी, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

यूरोप-प्रवास के विषय में पिताजी को लिखा मेरा पत्र देखोगे। मैं चाहता हूँ कि तुम इस पर मुझे अपनी राय दो। इससे कोई निर्णय पर आने में मदद मिलेगी।

मुझे कृपलानी के विषय में तुम्हार तार मिला है। जमनालाल जी और शंकरलाल, खासकर जमनालाल जी, ने अपने दिल कृपलानी पर लगा दिये हैं। उन लोगों को शीतला सहाय के कुछ ज्यादा कर सकने पर विश्वास नहीं है। उनका विचार है कि संयुक्त प्रान्त में अपने काम के तीन वर्षों की अवधि में वह कुछ ज्यादा उपयोगी साबित नहीं हुए हैं। इसलिए मैं शीतला सहाय से चर्चा करने वाला हूँ और देखूँगा कि उन्हें क्या कहना है। किन्तु इसके पहले कि मैं अन्तिम रूप से कोई निर्णय करूँ, मैं चाहूँगा कि तुम शीतला सहाय के बारे में अपना विचार मुझे भेज दो।

इसके साथ मेरे सिन्ध कार्यक्रम की एक प्रति है।

तुम्हारा सच्चा
बापू

26 जनवरी, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

मैंने शीतला सहाय से बात कर ली है और हम दोनों एक परिणाम पर पहुँचे

हैं, कि सब बातों का विचार करते हुए उनके लिए त्यागपत्र देना ही सबसे अच्छा रहेगा। फिलहाल उन्हें अपनी पत्नी सहित आश्रम में रहना चाहिए। इस अवधि में वह खादी की सारी तकनीक (यन्त्र कौशल) में उस्तादी हासिल कर लेंगे और आश्रम के और सब ऐसे दूसरे कार्यों में भी भाग लेंगे जो जरूरी होंगे। मैं उनसे यह भी चाहता हूँ कि तैयारी और परिवीक्षा की इस अवधि में वह मेरे कार्य करने के ढंग को समझ लें।

मैं तुमसे इस बात में सहमत हूँ कि वह एक मूल्यवान कार्यकर्त्ता हैं, इसलिए उन्हें उतना कुशल होना चाहिए जितना सम्भव है—सिन्ध के लिए मेरे रवाना होने के तुरन्त बाद, वह इलाहाबाद आयेंगे—अपना घरबार उठा देने तथा चार्ज सौंपने को कागदपत्र तैयार करने तथा बैलेंसशीट अद्यतन बनाने के लिए, जिससे जब भी कृपलानी वहाँ जाने को तैयार हों, वह चार्ज ले सकें।

मैं चाहता हूँ कि जब डाक्टर भारतीय सूर्य पर एतराज करें तो तुम उनकी बातें न सुनो। तुमने डा० मुथ्थू के बारे में सुना होगा। रेवाशंकर भाई का पुत्र धीरू अस्थि-क्षय से पीड़ित था। सोलन में सैनिटोरियम में चिकित्सा करने और जो कुछ बम्बई में सब डाक्टर लोग कर सकते थे। उसे कर लेने के बाद, उन्होंने डा० मुथ्थू को बुलवा भेजा। उन्हें एक हजार रुपये प्रतिदिन के हिसाब से फीस दी। डा० मुथ्थू यह निर्धारित करने से ज्यादा अच्छी दूसरी कोई सलाह न दे सके कि मुक्त वायु, हल्का भोजन और सूर्य चिकित्सा का ही आश्रय लेना चाहिए। रुग्ण अस्थि से कभी-कभी तो एक पौण्ड मवाद प्रतिदिन निकलता था। रुग्ण अस्थि को हर सुबह कुछ घण्टां तक सूर्य की धूप में रखा जाता था। और उसे खुली हवा में सारे दिन लेटे रहना पड़ता था। वह सैनिटोरियम में भी नहीं भेजा गया। अब वह पूरी तरह नीरोग हो गया है। यूरोपीय सूर्य ज्यादा अच्छा हो सकता है, किन्तु भारतीय प्रतिद्वन्द्वी के प्रति किसी तरह के तिरस्कार की जरूरत नहीं है। यहाँ डाक्टर प्रातःकालीन सूर्य का सुझाव देते हैं। उनका कथन है कि अल्ट्रा वायलेट किरणें लेने का सर्वोत्तम समय 8 से 10 बजे तक होता है और गर्मियों से 7 से 8 तक। किन्तु यह सब वस्तुतः रोगी की दशा पर निर्भर करता है।

तुम्हारा सच्चा

बापू

1 फरवरी, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

कलकत्ता में जो कुछ किया गया था, उसके विषय में 'यंग इण्डिया' में मैंने

जो 'पंजाब की चिट्ठी' छापी है वह तुम ध्यान से पढ़ना। चिट्ठी में जो कुछ कहा गया है उसमें से शायद हर एक बात जानते थे। मेरी इच्छा है कि कांग्रेस कमेटी को व्यवस्थित करने को तुम अपना पहला काम बनाओगे और उसके बाद रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी काम को संगठित करोगे। यदि अज्ञात परिस्थितियों में ग्रेट-ब्रिटेन के साथ कोई सम्मानपूर्ण समझौता नहीं होता, तो देश में, व्यवहारतः स्वतन्त्रता की पार्टी के सिवा कोई दूसरी पार्टी नहीं होगी। किन्तु यदि हम समुचित लड़ाई नहीं लड़ सकेंगे तो शोर प्रभावहीन होगा और यदि वह लड़ाई कांग्रेस के जरिए लड़ी जानी है, तो कांग्रेस को एक जीवन्त पदार्थ होना पड़ेगा और यह लड़ाई अहिंसात्मक लड़ाई होगी, तो वर्तमान रचनात्मक कार्यक्रम पर, उसका जो भी मूल्य है, अमल करना होगा। इसलिए इस तथ्य के सिवा भी कि जैसी तुम्हारी आदत है, सचिव पद स्वीकार करने के बाद तुम अपने कार्यालय में पूरा दिल लगाकर काम करोगे, मैं चाहता हूँ कि योग्यता के बल पर भी कांग्रेस कार्यक्रम पर तुम अपना सम्पूर्ण ध्यान लगाओगे। मैं यह महसूस किये बिना नहीं रह सकता कि हम खादी के द्वारा विदेशी वस्त्र बहिष्कार का और यदि काफी कार्यकर्त्ता हों तो शराब की दुकानों की पिकेटिंग का भी, बहुत ज्यादा काम कर सकते हैं और यदि इन कामों को करना है तो मेरी समझ में तुम्हारी लिए यह जरूरी है कि सब प्रान्तों में दौरा करके पहले यन्त्र को ठीक स्थिति में ले आओ।

लोगों ने मुझे कल सिन्ध जाने से इसलिए रोक दिया कि सहसा सिन्ध को भयानक सर्द हवाओं ने दबोच लिया। मुझे रोकना उनकी मूर्खता था, किन्तु मैं असहाय था। अब मैं कल रवाना हो रहा हूँ। इसलिए तुम कार्यक्रम में दो दिनों बाद की तिथियाँ बढ़ा लेना।

बैलेसशीट आदि तैयार करने के लिए, शीतला सहाय कल जा रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि जब तक मैं सिन्ध से लौटूँगा, वह भी यहाँ से लौट आयेंगे।

अब जब कि यूरोपीय प्रवास का त्याग कर दिया गया है, तुम मुझे संयुक्त प्रान्त ले जाने के लिए आजाद हो। आन्ध्र और बर्मा, जिनमें पहले ही जाना होगा, मुझे अप्रैल के अन्तिम सप्ताह से पहले वहाँ (संयुक्त प्रान्त) जाने से विरत रखेंगे।

मुझे उम्मीद है कि कमला पहले से अच्छी है।

तुम्हारा सच्चा
बापू

26 फरवरी, 1929

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारे पत्र मिल गये हैं। मैं तुम्हें एक लम्बी (चिट्ठी) भेजना चाहता हूँ, किन्तु वह इस समय हर्गिज न लिखनी चाहिए। मैं शीतला सहाय के विषय में तुम्हें तार दे चुका हूँ। आज मैंने तुम्हें तार दिया है कि "मैं इलाहाबाद से गुजर रहा हूँ और यह कि मैं दिल्ली में सात घण्टे तक रूकूँगा। मेरी इच्छा है कि हम एक दूसरे से दिल्ली या इलाहाबाद में मिलें, और यदि ऐसा करना सम्भव हो तो तुम कुछ दूर तक मेरे साथ भी चल सकते हो।"

मैं बहिष्कार समिति के लिए जयरामदास की सेवाएं उसके सचिव के रूप में प्राप्त करने की कोशिश कर रहा हूँ। वह कल यहाँ आ रहे हैं। यदि वह राजी हो जाते हैं तो निश्चय ही कम-से-कम इस साल के लिए तो उन्हें कौंसिल छोड़नी ही पड़ेगी। हम बहिष्कार-समिति के भावी कार्यक्रम पर बातें करेंगे। मुझे दी जाने वाली थैलियों के उपयोग के विषय में तुमने जो कुछ कहा है, वह बिल्कुल ठीक है। मुख्यतः खादी के कार्य में उनका उपयोग किया जायेगा। दौरा खादी के लिए ही था, किन्तु स्वभावतः मैं अब रचनात्मक कार्यक्रम के विषय में बात करूँगा। किन्तु यदि लोग पैसा बिना किसी शर्त के देते हैं, जैसा कि उन्हें देना चाहिए और यदि तुम सोचते हो कि थैली के किसी अंश का कुछ और भी उपयोग हो सकता है, तो इस पर भी चर्चा कर लेंगे। किन्तु तुम इसे भी हमारे मिलने पर होने वाली चर्चा के एक विषय के रूप में लिख लेना जिससे अब हम मिलें तो मैं इसे भूल न जाऊं।

मैं तुमसे चाहूंगा कि तुम मेरे लिए आंधी की चाल से दौरे का कार्यक्रम न रखो, बल्कि कुछ ऐसे केन्द्रों को ज्यादा समय दो, जहाँ निकटवर्ती स्थानों से लोग एकत्र हो सकें, तथा एक गाँव (स्थान) में बहुत से समारोह न हों। यदि तुमने इसके बारे में 'यंग इण्डिया' में मेरी टिप्पणी न पढ़ी हो तो कृपया अब पढ़ लो।

तुम्हारा सच्चा
एस० सुब्बैया
बापू के लिए

3 अप्रैल, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला है। जैसा कि अभी तक है, आन्ध्रवालों ने एक दिन भी मेरे लिए ऐसा नहीं छोड़ा है कि मैं आश्रम जा सकूँ और वहाँ से बम्बई आ

सकूँ, और जैसा कि अभी भी है, मेर प्रवास का मई वाला अंश तो सचमुच मेरी तफरीह के लिए है, इसलिए मैं इलाहाबाद जाने के लिए 27 मई को बम्बई नहीं छोड़ना चाहूँगा। किन्तु मैं चन्द दिनों के लिए आश्रम जाना चाहूँगा, और तब अल्मोड़ा जाऊँगा। मैं तब भी, अल्मोड़ा जाने के पहले कानपुर, इलाहाबाद और लखनऊ निपटा सकता हूँ और यदि पंजाब के लोग वैसा आवश्यक समझते हों तो पंजाब भी जा सकता हूँ। अभी कोई घोषणा करने की जरूरत नहीं है। किन्तु यदि तुम कानपुर और लखनऊ, तथा अल्मोड़ा के लिए भी पहले से तिथि निश्चित करना चाहते हो तो उसे 10 जून के बाद ही रहने दो। मैं तुमसे चाहूँगा कि बाहर निकलने के पहले आश्रम को साफ एक सप्ताह दो। मैं तुमसे यह भी चाहूँगा कि पंजाब के लोगों से पता लगा लो कि वे मुझसे क्या कराना चाहते हैं।

मुझे अब तक भी आन्ध्रप्रदेश का अविचल रूप से निश्चित कार्यक्रम प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए फिलहाल तुम बेजवाड़ा का प्रधान कार्यालय के रूप में उपयोग करना। मैं आठ को बेजवाड़ा पहुँचने की आशा करता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि यदि शीतला सहाय की जरूरत वहाँ न हो तो वह फिलहाल यहाँ आ जाय। मैं उन्हें उनकी पत्नी और पुत्री के सन्दर्भ में चाहता हूँ—विशेषरूप में मेरी अनुपस्थिति के दौरान।

मैं पद्मा के चश्मे की नापें भेज रहा हूँ जिसे कृपया उसको दे दें। मैंने ये नापें लेकर उन्हें उनके पास भेजने का वादा किया था।

तुम्हारा सच्चा

बापू

29 अप्रैल, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम्हें पत्र लिखने के लिए मुझे बिल्कुल समय नहीं मिल रहा है। मैं बरेली रिपोर्ट देख गया हूँ। जहाँ तक मैं देख पाता हूँ, इसमें खादी की सम्भावना की कोई बात नहीं है। तुमने इस पढ़ा है ? इसके बारे में तुम्हारा क्या प्रस्ताव है ?

जहाँ तक दौरे का सवाल है, तुम जिस रूप में सर्वोत्तम समझो, व्यवस्था करो। प्रभुदास ने एक त्वरित पत्र भेजा था। मैंने उससे कह दिया है कि मैं 10 जून के बाद ही जाने के लिए तैयार हो सकूँगा और तुमसे सलाह करके महेश कार्यक्रम तय करेगा।

यह दौरा कुछ कष्टप्रद है किन्तु मैं उसे भली-भाँति निबाह रहा हूँ। मैंने तुम्हारे व्याख्यान का संक्षेप 'हिन्दू' में देखा। मुझे पसन्द आया। मेरे प्रवास का कार्यक्रम तुम्हें भेजा गया है।

तुम्हारा
बापू

10 मई, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

कमला और कृष्णा दोनों पर (रोग के) जिस कठोर आक्रमण का जिक्र तुमने किया है उससे तुम्हारे मन पर कितना बोझ आ पड़ा होगा ! मेरी तो कल्पना है कि इन कौटुम्बिक आपदाओं को निश्चित रूप से राष्ट्रीय अनुशासन के अंश के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए। मुझे खुशी है कि कृष्णा को किसी आपरेशन की जरूरत नहीं है।

तुम नहीं जानते होगे कि आन्ध्र देश प्राकृतिक चिकित्सकों के लिए मशहूर है, और उनमें से कुछ तो सचमुच वीर पुरुष हैं—वीर इस अर्थ में कि कठिनाइयों की परवाह किये बिना कठोरता के साथ वे अपने अनुसन्धान में लगे हुए हैं। इस चिकित्सा ने बहुतेरे मामलों में, वहाँ भी सफलता प्राप्त की है, जहाँ और सब बातें निष्फल हो गई हैं। फिर इसके साथ सरलता की विशेषता भी है और जहाँ रोगमुक्ति न भी हो वहाँ पूर्ण हानिरहितता की बात तो साथ में ही है। मेरी ख्वाहिश है कि तुम इन उपचारों पर ध्यान दो। यह तो जरूर है कि इसमें कठोर आहारसंयम बड़ा ही महत्वपूर्ण भाग लेता है। जहाँ रोगी आहार प्रतिबन्धों का पालन नहीं करते वहाँ चिकित्सा निरर्थक हो जाती है।

मैं मानता हूँ कि स्थगन के लिए बंगाल की इच्छा होने पर भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी विज्ञापित तिथि को मिल रही है।

मुझे अल्मोड़ा के विषय में तुम्हारा तार मिल गया था। मैं 10 जून के बाद आश्रम छोड़ने की आशा करूँगा, जिससे 15वीं को अल्मोड़ा पहुँच सकूँ।

हाँ, तुम संयुक्त प्रान्त और पंजाब तथा दिल्ली के लिए मुझे पूरे सितम्बर भर और अक्टूबर की जरूरत हो तो अक्टूबर में भी, ले सकते हो। इलाहाबाद म्युनिसिपल बोर्ड के बारे में तुम्हीं निर्णय करोगे। मैं तो अभिनन्दनपत्रों से ऊब गया हूँ। इसलिए यदि इसमें कोई राजनीति हो या इससे कुछ और फायदा निकल

सकता हो, तो मेरी ओर से तुम उसे स्वीकार कर सकते हो। यदि बोर्ड से मेरे पास कोई पत्र आया भी हो तो मुझे उसकी याद नहीं है।

आन्ध्र पी० सी० सी० (प्रदेश कांग्रेस कमेटी) ने जून तक समय बढ़ाये जाने की मांग, इस बिना पर की है कि अधिकांश कांग्रेस कार्यकर्त्ता अपने जिलों में दौरे के प्रबन्ध में व्यस्त हैं और मैं जो सूचनाएँ चाहता हूँ, उनकी पूर्ति करने में असमर्थ हैं। यह तथ्य खुद अपने में ही उस अव्यवस्था का प्रमाण है जिसका राज्य हमारे घर में फैला हुआ है। जो कुछ मैं सारे आन्ध्र में देख रहा हूँ, वही प्रायः प्रत्येक प्रान्त के लिए सही है।

उत्कल से कोई सन्तोष प्राप्त करने में मैं असफल रहा हूँ। रविवार को तमिलनाडु के सेक्रेटरी के नेल्लोर में आने की आशा करता हूँ।

बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के हिसाब-किताब की जांच करने के लिए रामजी भाई की जगह मैंने घनश्यामदास बिरला को लिखा है कि वे किसी यशस्वी आडिटर को खोज रखें।

तुम्हारा सच्चा

बापू

5 जून, 1929

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे खुशी है कि दौरे में तुम मेरे साथ रहोगे। रिपोर्टों की प्रतियों का पाठ दुःखदायी है। मेरा सुझाव है कि अपनी निरीक्षाओं और सुझाओं के साथ तुम्हें ये प्रतियाँ सम्बन्धित कमेटियों के पास भेजना चाहिए। बिहार-विषयक रिपोर्ट ने तो मुझे आश्चर्य में डाल दिया है। किन्तु इससे पता चलता है कि हम कहाँ तक गिर गये हैं।

आशा करता हूँ, कमला और कृष्णा अच्छी हैं।

बापू

20 जुलाई, 1929

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मैंने प्रोग्राम पर सरसरी नजर डाल ली है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, यह ठीक है। मैं समझता हूँ कि इतना आसानी से झेल सकूँगा। मैंने सोमवार के लिए

इसे जाँचा नहीं है। किन्तु मैं मान लेता हूँ कि तुमने सोमवारों को यात्रा न रखी होगी।

प्यारेलाल, देवदास और कुसुम बहन मेरे साथ होंगी। वल्लभ भाई, महादेव और मणिबहन जबलपुर होते हुए पहुँचेंगी। मैं नहीं सोचता कि मेरे साथ कोई और होगा।

कृपा करके मुझे 28 को मत रोकना। 27वीं को समाप्त करने के बाद ही मैं पहली गाड़ी से चला जाना चाहूँगा।

मैं आशा करता हूँ कि कमला पहले से अच्छी है। इलाहाबाद आने पर मैं उसे स्वस्थ और दीप्तिमयी देखना चाहता हूँ।

तुम्हारा

बापू

29 जुलाई, 1929

प्रिय जवाहरलाल,

इन्दु के नाम तुम्हारे पत्र बहुत अच्छे हैं और प्रकाशित होने चाहिएं। काश तुम उसे हिन्दी में लिख सकते ! जैसे भी हैं, उन्हें साथ-साथ हिन्दी में भी छपवाना चाहिए।

तुम्हारा विषय-निरूपण बिल्कुल पुराने ढंग का है। मानव का आदि अब एक विवादपूर्ण विषय है। धर्म का आदि और भी विवादास्पद है। परन्तु इन मतभेदों से तुम्हारे पत्रों का मूल्य घट नहीं जाता। उनका महत्व तुम्हारे निणयों की सचाई में नही, वरन् निरूपण के ढंग में और इस तथ्य में है कि तुमने इन्दु के हृदय तक पहुँचने और उसकी ज्ञान की आँखें खोलने की कोशिश अपनी बाह्य प्रवृत्तियों के बीच में की है।

जो घड़ी मैं ले आया हूँ उसके बारे में कमला से झगड़ना नहीं चाहता था। इस भेंट की तह में जो प्रेम है, उसका मैं सामना नहीं कर सका। किन्तु फिर भी घड़ी इन्दु के लिए धरोधर के रूप में रखी जायेगी। इतने सारे छोटे-छाटे शैतानों से घिरा रहकर मैं शोभा की इस चीज को सुरक्षित नहीं रख सकता। इसलिए मुझे जानकर खुशी होगी कि इन्दु को उसकी प्यारी घड़ी वापस मिल जाने पर कमला राजी हो जायेगी।

कांग्रेस के 'ताज' पर मेरा लेख पहले ही लिखा जा चुका है। वह यं० इं० के अगले अंक में निकलेगा।

सप्रेम तुम्हारा

बापू

7 अगस्त, 1929

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मैं 'इतिहास का उषःकाल' (डान आव् हिस्ट्री) शीर्षक पसन्द नहीं करता। 'एक पिता के पत्र उसकी पुत्री के नाम', 'इन्दिरा को चिट्ठियाँ' की अपेक्षा ज्यादा अच्छा शीर्षक हो सकता है, यद्यपि बाद वाले पर भी मुझे ऐतराज नहीं है।

मेरी कामना है कि कमला इन आवर्ती वेदनाओं से मुक्त हो जायेगी। यदि डाक्टर करने को तैयार हों तो मैं आपरेशन का खतरा भी मोल ले लूँगा।

मैंने घड़ी ताले-कुंजी में बन्द कर रखी है और वहाँ आते समय ले आऊँगा।

जिन्ना से मिलने के लिए मैं 11 वीं को बम्बई जा रहा हूँ। मैं सरोजनी देवी की आशावादिता की कदर करता हूँ! बम्बई मैं बड़ी आशा के साथ जा रहा हूँ।

तुम्हारा

बापू

11 अगस्त, 1929

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

यह वर्णन भेजा है लोगों ने सत्याग्रहियों के उस लघु दल का, जो आपको अभिनन्द पत्र देना चाहता है।

तुम्हें जो तार और विरोध (पत्र) प्राप्त हो रहे है उनका ख्याल नहीं करना चाहिए। यदि कमला की स्थिति तुम्हें काठियावाड़ जाने की अनुमति देगी तो तुम वहाँ आने पर स्वयं ही फैसला कर सकोगे।

मैं 7 सितम्बर को भोपाल के लिए बम्बई से रवाना हूँगा और कार्यक्रम के अनुसार 11 को आगरा पहुँचूगा—हाँ, तुम कोई परिवर्तन चाहो तो बात और है।

तुम्हारा

बापू

28 अगस्त, 1929

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

कमला के आपरेशन से मैं आह्लादित हूँ। मुझे आशा है, अब वह पूरी तरह से स्वस्थ हो जाएगी।

तुम्हारा नाम राष्ट्र के ऊपर अनुचित रूप से न थोपने के बारे में तुम मुझ पर

निर्भर कर सकते हो। लाहौर से कमेटी के तार के जवाब में अपनी राय प्रकट करने के लिए मैंने अपने को बँधा हुआ अनुभव किया। तुम्हारे आत्म-सम्मान के लिए इतना काफी है कि तुम मुकुट नहीं चाहते। इस बार किसी भी आदमी के लिए यह एक भद्दा काम है। मैंने तो एक सिद्धान्त की दृष्टि से तुम्हारे नाम पर जोर दिया है। यदि देश उस सिद्धान्त को दृढ़ करने के लिए तैयार नहीं है तो हम प्रतीक्षा कर सकते हैं।

यदि तुम कर्णधार नहीं बनते हो तो इस समय एक मात्र विकल्प, जो मैं सोच सकता हूँ, पिताजी का पुनः निर्वाचन है या ऐसा न हो सके तो डा० अंसारी हैं। क्या तुम दूसरा कोई नाम सोच सकते हो ?

मैं संयुक्त प्रान्त के दौरे के लिए तैयार हो रहा हूँ। प्रतिदिन खोई हुई शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ। मैं अपने प्रयोग के लिए किसी प्रकार भी दुःखी नहीं हूँ, मैंने उससे बहुत कुछ सीखा है।

तुम्हारा
बापू

4 नवम्बर, 1929

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। मैं तुम्हें कैसे सान्त्वना दूँ ? दूसरों से तुम्हारी हालत सुनकर मैंने अपने मन में कहा—"क्या मैंने तुम पर बेजा दबाव डालने का अपराध किया है ?" मैंने सदा यह माना है कि तुम पर बेजा दबाव पड़ नहीं सकता। मैंने सदा तुम्हारे प्रतिरोध का सम्मान किया है। वह सदैव सम्मानपूर्ण रहा है। इसी विश्वास पर मैंने अपना दावा आगे बढ़ाया। इस घटना से सबक लेना चाहिए। मेरा सुझाव जब भी तुम्हारे दिल या दिमाग को न जंचे तभी अड़ जाओ। ऐसे अड़ने से मेरा प्रेम तुम्हारे प्रति घटेगा नहीं।

किन्तु तुम उदास क्यों होते हो ? आशा है, तुम्हे लोक-मत का भय नहीं है। तुमसे कोई बेजा बात नहीं की है, तो उदासी क्यों ? स्वाधीनता का आदर्श भी अधिक स्वतन्त्रता से टकराता नहीं। इस समय कार्यकारी अधिकारी की और अगले साल अध्यक्ष की हैसियत से, तुम अपने अधिकांश साथियों की सामूहिक कार्रवाई से अपने-आपको अलग नहीं रख सकते थे। मेरी राय में तुम्हारा हस्ताक्षर करना तर्कसंगत, बुद्धिमत्तापूर्ण और अन्यथा भी ठीक था। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारी उदासी दूर हो जाएगी और तुम्हारी अचूक प्रसन्नता वापस

आ जाएगी।

वक्तव्य तुम जरूर दे सकते हो, किन्तु इस विषय में जल्दी करने की जरा भी आवश्यकता नहीं है।

अभी-अभी जो दो समुद्री तार मिलें हैं उनकी नकलें साथ में हैं। इन्हें पिताजी को भी दिखा देना।

यदि मुझसे चर्चा करने की जी में हो तो जहाँ चाहो मुझे पकड़ लेने में संकोच न करना।

आशा है, जब मैं इलाहाबाद पहुँचूगा, तब कमला को स्वस्थ और प्रसन्न पाऊँगा।

हो सके तो तार देना कि उदासी मिट गई है।

सप्रेम तुम्हारा,
वापू

8 नवम्बर, 1929

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें मेरा तार मिल गया होगा। तुम्हें अभी इस्तीफा नहीं देना चाहिए। अपनी बात पर बहस करने का समय मेरे पास नहीं है। मैं इतना ही जानता हूँ कि इससे राष्ट्रीय कार्य पर असर पड़ेगा। कोई जल्दी नहीं और किसी उसूल को खतरा नहीं। ताज की बात यह है कि उसे और कोई नहीं पहन सकता। वह कभी फूलों का ताज नहीं होने वाला है। अब तो काँटे ही काँटे हैं। मैं उसे पहिनने को अपने-आपको राजी कर सकता तो मैं लखनऊ में ही पहन लेता। मुझे विवश होकर पहनना पड़ेगा, इसके लिए इस प्रकार की स्थिति मेरे ध्यान में नहीं थी। उन स्थितियों में से एक तुम्हारी गिरफ्तारी होने तथा दमन बढ़ जाने की थी ! किन्तु ये सब बातें जब हम मिलें तब शान्त एवं अनासक्त चर्चा के लिए रख छोड़े।

तब तक ईश्वर तुम्हें शान्ति दे।

बापू

18 नवम्बर, 1929

मेरे प्रिय जवाहर,

यह रहा मेरा मस्विादा। मैं चाहता हूँ कि तुम इस पर सावधानी के साथ

विचार करो या आज रात चर्चा में पूरी तरह भाग लो। मैं नही चाहता कि चाहे किसी भी तरह तुम अपने को दबाओ—सिवाय उस जगह के जब तुम अनुभव करो कि विशेष अवसरों पर आत्म-दमन ही ज्यादा अच्छा आत्मप्रकाशन होता है। आखिरकार हममें से हर एक को अपने ही प्रकाश (ज्ञान) के अनुसार, न कि उधार लिये हुए प्रकाश से, सेवा करनी चाहिए।

बापू

1929 का अंतिमांश

मेरे प्रिय जवाहर,

मैंने ताजा कांग्रेस बुलेटिन पढ़ी। मेरा विचार है कि उस वक्तव्य का प्रकाशन एक ऐसे संस्थागत प्रकाशन में अप्रासंगिक था जो केवल कांग्रेस की कार्रवाइयों का विवरण देने के लिए जारी किया गया है। क्या वह गवर्नमेण्ट गजट की भाँति नहीं हो गया ? योग्यता की दृष्टि से भी, मैं समझता हूँ, यह उनके वकील ने तैयार किया था। जैसा कि तुमने और मैंने सोचा था, यह ईमानदार आत्माओं के उद्‌गार नहीं हैं।

वे जो अनशन कर रहे हैं उसकी तुमने जो वकालत की है और सहमति दी है, उसे भी मैंने पसन्द नहीं किया। मेरी राय में यह एक असम्बद्ध कार्य है और जहाँ तक सम्बद्ध भी हो तो यह एक मक्खी मारने के लिए लौहार के हथौड़े का इस्तेमाल करने जैसा है। पर यह तो तुम्हारे विचार करने की बात है।

मैं चाहता हूँ कि अध्यक्षता के सम्बन्ध में तुम जल्दी कोई निर्णय ले लो। यह हिचकिचाहट क्यों ? मैंने तो सोचा कि अलमोड़ा में इस पर सहमति हुई थी कि तुम्हीं मुकुट धारण करोगे। इस विषय पर संलग्न को पढ़ लो और पिताजी को दे दो।

आशा करता हूँ, कमला अच्छी है।

तुम्हारा
बापू

24 फरवरी, 1930

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है। मैंने भाषण पढ़ा नहीं था। मुझे पढ़ने के

लिए मुश्किल से ही वक्त मिलता है। आगामी अंक को देखना। उसमें बहुत कुछ होगा। सारांश तो गुजराती न० जी० में निकल भी चुका है। जब हम पहली मार्च को मिलेंगे तब शायद बातों पर और पूर्णता के साथ चर्चा करने के लिए हमें कुछ क्षण मिल जाएँगे। वा० (वाइसराय) के नाम मेरे पत्र से भी मामला साफ हो जाएगा।

मुझे खुशी है कि कमला के विषय में कोई खतरे की बात नहीं है। किन्तु अब वह अस्पताल जाकर आवश्यक इलाज क्यों नहीं करा रही है ?

तुम्हारा बापू

7 मार्च, 1930

मेरे प्रिय जवाहर,

शीतला सहाय से बात करने के बाद मैंने उसे वहीं भेजने का निश्चय किया है। उसे देखने दो कि वह वहाँ क्या कर सकता है और तुम भी आगे की बातों पर ध्यान रखोगे। यदि वह और तुम निश्चय करो कि उसे लौट आना चाहिए, तो वह वैसा कर सकता है। उसकी स्त्री और बच्चे यहीं रहेंगे और वह अपनी जीवन रक्षा भर के लिए आश्रम से ले सकता है। शेष तुम उसी से सुनोगे।

तुम्हारा
बापू

11 मार्च, 1930

प्रिय जवाहरलाल,

अब रात के 10 बजने वाले हैं। यहाँ जोरों की अफवाह फैली हुई है कि रात में ही पकड़ लिया जाऊँगा। मैंने तुम्हें विशेष रूप से तार इसलिए नहीं दिया कि सम्वाददाता लोग अपना समाचार स्वीकृति के लिए पेश करते हैं और सभी पूरी गति से काम कर रहे हैं। तार देने लायक कोई विशेष बात थी भी नहीं।

घटनाएँ असाधारण रूप में ठीक हो रही हैं। स्वयंसेवकों के नाम धड़ाधड़ आ रहे हैं। टोली कूच करती ही रहेगी, भले ही मैं पकड़ लिया जाऊँ। मैं गिरफ्तार न हुआ तो मेरी तरफ से तारों की आशा रख सकते हो, नही तो मैं हिदायत छोड़े जा रहा हूँ।

मेरे पास कोई विशेष बात कहने को मालूम नहीं होती। मैं काफी लिख गया

हूँ। आज शाम रेती पर प्रार्थना के लिए एकत्र विशाल भीड़ को मैंने अन्तिम सन्देश दे दिया था।

भगवान तुम्हारी रक्षा करे और भार वहन करने की शक्ति तुम्हें दे।

तुम सबको प्यार,

बापू

13 मार्च 1930

प्रिय जवाहरलाल,

आशा है, तुम्हें मेरा पत्र मिल गया होगा, जो आखिरी हो सकता था। मेरी होने वाली गिरफ्तारी की जो खबर मुझे दी गई थी, वह बिल्कुल विश्वस्त बताई गई थी। परन्तु हम दूसरी मंजिल पर सुरक्षित पहुँच गये हैं। तीसरी आज रात को शुरू करें। मैं तुम्हें कार्यक्रम भेज रहा हूँ। सभी साथियों का आग्रह है कि मुझे कार्यसमिति के लिए अहमदाबाद नहीं जाना चाहिए। इस सुझाव में काफी बल है। इसलिए कार्यसीमित उस जगह आ जाए, जहाँ उस दिन हम हों या तुम अकेले आ सकते हो। यह भावना कि हम लड़ाई को पूर्ण किये बिना स्वेच्छा से वापिस नहीं लौटेंगे, अच्छी तरह घोषित की जा रही है। मेरे वापिस जाने से इसमें कुछ बट्टा लग जाएगा। जमनालाल जी ने मुझे बताया कि उन्होंने इस बारे में तुम्हें लिखा था। आशा है, कमला का स्वास्थ्य अच्छा है। मैंने कल कह दिया था कि तुम्हें पूरे तार भेजे जाएँ।

सप्रेम तुम्हारा

बापू

19 मार्च 1930

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम्हें सारी रात जागरण करना है, किन्तु यदि तुम्हें कल रात से पहले लौटना है तो यह अनिवार्य है। जहाँ भी मैं रहूँगा सन्देशवाहक तुम्हें वहाँ ले आयेगा। तुम प्रयाण-यात्रा के सबसे कष्टकर भाग में मेरे पास पहुँच रहे हो। तुम्हें रात के दो बजे अभ्यस्त मछुवों के कन्धों पर एक सोता पार करना होगा। मैं राष्ट्र के सबसे मुख्य सेवक के लिए भी प्रयाण को रोक नहीं सकता।

प्रेम

बापू

31 मार्च, 1930

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने तार नहीं दिया। क्योंकि मैं नहीं समझता की दाण्डी में कोई पठान हैं और होंगे तो हम उनसे निपट लेंगे। सरहद से अच्छे और सच्चे मित्रों के आने से भी पेच पैदा होंगे। मुझे दाण्डी पहुँचने दिया गया तो वहाँ पेचीदगियाँ बचाकर अकेला यही प्रश्न उपस्थित करना चाहता हूँ। सचमुच गुजरात में घटनाएँ बहुत अच्छा रूप धारण कर रही हैं।

मुझे आश्चर्य है कि रायबरेली में इन लोगों ने अभी से इतनी गिरफ्तारियाँ कर ली हैं। मेरे ख्याल से फिलहाल नमक कर पर ही अपना ध्यान सीमित करके तुम ठीक कर रहे हो। अगले पखवारे में हमें पता चल जाएगा कि हम और क्या कर सकते हैं या करना चाहिए।

मेरी ओर से कोई और समाचार न मिले तो एक साथ सब जगह आन्दोलन शुरू कर देने के लिए 6 अप्रैल का दिन समझ लो।

अब रात के दस बजने वाले हैं। इसलिए राम-राम।

बापू

8 मई, 1931

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा तार मिल गया था और अब विगत 30 वीं का तुम्हारा पत्र भी मिल गया है, किन्तु पिछला पत्र नहीं मिला है। निश्चय ही तुम्हारे लौटने की तुरन्त कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे पत्र से मैंने यह समझा कि जिस ठिठुरन की बात तुमने अपने पत्र में लिखी है उसके बावजदू तुम खुब अच्छे हो। तुमने समाचारपत्रों में मेरी सेहत फिर खराब होने की जो बात पढ़ी, वह निराधार तो नहीं थी किन्तु इस समय गुजरात में स्वास्थ्य भंग का फिलहाल कोई खतरा नहीं है। कुछ अनिष्पन्न मामलों पर मि० इमर्सन से मशिवरा करने के लिए मैं अगले हफ्ते शिमला जा रहा हूँ। वह अपने पत्र में कहते हैं कि घटनाक्रम से गोलमेज सम्मेलन के बारे में सरकार से चर्चा भी हो जायेगी। वह मुझसे 18 को या उसके आसपास नैनीताल जाने की भी आशा रखते हैं। मैं नहीं जानता कि संयुक्त प्रान्त में इस समय स्थिति कैसी चल रही है, किन्तु मेरे लिए नैनीताल जाना भी अच्छा ही होगा। जिस स्पष्टता के साथ तुमने हिन्दु-मुस्लिम प्रश्न पर अपने पत्र में लिखा है, उसको मुझे लिखने में तुमने बिल्कुल सही काम किया है। यदि तुमने इससे

कम कुछ किया होता तो मुझे चोट लगती। मेरे द्वारा गलत समझे जाने का जरा भी भय किये बिना तुम्हें अपने दिल का बोझ उतारने का पूरा अधिकार है। यह जरूर है कि मैं अपने को तुम्हारे आरोपों का अपराधी नहीं स्वीकार करता। मैंने सदा यह कहने में काफी सावधानी रखी है कि मैं सिर्फ अपने लिए कह रहा हूँ। जब तक हमने कोई ठोस नीति का निर्धारण नहीं किया है, तब तक मैं अपने व्यक्तिगत विचारों को प्रकट किये बिना कैसे रह सकता हूँ ? किन्तु ऐसे अवसर ज्यादा नहीं रहे हैं जब मैंने अपने को इस प्रकार चलने दिया हो। मैं तुमसे बिल्कुल सहमत हूँ कि पंच-निर्णय के बारे में डा० अंसारी का प्रस्ताव, जिसके लिए उन्होंने बहुत से नाम सुझाये है, बहुत ही अव्यावाहारिक है। बेशक इसका कुछ फल नहीं निकला है। डा० महमूद का भय सर्वथा निराधार है। मैंने भोपाल (के नवाब) से उनके ही कहने से भेंट की थी और जब उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम सवाल पर चर्चा की तो मैंने स्वभावतः कहा कि वह शौकतअली तथा अपने अन्य मित्रों को बुला लें, और अगर समझें कि कुछ किया जा सकता है तो मुझे भोपाल बुला सकते हैं। मैं उनसे यह नहीं कह सकता था कि वह इस मामले में पहल न करें। उसी दिन श्रीमती नायडू शौकत अली को "मणि भवन" ले आईं और भोपाल (नवाब) से मेरी जो बातचीत हुई थी, मैंने उन्हें बता दी। इससे ज्यादा कुछ नहीं हुआ है। मैंने कोई पहल नहीं की है और यह कहने के सिवा एक पंक्ति भी नहीं लिखी है कि मैं प्रार्थना कर रहा हूँ—और वह मैं शब्दशः कर रहा हूँ। जब डा० महमूद ने मुझसे शिकायत की कि मैंने मूक रहने के समझौते को तोड़ दिया है, तब उनको भी गत सप्ताह मैंने इतना ही लिखा था। जब पूरी तरह स्वस्थ होकर लौटेंगे, तब हमें निश्चित रूप से (कांग्रेस) कार्य-समिति की बैठक बुलानी होगी और यदि हम सब कांग्रेसियों के पथप्रदर्शन के लिए कोई फार्मूला निकाल सकेंगे, तो मेरे लिए उससे ज्यादा खुशी की बात दूसरी नहीं होगी। निजी तौर पर मैं सोचता हूँ कि हम इस समय कोई फार्मूला नहीं बना पायेंगे और मैं तो दिन-दिन उसी विचार की ओर खिंचता जा रहा हूँ जिसे मैंने विदा होने के दिन या एक दिन पहले तुम पर प्रकट किया था। बम्बई पहुँचने पर, मैं चाहे जहाँ भी होऊं पहले तुम मुझसे मिलना। बहुत सम्भव है कि उस समय तक मैं बोरसद या बारडोली में होऊं।

हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य के बिना लन्दन जाना नहीं हो सकता।

तुम सबको प्रेम।

बापू

28 जून, 1931

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र और पोस्टकार्ड मिले। खुशी है कि रायबरेली में धारा 144 की नोटिस वापिस ले ली गई। निश्चय ही इसका कारण मुख्य सचिव के नाम तुम्हारा स्पष्ट पत्र था। जब तक तुम कार्यसमिति के लिए बम्बई पहुँचोगे तब तक समिति को निश्चित मार्ग-दर्शन के लिए तैयार रहना चाहिए।

मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि हमारा मामला सम्पूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि तुम गवर्नर को मिलने के लिए कहो। यह मुलाकात माँगते हुए तुम उनसे कहो कि तुम इस प्रयत्न में कोई कसर बाकी नहीं रखना चाहते कि प्रान्त के सर्वोच्च अधिकारी के सामने स्पष्ट स्थिति रख दी जाए। कदाचित् गवर्नर से तुम कुछ भी लेकर नहीं आओगे, किन्तु उनसे मिलने और समझौते का पालन कराने का प्रयत्न करके तुम अवश्य ही हमारी स्थिति को पहले से सुदृढ़ बनाओगे। उनसे मिलने का प्रस्ताव करके और वह प्रस्ताव स्वीकार कर लें तो उनसे मिलकर हम कुछ खोयेंगे नहीं।

उन्नाव जिले की घटनाओं के विषय में मैंने 'यंग इंडिया' में जो लिखा है वह तुमने देखा होगा। तुमने और दूसरे लोगों ने जो सामग्री भेजी है उसके आधार पर मैं फिर लिखने वाला हूँ।

यह दुर्भाग्य की बात हुई कि कार्यसमिति को स्थगित करना पड़ा। वहाँ की वर्तमान परिस्थिति में बल्लभ भाई का इलाहाबाद जाने के लिए घोर विरोध था। मेरा भी यही ख्याल है कि कानपुर और उत्तर प्रदेश की अन्य उत्तेजनाओं को देखते हुए फिलहाल इलाहाबाद को छोड़ देना ही अच्छा था।

बापू

7 सितम्बर, 1931

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

हमने अभी-अभी पोर्ट सईद छोड़ा है। बड़े भाई यहाँ हममें शरीक हो गये हैं। आज मेरा मौनवार है। बातचीत के लिए हम कल मिलेंगे। ये रहीं डेलीमेल और डी० टी० (डेली टेलीग्राफ) से ली गई दिलचस्प करतरनें, जिन्हें किनारे से कुछ मित्र ले आये हैं। ये तुम्हारे विनोद और दिलबहलाव के लिए हैं। तुम इनसे निपट चुको तो बल्लभ भाई को दे सकते हो।

तुम्हारी इन्दिरा के नाम और चिट्ठियाँ देवदास ने मुझे दी हैं। अभी तक

उनको देखने का समय मुझे नहीं मिला है। मेरा सारा समय यं० इं० एवं न० जी० की तैयारी करने, पत्र लिखने और कुछ लोगों से भेंट में तथा इनके बीच सोने में लग गया।

मैं आशा करता हूँ कि संयुक्त प्रान्त की परिस्थिति सुधरी होगी। मैं तुम्हारे पास से खबर पाने को उत्सुक हूँ। मैं जानता हूँ कि जब जरूरत होगी, तुम समुद्री तार का उपयोग करने में हिचकिचाओगे नहीं।

क्या तुम अ० गफ्फार खां से सम्बन्ध बनाये हुए हो ? जयप्रकाश कैसा काम कर रहे हैं ?

मिस्र से आने वाले स्नेहपूरित सन्देशों के विषय में सब कुछ तुम्हें यं० इं० से मालूम होगा।

मालवीयजी बहुत अच्छी सेहत रख रहे हैं। एक दिन के अलावा समुद्र ने उन्हें तंग नहीं किया। समुद्री बीमारी का सबसे बड़ा हिस्सा मीरा बहन ने भोगा है। प्यारेलाल और देवदास को भी काफी हिस्सा मिला है। महादेव बिल्कुल मुक्त रहा है और उसने काम भी सबसे ज्यादा किया है।

तुम्हारा

बापू

28 दिसम्बर, 1931

प्रिय जवाहर,

इन्दु ने तुम्हारा पत्र मुझे दिया। कुछ भी हो, तुम्हारी गिरफ्तारी से मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। मैं अभी तक कमला के पास नहीं जा सका हूँ। आज रात को जा सकता हूँ, कल तो जरूर ही। तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इन्दु के नाम तुम्हारी दूसरी पत्र-माला मैंने पढ़ ली है। मुझे कुछ सुझाव देने थे, परन्तु यह तो शायद तभी होगा जब हम अपने-अपने स्वरूप में होंगे।

इस बीच तुम्हें और शेरवानी को प्यार।

बापू

29 जनवरी, 1932

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र पाकर हर्ष हुआ। हम बेचारे बाहरवालों से ईर्ष्या करने का तुम्हारे

लिए कोई कारण नहीं। परन्तु हमें तुमसे इस बात की ईर्ष्या अवश्य है कि तुम्हें तो सारा गौरव प्राप्त हो रहा है और हम बारहवालों के भाग्य में बेगार लिखी है। परन्तु हम बदला लेने का षड्यन्त्र रच रहे हैं। आशा है, तुम्हें कुछ अखबार दिये जाते होंगे। मैं जो कुछ कर रहा हूँ, उसमें तुम सदा मेरे मन में बसे रहते हो।

उस दिन कमला से मिला था। उसे बहुत अधिक विश्राम की आवश्यकता है। मैं उससे एक बार फिर मिलने की कोशिश करूँगा और आग्रह करूँगा कि जब तक वह पूरी तरह अच्छी न हो जाए अपना कमरा न छोड़े। आशा है कि डाक्टर महमूद के बारे में की गई कार्रवाई से तुम सहमत होंगे। मुझे विश्वास है कि आनन्द भवन पर लगाया गया कर चुकाने का वचन पूरा किया जाएगा।

तुम दोनों को प्यार

बापू

31 दिसम्बर, 1932

प्रिय जवाहरलाल,

सरूप उस दिन अस्पृश्यता सम्बन्धी अपनी योजना पर चर्चा करने मेरे पास आई थी। उसने कहा कि तुम्हारी सलाह सीलोन में विश्राम लेने की है। मैं इसे अनावश्यक समझता हूँ। वह थोड़ा काम करने लायक जरूर है और कुछ अस्पृश्यता का काम करने को बिल्कुल रजामन्द है। मेरे ख्याल से जब तक वह काम करना चाहती है, करने देना चाहिए।

उसने मुझे बताया कि तुमने कुछ दाँत और निकलवा दिये हैं। उधर वह अपने बाल सफेद करने पर तुली है। मुझे तो आँखों देखनेवालों ने बताया है कि वैसे तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक रहता है। मालूम होता है कि तुम अब भी मिलने आने वालों से मुलाकात नहीं कर रहे हो। मैं चाहता हूँ कि यदि सम्भव हो तो तुम मुलाकातें करो। इससे तुम्हें सन्तोष मिलेगा।

छगनलाल जोशी के आज जाने से हमारी चार की सुखद टोली बन गई है। मुझे पता नहीं कि तुम हरिजन-कार्य में दिलचस्पी ले रहे हो या नहीं। शास्त्रियों के साथ अच्छा समय बीत रहा है। शास्त्रों का अक्षर ज्ञान मेरा पहले से अच्छा हो गया है। परन्तु सच्चे धर्म का ज्ञान वे मुझे थोड़ा ही दे सकते हैं।

बापू

15 फरवरी, 1933

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे सुन्दर पत्र के उत्तर में अच्छा पत्र लिखने की आशा से मैं तुम्हें लिखना टालता गया। परन्तु अब अधिक देर नहीं कर सकता। रोज काम बढ़ रहा है। इसलिए मुझे अभी जैसा कि लिखा जा सके, लिखना होगा। पता नहीं तुम्हें 'हरिजन' जैसा निर्दोष पत्र भी दिया जाता है या नहीं। मैं तो इस आशा से भेज रहा हूँ कि तुम्हें मिलता होगा। यदि मिलता हो तो मुझे अपनी राय लिखो। सनातनियों के विरुद्ध लड़ाई दिन-दिन दिलचस्प होती जा रही है, साथ ही अधिकाधिक कठिन भी। एक अच्छी बात यह है कि वे दीर्घकालीन मानसिक आलस्य से जाग उठे हैं। मुझ पर जिन गोलियों की बौछार ये कर रहे हैं वे अजीब ताजगी लाने वाली हैं। दुनिया भर की बुराइयाँ और भ्रष्टाचार मुझमें मौजूद हैं। मगर तूफान ठण्डा हो जाएगा, क्योंकि मैं अहिंसा की—अप्रतिशोध की, रामबाण दवा का प्रयोग कर रहा हूँ। मैं गालियों की जितनी उपेक्षा करता हूँ उतनी ही वे भयंकर होती जा रही हैं। परन्तु यह तो दीपक के आसपास पतंगे की मृत्यु का नृत्य है। बेचारे राजगोपालाचार्य और देवदास की भी अच्छी खबर ली जा रही है। लक्ष्मी की सगाई को बीच में घसीट कर उस विषय में गन्दे आरोप गढ़े जा रहे हैं। अस्पृश्यता का समर्थन इस तरह होता है। घरू मुलाकात के तौर पर इन्दु और अस्पृश्यता के बारे में सरूप और कृष्णा मुझसे उन दिन मिली थी। इन्दु का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था और वह बिल्कुल प्रसन्न दिखाई देती थी। सरूप अस्पृश्यता निवारण के लिए काठियावाड़ और गुजरात में थोड़े दिन का दौरा कर रही है और कृष्णा इलाहाबाद जाने वाली थी। देवदास दिल्ली में हैं और राज जी की, जो कि अस्पृश्यता निवारण के लिए कानून बनवाने में असेम्बली के सदस्यों के सम्पर्क स्थापित कर रहे हैं, सहायता कर रहा है। हमारा समय पूरी तरह अस्पृश्यता के काम में लग रहा है। सरदार बल्लभ भाई बाहर जाने वाले पत्रों की बढ़ती हुई संख्या के लिए सारे लिफाफे बनाकर देते हैं। वह समाचारपत्रों को परिश्रम से पढ़ते हैं और अस्पृश्यता के विषय में और न जाने कहाँ-कहाँ की छोटी-छोटी बातों की जानकारी खोद-खोदकर निकाल लाते हैं। वह विनोद के भी अटटू भण्डार हैं। मुआइने का दिन उनके लिए वैसा ही होता है जैसा कोई और दिन। वह कभी कोई माँग नहीं करते। मेरा कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता जब मैं कोई न क़ोई मांग न रखूँ। पता नहीं हम दोनों में से कौन अधिक सुखी है। मुँह फुलाये बिना मैं अपनी हार को सहन कर लूँ तो मैं भी उनकी तरह सुखी क्यों नहीं हो सकता।

तुम्हारे एकान्त और तुम्हारे अध्ययन से हम सबको ईर्ष्या होती है। यह सच है कि हमारे भार हमारे अपने ही या यों कहो कि मेरे ही ओढ़े हुए हैं। मैंने वल्लभ भाई की संस्कृत के अच्छे पण्डित बनने की सारी आशा चूर-चूर कर दी है। वह हरिजन कार्य की उत्तेजना के बीच में अपने अध्ययन पर ध्यान नहीं जमा सकते। बंगाल के फुटबाल के खिलाड़ी जैसे अपने खेल का मजा लूटते हैं वैसे ही बल्लभ भाई चटपटी आलोचना का आनन्द लेते हैं। महादेव तो, जैसा शौकत ने वर्णन किया था, टोली के हमाल बने हुए हैं। कोई भी काम उनके लिए अधिक या उनसे परे नहीं है। छगनलाल जोशी अभी पैर जमाने में लगे हुए हैं। किन्तु मजे में हैं। बसन्त आ रहा है, उन पर भी बहार आये बिना नहीं रह सकती। वैसे हमें छाँट-छाँट कर रखा गया है। हम खेल के नियमों का पालन करते हैं और वर्णाश्रम धर्म के नियमों का कठोर पालन करने वाला एक खासा भद्र परिवार बनाए हुए हैं। इससे डाक्टर अम्बेडकर और मेरी मिलीभगत बनकर सनातनियों के लिए नई सनसनी का सामान मुहय्या हो जाएगा। मेरी परेशानी बढ़ जाएगी, परन्तु विश्वास रखो कि वह मेरी मोल ली हुई नहीं होगी। अब मेरे पास इतना ही कहने का स्थान और समय रह गया है कि हम सबको आशा है कि तुम्हारी चतुर्मुखी प्रगति बराबरी जारी होगी।

हम सबकी ओर से प्यार।

बापू

2 मई, 1933

प्रिय जवाहरलाल,

जब मैं आने वाले उपवास से जूझ रहा था, तब तुम मानो सशरीर मेरे सामने थे। किन्तु कोई लाभ नहीं। काश मुझे अनुभव हो सकता कि तुमने उपवास की नितान्त आवश्यकता को समझ लिया है। हरिजन आन्दोलन मेरे बौद्धिक प्रयत्न के लिए बहुत बड़ी चीज है। सारे संसार में इतनी बुरी चीज कोई नहीं है। फिर भी मैं धर्म को और इसलिए हिन्दुत्व को छोड़ नहीं सकता। यदि हिन्दू धर्म से मैं निराश हो जाऊँ तो मेरा जीवन मेरे लिए भार बन जाएगा। मैं हिन्दुत्व के द्वारा ईसाई, इस्लाम और कई दूसरे धर्मों से प्रेम करता हूँ। इसे छीन लिया जाए तो मेरे पास रह ही क्या जाता है ? किन्तु मैं इसे छुआछूत और ऊँच-नीच की मान्यता के रहते हुए सहन भी नहीं कर सकता। सौभाग्यसे हिन्दू धर्म में बुराई का रामबाण इलाज भी है। मैंने उसी इलाज का प्रयोग किया है। सम्भव हो तो मैं

तुम्हें यह महसूस करवाना चाहता हूँ कि यदि मैं उपवास के बाद बचूँ तो अच्छा ही है और यदि जीवित रहने की कोशिश के बावजूद यह शरीर नष्ट हो जाता है तो भी क्या बुराई है ? आखिर यह है ही क्या ?—एक झट से टूट जाने वाली चिमनी से भी अधिक नाशवान है। उस कांच के गोले को फिर भी दस हजार वर्ष तक ज्यों का त्यों रखा जा सकता है, परन्तु इस शरीर को एक मिनट के लिए भी जैसे-का-तैसा नहीं रख सकते। और मृत्यु से अवश्य ही प्रयत्न मात्र का अन्त नहीं हो जाता। ठीक ढंग से सामना किया जाए तो मौत इसी उदात्त प्रयत्न का आरम्भ भी हो सकता है। परन्तु यह सत्य तुम्हें स्वयं स्फूर्ति से दिखाई न देता हो तो मैं दलीलों से तुम्हें कायल नहीं करना चाहता। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी स्वीकृति मेरे साथ न भी हुई तो अग्नि परीक्षा के इस सारे दौरान में तुम्हारा बहुमूल्य स्नेह मेरे साथ रहेगा।

तुम्हार पत्र मिल गया था, जिसका उत्तर मैंने सोचा था, फुर्सत से दूँगा, परन्तु ईश्वर की इच्छा और ही कुछ थी। कृष्णा से मेरी बातें हुई थीं। मेरा ख्याल है कि सरूप के काठियावाड़ के काम के बार में मैंने तुम्हें लिखा था। कमला ने तो मुझे अपना पता तक नहीं भेजा। बहुत दिनों से उसका कोई पत्र नहीं आया है। जब तुम उससे मिलो, उसे और इन्दु को मेरा प्यार पहुँचा देना। कमला को उपवास की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। हो सके तो मुझे तार देना।

हम सब की ओर से प्यार।

बापू

22 जुलाई, 1933

प्रिय जवाहरलाल;

मैंने तुम्हें लिखने की कई बार इच्छा की। परन्तु विवश था। नई प्राप्त होनेवाली रत्ती-रत्ती भर शक्ति सामने रखे हुए आवश्यक कार्य को निबटाने में लगाता रहा।

माताजी और कमला के साथ बहुत अच्छा समय बीता। सरून और रनजीत से अधिक नहीं मिल सका।

माताजी को कृष्णा की चिन्ता है। उसके भविष्य के बारे में उन्होंने मुझसे लम्बी बातचीत की। इस मामले में तुम्हारे पास मेरे लिए कोई सुझाव हो तो बताओं। अलबत्ता मेरी गतिविधियाँ अनिश्चित हैं। परन्तु इसकी परवाह नहीं।

देवदास और लक्ष्मी को मैंने पूना में छोड़ा था। अब वे आनेवाले हैं। बहुत

करके देवदास अभी दिल्ली में बस जाएगा। महादेव, बा और प्रभावती मेरे साथ हैं। ख्याल है कि वे सब शीघ्र ही बिखर जाएँगे।

उपवास से पहले की शक्ति फिर से प्राप्त करने में मन्द गति रही है। परन्तु मेरी दशा धीरे-धीरे सुधर रही है।

सप्रेम
बापू

31 अगस्त, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

तो तुम अपनी अवधि के पहले बाहर आ गये। आशा है, तुम्हें मेरा तार मिला होगा। मैंने सोचा था कि माँ इलाहाबाद वापिस जा रही हैं; मैं तुमसे पूरे विवरण की आशा करता हूँ।

इन्दु मेरे पास अक्सर आती रही है। आज शाम फिर आनेवाली है।

यदि किसी तरह सम्भव हो तो हमें शीघ्र मिलना चाहिए। किन्तु अगर माँ (की हालत) खराब बनी रहती है तो तुम्हें वहाँ रुकना पड़ेगा। मैं तुम्हारे पूरे पत्र की आशा रहूँगा। यह और भी अच्छा रहेगा कि तुम उसे रजिस्ट्री कराके भेजो।

मैं प्रबल रूप से खोई शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ। अतीत के विषय में मैं कुछ नहीं कहता क्योंकि मुझे उम्मीद है, अब तुम उसके बारे में सब कुछ जान चुके हो।

अधिक, मिलने पर।

सप्रेम
बापू

3 सितम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र मिल। स्पष्टतः तुम्हारी उपस्थिति ने माँ के लिए 'टानिक' (बल्य औषधि) का काम किया है। यदि वह ज्वर से मुक्त रहती हैं तो तुम चन्द दिनों के लिए बाहर जाने के लिए स्वतन्त्र हो सकते हों। यदि ऐसा हो तो जितना जल्द सम्भव हो तुम मेरे पास आओ। मैं यहाँ से आगामी शुक्रवार या शनिवार को बम्बई जाने को उत्सुक हूँ—वहाँ लगभग एक सप्ताह रहूँगा और फिर वर्धा

जाऊँगा।

जिस युवक के नाम का जिक्र तुमने किया है, उसे मैं नहीं जानता। मैं परिवार को अच्छी तरह जानता हूँ। मैं उस (युवक) से भी जरूर ही मिला हूँगा किन्तु यदि मैं उसे देखूँगा तो पहचान न सकूँगा। परिवार की परम्परा उदार है। इसलिए उन लोगों के साथ कृष्ण के खूब सुखी होने की सम्भावना है। मैंने अनसूया बहन को लिखा है। जरूरत होने पर मैं तुम्हें तार दूँगा। निश्चय ही, मैं मामले को बिल्कुल गुप्त रख रहा हूँ। मैं यह माने लेता हूँ कि र० ब० को मेरे लिखने का तुमने कुछ बुरा न माना होगा।

कमला को उत्तेजना और चिन्ता से मुक्त रखने की आवश्यकता है। मेरा यह मानने का मन होता है कि बम्बई में वह नौरोजी बहनों के साथ सुखी नहीं है। इसलिए मैं महसूस करता हूँ कि जब तुम यहाँ आओ तो उसे साथ ले आओ और फिर उसे यहीं छोड़ दो।

इस आशा से कि हम जल्दी ही मिल रहे हैं, मैं राजनीतिक स्थिति या अपने उपवास के पराक्रमों के बारे में कुछ नहीं कह रहा हूँ। मैं तेजी से खोई हुई शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ। बेचारा महादेव बेलगाम में है। आग में से गुजरा अच्छा ही है।

कृपया माँ से कहो कि वह निरन्तर मेरे विचारों में हैं। उन्हें बादलों को हटते देखने के लिए काफी दिन जीना है।

तुम सबको मेरा प्रेम।

बापू

29 सितम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

कल ही मैं तुम्हें लिखने को तैयार हो सका हूँ। मेरी जांच 1 बजे दोपहर में पूरी हुई। मैं अब तक कस्तूर भाई, श्री हथीसिंह और शंकरलाल से, जो परिवार को भली-भाँति जानते हैं, मिल चुका हूँ। अपने अनुभवों से मुझे पूरा सन्तोष नहीं है। मुझे साफगोई नहीं मिली। फिर भी प्रस्तावित विवाह के विरुद्ध कुछ कहने को मेरे पास नहीं है। नवीन परिस्थितियों में कृष्णा काफी सुखी रहेगी। इससे भी बड़ी बात यह है कि उसने इस विवाह पर अपना दिल जमा लिया है। वह राजा की मां से पत्र-व्यवहार करती रही है। राजा बाबू उसके चुने (जीवनसाथी) का प्यार का नाम है। कृष्णा के नाम पर वह कुछ छोड़ जाएँगे, इसका तो कोई सवाल ही नहीं है। निश्चय ही मैंने उन लोगों पर इसे पूरी तरह स्पष्ट कर दिया कि कृष्णा

के नाम से कुछ कर देने का सुझाव सिर्फ मेरा था। किन्तु वैसा होते हुए भी उसे विवाह की कोई शर्त बनाने का विचार नहीं था। मैंने उनसे कह दिया कि मैंने यह प्रस्ताव इसलिए किया था कि जहाँ तक सम्भव हो, मैं सभी लड़कियों के लिए ऐसी व्यवस्था करने में विश्वास रखता हूँ। यदि इस विवाह का अन्तिम रूप में निश्चय करना है तो तुम्हें निश्चित प्रस्ताव करते हुए श्रीमती हथीसिंह को अहमदाबाद लिखना चाहिए और वह तुम्हें अपनी स्वीकृति भेज देंगी। वह जितनी जल्द कृष्णा चाहे, विवाह के लिए तैयार हैं। वह इच्छुक हैं और मेरा ख्याल है कि मंगनी और विवाह एक साथ ही कर देना चाहिए। अब तुम युवक हथीसिंह को जब चाहे बुलाने के लिए लिख सकते हो।

मुझे आशा है कि मां, और कमला भी, पहले से अच्छी हैं।

मैं आज सुबह ही वर्धा पहुँचा हूँ। सिवाय ऊँचे रक्तचाप के, जिसे डाक्टरों ने लिखा है, मुझमें कोई खराबी नहीं है, फिर भी आज से कम-से-कम तीन हफ्तों तक, यानी आगामी 15 अक्तूबर तक, मेरा घूमना-फिरना बन्द रहेगा।

मथुरादास बम्बई में हैं। चन्द्रशंकर और नायर, निश्चय ही बा, मीरा बहन और प्रभावती के अलावा, मेरे साथ हैं। प्रभुदास जी मेरे साथ है।

सप्रेम

बापू

24 सितम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

प्रस्तावित परिणय के विषय में आज जमनालाल जी से मेरी बात हुई। लगता है, वह परिवार को अच्छी तरह जानते हैं। उनकी निश्चित राय है कि परिवार, निश्चय ही कस्तूर भाई को छोड़कर, उतनी अच्छी हालत में नहीं है जैसा ऊपर से लगता है। उनकी राय तो यहाँ तक है कि वे अभावग्रस्त हो सकते हैं। मैंने सोचा कि मैं यह सूचना तुम तक पहुँचा दूँ। वह खुद भी इसके लिए उत्सुक हैं कि उनकी राय तुम्हें मालूम हो जाए। निजी तौर पर तो मैं इससे अप्रभावित हूँ। किन्तु वह सोचते हैं कि कृष्णा को इसका पता होना चाहिए। जहाँ तक मैं विचार कर सकता हूँ, कोई कृष्णा के चुनाव को तब तक प्रभावित नहीं कर सकती जब तक कि उसे तरुण (वर) के विरुद्ध कोई निश्चित बात न मिले और वह बिल्कुल सही है। कस्तूर भाई का दृढ़ मत है कि कृष्णा का चुनाव अच्छा है।

तुम सबको प्रेम

बापू

28 सितम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम्हारे कई पत्र मिले। मैंने रफी से लम्बी वार्ता की है। वह तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बतायेंगे। मेरी राय यह है कि भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक करने से कोई लाभ नहीं होगा। किन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि अगर ऐसी बैठक की गई तो इससे मुझे कोई गहरा आघात पहुँचेगा। इसके विपरीत, यदि पर्याप्त संख्या में लोग इसे चाहते हैं, तो उनका कर्त्तव्य है कि ऐसी बैठक के लिए अधियावना भेजें। मैं महसूस यह करता हूँ कि हमें पहल नहीं करनी चाहिए। यदि तुम व्यक्तिगत रूप से यह महसूस करते हो कि अधियाचना न होते हुए भी बैठक बुलाना ज्यादा अच्छा होगा, तो तुम्हें बैठक बुलानी चाहिए। मैं जानता हूँ कि मैं कार्यकर्त्ताओं की सम्मति के भी स्पर्श में नहीं हूँ। इसलिए मेरी राय उन लोगों को बिना किसी डर के निरस्त करनी चाहिए जो दूसरी राय रखते हैं।

रफी हमारी बातचीत का जो वर्णन देंगे उसके अतिरिक्त दूसरे जिस मुद्दे को मैं स्पष्ट करना चाहूँगा, वह है कार्यकर्त्ताओं के विषय में। यद्यपि मैं जो कर सकता हूँ वह तो करूँगा ही, किन्तु यह मेरी सम्मति है कि हर सूबे को अपने कार्यकर्त्ताओं की सहायता करनी चाहिए, यह भी हर जिले या तहसील को भी अपने-अपने कार्यकर्त्ताओं का बोझ उठाना चाहिए। जब तक हम इस स्थिति पर नहीं पहुँचते, हम बालू के घरौंदे की भांति रहेंगे। मैं समझता हूँ कि तुम्हें सूबे में भिक्षापात्र लेकर निकल पड़ना चाहिए और लोगों को इस ओर गतिमान करना और उदाहरण उपस्थित करना चाहिए। मेरा आदर्श तो यह है कि प्रत्येक कार्यकर्त्ता को अपनी जीविका उसी क्षेत्र से, जिसकी सेवा वह करता है, प्राप्त करनी चाहिए और इसमें गौरव का बोध करना चाहिए। प्रत्येक श्रमिक अपनी मजदूरी के योग्य होता है।

शेष रफी से

आशा है, मां और कमला, दोनों पहले से अच्छी हैं। समय पर तुम मुझे बताना कि डा० विधान राय क्या कहते हैं।

सप्रेम

बापू

7 अक्टूबर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। पहले का उत्तर देने की जरूरत नहीं है।

मैं देखता हूँ कि कृष्णा का विवाह 20वीं को हो रहा है। मैं खुश हूँ कि मुझे इलाहाबाद आने की चेष्टा न करनी चाहिए। मेरे लिए यह कहीं ज्यादा अच्छा है कि मैं तब तक पर्दे में रहूँ जब तक कि डाक्टर लोग मुझे बिल्कुल स्वस्थ नहीं घोषित कर देते। साथ में कृष्णा के लिए पत्र है।

मैं देख रहा हूँ कि मां अब भी मुसीबत के बाहर नहीं हैं। हमें आशा करनी चाहिए कि वह विवाह समारोह में उपस्थित होने योग्य तन्दुरुस्ती हासिल कर लेंगी।

मैंने ड० ह० (डेली हेरल्ड ?) के लिए लिखे तुम्हारे लेख को बहुत पसन्द किया। मैं इसे अगाथा के पास भेज रहा हूँ कि वह इसका जो उपयोग ठीक समझे कर ले। वह एक अद्भूत कार्यकर्ती है। मीरा अपने जेल-सम्बन्धी अनुभवों के नोट की सब बात भूल गई थी। अब उसका मस्विदा तैयार हो गया है, वह एण्डरूज को देने के लिए तथा उसका और भी जो उपयोग तुम करना चाहो, उसके लिए तुम्हारे पास भेजा जाएगा।

मैं सोच रहा हूँ कि कार्यकर्त्ताओं के लिए क्या किया जा सकता है।

यह जो मैं टण्डन के मतभेदों के बारे में पढ़ता हूँ, वह क्या बात है ? क्या तुमने वह अनुच्छेद देखा है ?

सप्रेम
बापू

9 अक्टूबर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा तार मिला था, जिसका जवाब मैंने तीसरे पहर भेज दिया। मैं आशा करता हूँ कि माँ इतनी सबल हो जाएँगी कि विवाह (समारोह) में उपस्थित रह सकें।

आज मुझे संलग्न (पत्र) सरला देवी से मिला है। मैंने उन्हें कह दिया है कि इन्दु जैसा भी चुनाव करना चाहे, करने के लिए स्वतन्त्र है और जान नहीं पड़ता कि वह विवाह के किसी प्रस्ताव पर विचार करेगी, क्योंकि अभी पढ़ ही रही है। मैंने उनसे यह भी कह दिया है कि मैं पत्र तुम्हारे पास अग्रसर कर रहा हूँ। यदि इन्दु विवाह-प्रस्ताव पर विचार करने को तैयार हो तो मैं समझता हूँ कि दीपक एक अच्छा वर है।

हार्डीकर तथा कमला चट्टोपाध्याय आज आए हैं। हार्डीकर भगन्दर से पीड़ित

हैं और उनको आपरेशन की जरूरत पड़ेगी। ज्यादा मुझे कल मालूम होगा। जमनालाल जी एक मित्र की, जो आर्थिक संकट में हैं, मदद करने बम्बई गये हैं। वह चार दिनों में लौटेंगे।

यदि सब कुछ ठीक रहा तो मेरा दौरा 8 नवम्बर को शुरू हो रहा है। मैं खूब विश्राम ले रहा हूँ।

आजकल कमला कभी (पत्र) नहीं लिखतीं।

सप्रेम
बापू

15 अक्तूबर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पत्र, जिसके साथ तुमने मदुरा के कृष्णमूर्ति को लिखे अपने पत्र की प्रतिलिपि भेजी है, मिल गया।

यह रही हेल्स को लिखे मेरे उस पत्र की एक प्रतिलिपि, जो उनके पत्र के उत्तर में मैंने लिखा है। उनका पत्र तुमने अखबारों में देखा होगा। मालवीयजी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि भी नत्थी है। यह खुद ही अपनी बात कहता है।

परिणय के लिए मेरी समस्त शुभ कामनाएँ। उस दिन मैं भावना में तुम्हारे साथ रहूँगा।

सप्रेम
बापू

16 अक्तूबर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

यह रहा जमनालाल जी का त्यागपत्र। यदि तुम सोचते हो कि इसे नहीं भेजा जाना चाहिए और इससे उलझन पैदा होगी तो तुम इस पर कोई कार्रवाई न करना। उस हालत में, विवाह की तैयारियों से छुट्टी पाने के बाद तुम इसे अपने कारण लिखकर लौटा सकते हो। किन्तु यदि तुम समझते हो कि त्यागपत्र स्वीकार किया जा सकता है, तो तुम इस तुरन्त प्रकाशित कर सकते हो। मैं जानता हूँ कि कोषाध्यक्ष केवल अखिल भारतीय कांग्रेस समिति-द्वारा ही नियुक्त किया जा

सकता है। इसलिए फिलहाल कोषाध्यक्षता जमनालाल जी के हाथों में बनी रह सकती है। मुख्य बात तो यह है कि वह कार्यसमिति के सदस्य नहीं रह जाते। मेरी समझ में यह कदम बुद्धिमतापूर्ण और आवश्यक है। जिस हालत में वह हैं, उनके लिए इस समय जेल जाना—मतलब विशेषज्ञ जिस विश्राम की आवश्यकता समझता है। उसे लिये बिना जाना—खतरा मोल लेना है। किन्तु सामान्यतः सैनिक उस सीमा तक अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं कर सकते जिस सीमा तक जमनालाल जी के स्वभाव की मांग है और चूँकि वह सविनय प्रतिरोध के कर्त्तव्य के विषय में वही दृष्टि रखते हैं जो मैं रखता हूँ, कांग्रेस संगठन में एक जिम्मेदारी के पद पर रहते हुए उन्हें बेचैनी होती है।

मैंने तुम पर अपनी वह तर्कना प्रकट कर दी है जिसके कारण जमनालाल जी के त्यागपत्र देने के प्रस्ताव पर स्वीकृति देने का निर्णय मुझे करना पड़ा।

तुम्हारा
बापू

18 अक्तूबर, 1933

प्रिय जवाहरलाल,

साथ में दो मालाएँ हैं। ये वर वधू के लिए आज मेरे विशेष रूप से काते हूए सूत से बनाई गई हैं। इनके साथ मेरे शुभ आर्शीवाद जुड़े हुए हैं। मेरी ओर से उनके गले में डाल देना। आशा है, ये तुम्हारे पास समय पर पहुँच जाएँगी।

मुझे इस बात का अवश्य दुःख है कि श्रीमती हथीसिंह ने इस संस्कार के विरुद्ध राय दी है, परन्तु मेरा ख्याल है कि इन मामलों में मैं पिछड़ा हुआ हूँ। दीपक के बारे में मैंने तुम्हारा कहना समझ लिया। मैं सरला देवी को जितने कोमल ढंग से लिख सकता हूँ, लिखूँगा।

तुम सबको प्यार।
बापू

23 अक्टूबर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे दो पत्र मिले थे, एक तुम्हारे यहाँ से और दूसरा कृष्णा तथा राजा से। ईश्वर का धन्यवाद है मां की बहादुरी मेरी पूजा की पात्री है। जब से मेरी उनकी

भेंट हुई तभी से मैंने शान्त, गरिमामाय शौर्य एवं बलिदान की मूर्ति के रूप में उनकी कल्पना कर रखी है।

एक बात मैं तुम्हें लिखने को भूल जाता हूँ। यदि तुम कभी महसूस करो कि तुम अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक बुलाना चाहते हो तो तुम उसे बुलाने में आनाकानी न करना। तुम्हें मेरी अरुचि का विचार करने की जरूरत नहीं है। मेरी अरुचि तो इस कारण है कि मैं समझता हूँ, इससे भ्रान्ति और भी जटिल हो जायेगी तथा उसका मतलब होगा—शक्ति, समय और धन का अपव्यय। किन्तु मैं बिल्कुल गलत हो सकता हूँ।

तुम सबको प्यार।

बापू

26 अक्टूबर, 1933

मेरे प्रिय जवाहर,

इसके साथ है डा० आलम का त्यागपत्र। मैंने उनसे कह दिया है कि इसे तुम्हारे पास भेजा जाना चाहिए था। मैं इसे स्वीकार कर लेने की सलाह देता हूँ। इसका उदय तीखी शिकायत के एक पत्र से हुआ है जो उनके विरुद्ध लाहौर से मिला था। मैंने उनको उसकी एक नकल भेज दी थी। उसमें लगाये गये आरोपों में से कुछ को उन्होंने जोरों के साथ अस्वीकार किया, किन्तु प्रैक्टिस के बारे में एक (आरोप) को मंजूर किया।

जमनालाल जी अपने त्यागपत्र के बारे में चिन्तित हैं। मेरी अपनी राय है कि उनका (त्यागपत्र) भी स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। वह जेल जाने को उत्सुक हैं, किन्तु यह बात उन्हें खलती है कि वह तुरन्त नहीं जा रहे हैं।

मेरा अनुमान है कि कृष्णा अब बम्बई में हैं।

आजकल मैं अखबारों मे मां के विषय में कुछ नहीं देख रहा हूँ। क्या वह, पहले से अच्छी हैं ?

विट्ठल भाई की मृत्यु की तो मुझे पूरी उम्मीद थी किन्तु वास्तविक घटना, मुझे अशान्त करती है। उनके विरोध की ही तो मैं कद्र करता था। वह मेरे दिमाग को स्पष्ट करता था और मुझे मौका देता था कि देश के सामने अपनी स्थिति को उससे ज्यादा साफ तौर पर रखूँ, जितनी कि मैं दूसरी हालत में रखता।

प्यार

बापू

30 अक्तूवर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे अस्पताल के विषय में तुम्हारा पत्र मिला है। बिना प्रतिवाद की आशंका के तुम में यह कहने की सामर्थ्य होनी चाहिए कि स्वराज्य भवन औषधालय पूरी तौर पर एक धोखा है और उसका पूर्ण बहिष्कार किया जाना चाहिए। पूर्ण प्रमाण के बिना मुझे यह विश्वास करने का जी नहीं करता कि वे नकली मामले बनाते हैं। यह प्रमाण पाने को मैं उत्सुक हूँ, क्योंकि कांग्रेस अस्पताल के विषय में अपनी राय बनाने के लिए यह आवश्यक है; मैं यह महसूस करता हूँ कि यदि सरकारी प्रबन्ध निष्फल साबित हुआ है तो विशुद्ध अस्पताली काम के लिए स्वराज-भवन पर हम कब्जा कर सकेंगे। अगर तुम समझते हो कि कांग्रेस अस्पताल या औषधालय उसी स्थान पर चलाना चाहिए, जहाँ कि इस समय वह चलाया जा रहा है और स्वराज्य भवन को फिर से कब्जे में लेने के लिए कोई यत्न नहीं करना चाहिए, तब अपील आवश्यक हो जाती है और वह मोहनलाल नेहरू तथा कमला के नाम पर प्रकाशित होनी चाहिए।

मुझे खुशी है कि मां की हालत बराबर सुधर रही है। उनमें जो मानसिक तनाव था वह निश्चय ही विवाहोत्सव की सफल समाप्ति से कम हुआ जान पड़ता है।

एण्डरूज के यहाँ बुधवार को आने की उम्मीद है।

तुम जमनालाल जी के विषय में जो कुछ कहते हो, उसे मैं समझता हूँ। तुम्हारी राय में उसे कब सुरक्षित रूप से घोषित किया जा सकता है ?

ठक्कर बापा ने यह कहते हुए पत्र लिखा है कि तुमने कांग्रेसियों को हरिजन कार्य करने से मना कर दिया है—चाहे वे सविनय प्रतिरोध न कर रहे हो। सत्य क्या है ? मैं तो ऐसे किसी प्रतिबन्ध को नहीं जानता।

तुम्हारा
बापू

1 नवम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे कई पत्र मिले हैं। मैं देखता हूँ, तुमने दोनों त्यागपत्र अखबारों में (प्रकाशनार्थ) दे दिये हैं। उनसे वातावरण कुछ साफ होगा।

मैं हिन्दू सभा की कार्रवाइयों को समझ नहीं पाता। वे दूषित हैं। यदि वे

शुद्धि के विषय में मेरे नाम का इस्तेमाल कर रहे हैं तो यह उनकी अशिष्टता है। अगर तुम्हारे पास (ऐसा) कोई साहित्य हो तो कृपया मुझे भेज दो। मैं समझता हूँ कि तथाकथित या यथार्थ, राष्ट्रीय पत्रों ने उसकी कार्रवाइयों का स्वागत नहीं किया है, बल्कि अक्सर निन्दा भी की है। मुझे मौ० अ० क० आजाद की किताब पर किसी प्रतिबन्ध का ज्ञान नहीं है। जहाँ तक हरिजन कार्यों का सम्बन्ध है, शिकायत पूरी तौर पर नामुनासिब है। मेरा अन्तःकरण पूर्णतः स्वच्छ है। जहाँ तक तुम्हारा और मेरा सम्बन्ध है, अगर तुम चाहो हम चिट्ठियों का विनिमय करके, अपने दिमाग और हाथ साफ कर सकते हैं। मैं नहीं जानता कि निश्चित कार्यों की अभ्रान्त निन्दा के अलावा कौन-सी आक्रामक कार्रवाई सम्भव या वांछनीय है।

जहाँ तक गोरखपुर की बात है, मुझे समझ में नहीं आता कि क्या किया जा सकता है। मैं दल के लोगों में काम करने वाले तुम्हारे कार्यकर्त्ताओं के लिए ही पैसे जुटाने में कठिनाई का अनुभव कर रहा हूँ। मैं अब भी दोनों के बारे में बात कर रहा हूँ। बाबा राववदास ने मुझसे कहा कि विपत्तिग्रस्त किसानों के लिए अन्न का संग्रह कर रहे हैं। उन्होंने मुझसे वादा कर रखा है कि जुल्म के प्रामाणिक ब्यौरे मुझे भेजेंगे।

कल नरीमन यहाँ थे। मैंने उन्हें तुमसे मिलने की सलाह दी है और कह दिया है कि तुम मेरे राजनीतिक प्रधान हो और मैं क्या कर सकता हूँ ? एक धार्मिक मुक्तिदाता के रूप में मैं पूरी तरह असम्मानित हो चुका हूँ और मैं मुख्यतः एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हूँ। मैंने उनसे कह दिया है कि यदि मुझे यह विश्वास हो जाए कि भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य स० अ० (सविनय अवज्ञा) आन्दोलन बन्द करना और कौंसिल प्रवेश कार्यक्रम पसन्द करते हैं, तो मैं तुरन्त तुम्हें अ० भा० का० क० की बैठक बुलाने के लिए कहूँगा। मेरा विश्वास है कि बहुमत स० अ० (सविनय अवज्ञा) कार्यक्रम पर जोर देगा और मैं नहीं चाहता कि इसके लिए अध्यादेशों को जारी करने का निमन्त्रण मैं दूँ। मैंने उनसे कह दिया है कि अ० भा० का० क० जो भी कार्यक्रम चाहे उसका प्रतिरोध मैं नहीं करूँगा, यद्यपि मैं स० अ० (सविनय अवज्ञा) के स्थगित किये जाने के लिए अपनी मंजूरी नहीं दे सकता। मैं केलकर के आचरण को ईमानदारी का और संगत मानता हूँ। वह स्पष्ट रूप से असहयोग और स० अ० (सविनय अवज्ञा) को नापसन्द करते हैं। वह आतंकवादियों, या उन्हें जो भी नाम दिया जाए का साथ नहीं देंगे। वैसी हालत में राजनीतिक कार्य करने वाले आदमी के लिए कौंसिल प्रवेश ही एकमात्र कार्यक्रम रह जाता है। निराशापूर्ण निष्क्रियता सबसे बुरी चीज है और उसका

अनुमोदन नहीं होना चाहिए।

मैं समझता हूँ कि तुम्हारे पत्र में उठाई गई और न उठाई गई भी सब बातों का जवाब मैंने दे दिया है। अब प्रातः 4 बजने वाले हैं।

आशा करता हूँ, माँ की प्रगति जारी है।

कमला के लिए एक रुक्का संलग्न है।

प्रेम
बापू

3 नवम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

सीमाप्रान्त वाली टिप्पणी में जिन अत्याचारों का जिक्र किया गया है, उनके विषय में मेरी अपनी राय तो यह है कि पहले उनके लिए व्यक्तिगत रूप से प्रयत्न किया जाना चाहिए और इससे कम निर्दय उपाय ग्रहण करने के लिए अधिकारियों को तैयार करने में हम जो भी साधन इस्तेमाल कर सकें, उनसे काम लेना चाहिए। मैं एण्डरूज से कह रहा हूँ कि वह सीमाप्रान्त वाली टिप्पणी का मामला अपने हाथ में लें और यदि तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो मैं चाहूँगा कि तुम वह टिप्पणी सर तेजबहादुर को भी दिखा दो और देखो कि उसके बारे में उनके पास कहने के लिए क्या है—यह भी कि क्या वह इस विषय में कुछ करने की इच्छा रखते हैं।

हिजली में जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में मैंने बंगाल के गवर्नर को जो पत्र लिखा है उसकी एक प्रति इसके साथ संलग्न कर रहा हूँ।

प्रेम
बापू

11 नवम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मैं अभी एक भारी दौरे के कार्यक्रम से लौटा हूँ और तुम्हारा पत्र पढ़ने के बाद यह तार दिया है :

"दो दिन देने में असमर्थ। किसी भी सोमवार के तीसरे पहर तीन घण्टे दे सकता हूँ। सत्ताईसवीं को रायपुर (में), चौथी दिसम्बर जबलपुर।"

एक दिन से ज्यादा और तीन घण्टे से ज्यादा देना असम्भव है। कार्यक्रम इतना भरा हुआ है कि विश्राम के लिए भी शायद ही समय मिल पाता है।

विश्राम, स्नान और भोजन के चार घण्टे घटकर अब दो ही रह गये हैं। एक कार्यक्रम जिससे दसियों हजार आदमियों का सम्बन्ध है, आसानी से स्थगित या परिवर्तित नहीं किया जा सकता। संलग्न प्रति से तुम काम की कुछ कल्पना कर सकोगे और जहाँ विश्राम के घण्टों का जिक्र है, वे शुक्रवार की दोपहर के अतिरिक्त और दिन 10 से 2 की जगह, समय पर अनधिकृत कब्जे के कारण, 12 बजे से 2 बजे दिन तक ही रहे गये हैं।

मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूँ कि प्रस्तावित वार्त्ता से, मामलों की किसी सन्तोषजनक सीमा तक, सफाई नहीं हो पायेगी। यदि अ० भा० कां० क० की बैठक होती है, तो मैं नहीं जानता कि मैं बैठकों में कैसे उपस्थित हो सकूँगा। क्या यह मेरे लिए ज्यादा अच्छा न होगा कि मैं अनुपस्थित ही रहूँ ? यदि वह वांछनीय है तो मैं अपने विचार लिखकर भेज दूँगा। जो राय मैंने तुमको लिखे अपने पिछले पत्र में व्यक्त की है, वह अधिकाधिक पक्की होती जा रही है।

तुमने हिजली जेल के बारे में लाहिड़ी का वक्तव्य जरूर ही देखा होगा। उससे सतीश बाबू के पत्र की जरूरत से ज्यादा पुष्टि होती है। मुझे गवर्नर का पत्र भी मिला है। उनके सचिव ने लिखा है कि "महामहिम उस मामले को, जिसके बारे में आपने लिखा है, देखेंगे।"

मैंने अस्पताल वाली अपील पढ़ी है। मुझे आशा है कि लोग इसका इसके योग्य उत्तर देंगे।

सरकारी माँग के विषय में तुम्हारा पत्र मैंने ध्यान से पढ़ा है। तुम स्वराज्य भवन के बारे में जो कुछ करो, क्या तुम यह नहीं सोचते कि तुम्हें न्यासियों (ट्रस्टियों) से सलाह लेनी चाहिए, न कि उन्हें केवल सूचना देनी चाहिए ? मैं निपट समयाभाव के कारण तुम्हारा पत्र जमनालाल जी तक को दिखा नहीं पाया हूँ। वह मुझे लिखकर कहते हैं कि चूँकि मैं वर्धा में हूँ, तुम उनकी पूर्णतः उपेक्षा कर रहे हो—यहाँ तक कि उनके पत्रों की प्राप्ति की सूचना भी नहीं देते। मैंने उनसे कह दिया है कि मुझको लिखे हुए तुम्हारे पत्र जैसे मेरे लिए हैं वैसे ही उनके लिए भी हैं और हममें से थोड़े से जो लोग बाहर है, उनके पास केवल शिष्टाचार के कामों के लिए मुश्किल से समय है।

मां जैसी एक वृद्ध मरीजा के लिए तेजी से सुधार की आशा तुम नहीं कर सकते। मेरे लिए तो आश्चर्य यही है कि उन पर जो आक्रमण हुआ था, उसे वह झेल कैसे गईं। मुझे आशा है, सुधार धीमा होते हुए भी बराबर जारी है।

प्रेम

बापू

13 नवम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मैं अभी-अभी चांदा पहुँचा हूँ और जब तक और लोग आते हैं, तब तक मैंने तुम्हारा पत्र हाथ में लिया है। इस समय रात को नौ बज गये हैं। कार्यक्रम बड़ा श्रमसाध्य है। 6 बजे शाम मैं हींगनघाट में था।

तिवारी ने मुझे तुम्हारा पत्र दिया। मैंने ज० के नाम भी तुम्हारा (पत्र) पढ़ा है। जहाँ तक उनको पता है, भारतीय कांग्रेस कमेटी के हिसाब में अब बहुत ही कम बच गया है। बहियाँ उनके पास नहीं हैं। उन्होंने हिसाब मंगाया है। इसी बीच मैंने सुझाव दिया है कि हिसाब में से कम से कम 500 रुपये भेजे जा सकते हैं। यदि कोष रिक्त हो गया है तो मेरी समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए। मेरे पास एक नामांकित हिसाब है, मैं उसमें से रुपया निकालने को नापसन्द करता हूँ। मैं उसमें से हर्डीकर के लिए खर्च कर रहा हूँ और तुमने मेरे पास कार्यकर्त्ताओं की जो सूची भेजी है उनके लिए भी वैसा ही करना चाहता हूँ। वह भी शीघ्र ही खत्म हो जायेगा। ऐसी परिस्थिति में कार्यालय की कर्मचारी मण्डली को यदि पूर्णतः खत्म नहीं तो कम तो किया ही जा सकता है—मतलब उस हालत में, जब सविनय प्रतिरोध आन्दोलन को जारी रखना है। मैं अपने चतुर्दिक जितना ही देखता हूँ, उतना ही ज्यादा मुझे इसका निश्चय होता है कि जो लड़ाई में हैं उन्हें बिना पैसों के काम चलाना होगा—सिवाय इस अपवाद के कि मेरे जैसे कुछ लोगों के हाथ में कुछ पैसा रह जाए। मैंने कभी-कभी गुजरात और कर्नाटक की व्यवस्था की है। जिस महिला को 50000 रुपये देना था, उसने अभी सन्देश भेजा कि वह तुम्हें 10000 रुपये देना चाहती है। यदि वह देती है तो मैं तुमसे यह अपेक्षा रखूँगा कि तुम उसमें से उत्तर प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं को दे दो। कुछ भी हो, तुम्हारे लिए सबसे अच्छा यह होगा कि जो कोष अब भी प्राप्य हैं उनके बारे में जमनालाल जी से और जरूरी समझो तो मुझसे भी, सलाह कर लो। मैंने सब जगह सूचना भेज दी है कि मुझसे अब और सहायता पाने की आशा न की जाए। जो कुछ मेरे पास (बच गया) है उसी से काम चलाने का मैं यत्न कर रहा हूँ।

अब अनौपचारिक बैठक की बात लो। जो कार्यक्रम संलग्न है, उससे तुम देख सकते हो कि 10 से 14 दिसम्बर के बीच मैं दिल्ली रहूँगा। ठक्कर बापा कह रहे हैं कि अपनी बैठक के लिए 14 का अधिकांश मैं ले सकता हूँ। 14 को ही 4 बजे दिन के बाद तुरन्त मुझसे आन्ध्र की ट्रेन पकड़ने की आशा की जाती है।

अंसारी ने, जो मेरे पास रविवार को मौजूद थे, दिल्ली का सुझाव दिया। यदि परामर्श सम्मेलन को होना ही है तो तुम 27 (नवम्बर), 4 दिसम्बर और 14 दिसम्बर में से अपना चुनाव कर सकते हो।

जहाँ तक हरिजन प्रवास का सम्बन्ध है, मैं उत्तर प्रदेश में प्रस्तावित बहिष्कार से बिल्कुल चिन्तित नहीं हूँ। मुझे यहाँ कोई कठिनाई महसूस नहीं हो रही है। कांग्रेसी और गैर-कांग्रेसी प्रवास की व्यवस्था करने में सहयोग दे रहे हैं। तुम उदारदल वालों पर, जिन्हें मैं गैर-कांग्रेसियों में शामिल करूँगा, अनावश्यक रूप से कठोर हो। हमें तो उनसे भी काम लेना है। वे अपने विवेक के अनुसार काम करते हैं। किसी भी हालत में मैं ऐसे एक भी कांग्रेसी से, जो जेल जानेवाला हो, इस आन्दोलन में काम नहीं लेना चाहता। मेरे पास जो कोई आया है, उससे मैंने यही बात कही है। कुछ सर्वोत्तम कार्यकर्त्ताओं को, जो अभी-अभी बाहर आये हैं, मैं पुनः (जेल) भेज रहा हूँ। मुझे आशा है, बा भी शीघ्र ही जा रही हैं, मणिबहन पटेल भी वैसी ही करेगी। काका साहब, स्वामी, सुरेन्द्र ज़ा रहे हैं। जो कांग्रेसी जाने के लिए बहुत दुर्बल हैं अथवा जिनका विश्वास स० अ० (सविनय अवज्ञा) से उठ गया है और जो हरिजनों के लिए काम करने को उत्सुक हैं, उन्हें ही मैं ले रहा हूँ, किन्तु उन्हें नहीं, जो हरिजन कार्य को सिर्फ एक आड़ बनाना चाहते हैं। इस आन्दोलन को, यदि इसे सार्वदेशिक बनना है तो तब भी चलना ही चाहिए जब हर एक कांग्रेसी जेल चला जाए, या फिर इसे नष्ट हो जाना चाहिए। मैं यह भी महसूस करता हूँ कि कांग्रेसियों को इस आन्दोलन का उपयोग सविनय अवज्ञा आन्दोलन या जनता पर कांग्रेस के अधिकार को दृढ़ करने में नहीं करना चाहिए। यह इसे गलत दिशा में ले जाना होगा। ऐसा रुख कांग्रेस और हरिजन कार्य दोनों को हानि पहुँचायेगा। ऐसे मामले हमारी नजर में आ चुके हैं। मैंने ऐसे किसी काम के प्रति अपनी प्रबल नापसन्दगी जाहिर की है। मैं समझता हूँ कि मैंने अब काफी तौर पर तुम्हारे सब सवालों का जवाब दे दिया है। यदि ऐसा नहीं है तो कृपया पूछना।

तुमने ध्यान दिया होगा कि हिजली में "सरकार सलाम" बन्द हो गया है। क्या सीमाप्रान्त के व्यवहार के बारे में मैं सर तेज को लिखूँ ?

मुझे कृष्णा का एक सुन्दर पत्र मिला था। वह अपने नये घर में सुखी जान पड़ती है।

मैं आशा करता हूँ कि मां की प्रगति जारी है।

प्रेम

बापू

27 नवम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

यह रहा गोसावी का पत्र। मैं उनको कह (लिख) रहा हूँ कि मुझे दल के प्रति तब तक कोई आपत्ति नहीं मालूम पड़ती जब तक कि उनके कांग्रेस दल होने का दावा नहीं किया जाता और यह कि हर हालत में उन्हें तुम्हारी सलाह लेनी चाहिए।

मैंने नोट कर लिया है कि हमें 5 दिसम्बर को जबलपुर में मिलना है। यदि किसी तरह भी सम्भव हो सका, तो मैं और ज्यादा समय देने का प्रयत्न करूँगा।

क्या मैंने तुम्हें सी० पी० (मध्य प्रान्त) का कार्यक्रम भेजा नहीं है ? उससे ज्यादा अब तक तैयार नहीं था।

तो तुम धीरे-धीरे शेयरों और वैसी चीजों के बोझ से मुक्त हो रहे हो। मुझे इसका अफसोस नहीं है। मेरे दृष्टिकोण से तो आदर्श बात यही होगी कि तुम स्वेच्छा से जो कुछ सम्पत्ति तुम्हारे पास है उसे या तो किसी संस्था को दे दो या कुटुम्ब के उन सदस्यों को, जो अपने को इस संग्राम में डालना नहीं चाहते—इस संग्राम में जिसका लम्बे समय तक चलना निश्चित है और जिसके शायद अधिकाधिक कठोर होते जाने की सम्भावना है। अन्तिम मोर्चे पर तो सिर्फ वे ही खड़े हो पायेंगे जिनके पास कोई जायदाद नहीं है और जिनके लिए सिर रखने को कोई जगह नहीं है। किन्तु भविष्य को लेकर चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं है। चाहे जो हो, तुम तो अगली पंक्ति में ही पाए जाओगे।

मुझे खुशी है कि मां निरन्तर प्रगति कर रही हैं। पता नहीं, कि जो कुछ घटनाएँ घट रही हैं इसकी जानकारी उन्हें है या नहीं।

हाँ, मैंने हिन्दू सभा पर तुम्हारा आक्रमण पढ़ा था। वह इससे कम कठोर हो सकता था। संक्षेप-सार से तुम एकपक्षीय जैसे बोलते दिखते हो।

प्रेम

बापू

26 दिसम्बर, 1933

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

यह है 'म० (मद्रास ?) मेल' की एक कतरन। यद्यपि सम्पूर्ण वार्त्तालाप तुम्हारे विचारों के सन्दर्भ मैं है, स्वभावतः भेंट लेने वाला उसे (ज्यों का त्यों) प्रकट नहीं कर सका। मुझे प्रूफ तो दिखाया था। जो कुछ मैंने कहा था उसके सार की

यह अच्छी प्रस्तुति है। कृपया इसे ध्यान से पढ़ना और जहाँ तुम्हें लगे कि मैंने तुम्हारे बारे में गलती की है वहाँ मुझे सही करना। हमारे क्षेत्र में भी तुम्हारे बारे में बहुत काफी गलतफहमी है। किन्तु इससे मुझे परेशानी नहीं होती।

जहाँ तक कार्यक्रम निश्चित है (इसके साथ) तुम्हें वह भी मिलेगा।

मुझे आशा है, माँ प्रगति पर हैं।

प्रेम

बापू

21 जनवरी, 1934

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मेरे सामने तुम्हारे तीन पत्र पड़े हैं।

जहाँ तक रुपये की बात है, मैंने समझा था कि अब तक वे तुम्हें मिल चुके होंगे। मैंने आदेश दे दिया था। मैं स्मरण पत्र भेज रहा हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि कलकत्ता में दी गई सलाह से कमला को कुछ लाभ हुआ होगा।

मुझे तुम्हारे लिए क्षमा मांगने की इच्छा नहीं थी। उस भेंट में भेंटकर्त्ता पर पड़ी, विचारों की छाप है। किन्तु उसमें क्षमाप्रार्थना नहीं है। मैंने तुम्हारे मानस और कार्यों की अपनी व्याख्या दी है। मैं महसूस करता हूँ कि तुम्हारा ठोस कार्यक्रम अब भी द्रवणशील (अनिश्चित) स्थिति में है। तुम वैसा कहने के लिए अत्यधिक सच्चे हो। मुझे आज अपना सारा कार्यक्रम मालूम है। तुममे समाजवाद के विज्ञान के बारे में कोई अनिश्चितता नहीं है किन्तु तुम पूरी तरह नहीं जानते कि सत्ता प्राप्त होने पर उसे किस प्रकार लागू करोगे।

तुमने कांग्रेस में अपने स्थान का सवाल अनावश्यक रूप से खड़ा कर दिया है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, तुम्हारे कारण मुझे कोई परेशानी नहीं है। तुम्हारे बिना मैं खुद कांग्रेस में वीराना हो जाऊँगा।

इस समय इससे ज्यादा नहीं कहूँगा। लम्बा पत्र लिखने के लिए भी मेरे पास समय नहीं है।

26वीं के बारे में मुझे तुम्हारी नोटिस मिली है। मैं तो इसे तब तक जारी न किये होता जब तक मैं निश्चित रूप से यह कहने की स्थिति में न होता कि क्या करना चाहिए। किन्तु मैं इसका कुछ ख्याल नहीं करता।

मिदनापुर में की गई सरकारी कार्रवाई के बारे में 'हिन्दू' में जो संक्षिप्त तार

छपा है उसने मुझे स्तब्ध कर दिया है। (ये) कार्रवाइयाँ 1919 की पंजाबवाली कार्रवाइयों से भी बुरी जान पड़ती हैं। आघात प्रायः असह्य है। हमारी कायरता मुझे व्याकुल कर देती है। यह जाने बिना कि अखबार क्या कहते हैं, यदि वह कुछ कहते भी हैं, मैं अपने विश्लेषण में गलत भी हो सकता हूँ, मैंने कभी अपने को ऐसा असहाय नहीं अनुभव किया, जैसा इस समय कर रहा हूँ।

मैंने डा० विधान और गुरुदेव को लिखा है।

मुझे आशा है, माँ पहले से अच्छी है।

रफी का क्या हाल है ?

प्रेम

बापू

14 मार्च, 1934

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

बचे हुए काम को निबटाने के लिए मैं आज सुबह (रात ?) 12-15 पर उठ गया हूँ।

तुम सदा ही मेरे मन में रहे हो। मुझे आशा है, तुम्हें यह पत्र प्राप्त करने की अनुमति मिल जायेगी। मैं तुमसे इस आशय की एक पंक्ति चाहूँगा कि तुम कैसे हो और क्या कर रहे हो।

तुमने निश्चय ही मेरे दो निर्णय देखे होंगे। वे दोनों एक ही समय हुए, यह तो केवल एक संयोग है। स्वराज्य दल का पुनर्जीवन ठीक कदम है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कांग्रेस में हमारे बीच ऐसे आदमियों का एक दल है जो कौंसिल प्रवेश में विश्वास रखते हैं और जिन्हें यदि वह कार्यक्रम नहीं प्राप्त हुआ तो और कुछ नहीं करेंगे। उनकी महत्वाकांक्षा की पूर्ति होनी ही चाहिए। दूसरा निर्णय, जिसमें जहाँ तक लक्ष्य का सम्बन्ध है, स० प्र० (सविनय प्रतिरोध) केवल मुझ तक सीमित कर दिया गया है, उससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह अनिवार्य था। उस पर पहुँचने के बाद, मैं हजारों कारणों से निर्णय के औचित्य को देख सकता हूँ। मैंने निदान कारण दिया है। किन्तु निर्णय धीरे-धीरे मुझमें रूप ले रहा था। मैं आशा करता हूँ कि इससे तुम्हें परेशानी नहीं होगी। जब निर्णय रूप ले रहा था तब उस सारे समय तुम मेरे मनश्चक्षु के सम्मुख थे। मैं इस निदान पर पहुँचा कि यद्यपि यह क्षणिक आघात पहुँचाएगा, अन्त में तुम इसके सत्य को देख सकोगे और खुश होगे।

हम सब अक्सर तुम्हारे बारे में बात करते हैं। हमारा एक बड़ा दल है। जब मैं इलाहाबाद से गुजरा तो माँ तथा कुटुम्ब के सदस्यों के साथ लगभग दो घण्टे तक था।

प्रेम
बापू

21 अप्रैल, 1934

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

टिप्पणियाँ पढ़ने अच्छी लगती हैं। तुम्हारे उत्तर काफी पूर्ण और निश्चय ही बेलाग थे।

तुम आगामी बैठक के बारे में चिन्तित क्यों होते हो ? यदि चर्चा होती है तो वह एक-दूसरे के विचारों की उपयुक्तता को एक दूसरे को समझाने के लिए ही तो होगी। जब तुम समझना कि किसी प्रस्ताव पर भली प्रकार तर्क हो चुका है, तो तुम बहस बन्द कर देना। आखिर तो तुम दलबद्ध काम चाहते हो और अगर ऐसा हो जाता है तो मुझे तो बड़ी आशा हो जाती है।

मैं 23 की शाम नागपुर पहुँच रहा हूँ।

मेरी कामना है, रंजीत अपना भार खुद उठायेगा। मुझे खुशी है कि वह खाली गया है। मैं आशा करता हूँ कि सरूप तुम्हारे साथ आयेगी।

सरदार अब भी पीड़ित हैं और इस समय सिर्फ मनखिया दूध पर हैं। 8 मई के बाद मैं उनको नान्दी दुर्ग ले जा रहा हूँ। मेरी कामना है कि तुम भी आ सकते।

प्रेम
बापू

10 अगस्त, 1934

प्रिय जवाहरलाल,

खानसाहब को बम्बई की बैठकों में आने के लिए साधारण सूचना मिल गई है। उनकी इच्छा आने की नहीं है और मैं उन्हें दबाना नहीं चाहता। बम्बई में उन्हें सभाओं और समारोहों में शरीक होने को कहा जाएगा और बोलने का

अनुरोध किया जाएगा। मैं नहीं चाहता कि अभी वह ऐसा करें। मैं यह चाहता हूँ कि वह यह साल मेरे साथ बितायें। दूसरे, बीमारी के हमलों को रोकने की भी उनमें बहुत शक्ति नहीं है। इसलिए उन्हें सम्मिलित होने से माफ कर दोगे ?

सस्नेह

बापू

14 अगस्त, 1934

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

यद्यपि तुम संकटापन्न परिस्थितियों में बाहर आये हो, तुम्हारी रिहाई से मेरे दिमाग का एक बड़ा बोझ उतर गया है, क्योंकि यह कमला के लिए तीन-चौथाई दवा है। मैंने जो महत्वपूर्ण पग ग्रहण किये हैं उन सबके बीच तुम्हारी अनुपस्थिति मुझे बहुत खलती थी। किन्तु इनके बारे में तो तब बातें होंगी जब हम मिलेंगे।

मैं ठीक हूँ, यद्यपि अन्तिम दिन सब दिनों से कष्टकर था और उसने मुझे पूरी तरह धोकर रख दिया। किन्तु मुझे सन्देह नहीं है कि मैं अपनी खोइ तन्दुरुस्ती तेजी से प्राप्त कर लूँगा।

मैं यह पत्र तुम्हें यह सुझाव देने के लिए लिख रहा हूँ कि तुम्हें कोई सार्वजनिक राजनीतिक वक्तव्य नहीं देना चाहिए। मैंने महसूस किया है कि घरेलू बीमारी या शोक के मामलों में सरकार ने उचित ढंग से काम लिया है। इसलिए मैं महसूस करता हूँ कि हमें इस तरह प्राप्त स्वतन्त्रता को किसी ऐसे कार्य में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जो सरकार के प्रतिकूल हो—विशेषतः तब जब सविनय प्रतिरोध स्थगित कर दिया गया हो। अगर मेरा तर्क तुम्हारे विवेक को अपील करता हो तो तुम एक योग्य ढंग पर अपने आत्म-नियन्त्रण की घोषणा करोगे। जब कमला की हालत कुछ अच्छी हो जाए तब तुमसे मैं यहाँ आने की आशा करूँगा। मैं वर्धा में (इस) महीने के अन्त तक रहूँगा—सिवाय इस अपवाद के कि इसी महीने के अन्दर शायद जमनालाल जी का जो कठिन आपरेशन हो उसमें उपस्थित रहने के लिए मुझे बम्वई जाना पड़े।

मुझे आशा है कि माँ ठीक हैं और कृष्णा भी अच्छी है। तुम मुझे यह जानकारी दोगे कि इस बार जेल में तुम कैसे रहे ?

प्रेम

बापू

उनकी एक प्रति यह रही। चूँकि मैं नहीं जा सका और चूँकि हमें अशान्तिकर समाचार मिल रहे थे, मैंने महसूस किया कि उसे भेजा जाना चाहिए। मैं ये टिप्पणियाँ सब सदस्यों में नहीं घुमा रहा हूँ। मैं (इसकी) प्रतिलिपियाँ मौलाना और सुभाष को भेज रहा हूँ। ये टिप्पणियाँ उद्विग्न कर देती हैं। महादेव के पास तो कहने के लिए और बातें भी हैं। बेशक, मैं एक प्रतिलिपि (अली) भाइयों को भेज रहा हूँ। मुझे आशा है कि तुम (अली) भाइयों पर अपने महत प्रभाव का उपयोग करने को प्रेरित होगे। निस्सन्देह मैं भी तार द्वारा सम्बन्ध रख रहा हूँ। यदि खां साहब चाहेंगे तो जो आघात मुझे लगा हैं उसके बावजूद मैं चन्द दिनों के लिए प्रान्त में जा भी सकता हूँ। ऐसा लगता है कि हम अन्दर से दुर्बल होते जा रहे हैं। जब मैं देखता हूँ कि अपने इतिहास के इस खतरनाक समय में महत्वपूर्ण प्रश्नों पर हम लोग एक दूसरे से सहमत नहीं हैं मुझे चोट लगती है। यह जानते हुए कि आजकल मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा पाता (सहमत नहीं कर पाता) मैं अपने को कितना अकेला अनुभव करता हूँ, यह मैं तुम्हें बता नहीं सकता। मैं यह जानता हूँ कि तुम स्नेह की खातिर बहुत कुछ करोगे, किन्तु राज्य के बारे में जब बुद्धि व्रिदोह करती है तब, स्नेह को आत्मार्पण नहीं किया जा सकता। तुम्हारे विद्रोह के कारण तुम्हारे प्रति मेरा आदरभाव और गहरा हो गया है। किन्तु इससे अकेलेपन का दुःख और बढ़ जाता है। पर अब मुझे खत्म करना चाहिए।

प्रेम
बापू

10 अगस्त, 1935

चि० जवाहरलाल,

तुम्हारा खत मिला है। चर्खा संघ की काश्मीर शाखा की थोड़ी बात तो मैं जानता हूँ। दवाखाना क्यों बद हुआ, मैं नहीं जानता हूँ तुमने मुझको लिखा सो तो अच्छा हुआ। मैंने खत की नकल जाजू को भेज दी है। मैं तो मुंबई जा रहा हूँ वहाँ से सरदार को लेकर पूना जाऊँगा। वहाँ कितना रहना होगा मुझे पता नहीं है। जाजू जीं का जवाब आने पर फिर लिखूँगा।

तुमको काश्मीर की मुसाफिरी से फायदा होना ही था।

मोलाना साहब पर क्या हमला हुआ था ?

बापू के आशीर्वाद

4 सितम्बर, 1935

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा तार मिलने पर मुझे जो आराम मिला, उसकी तुम कल्पना कर सकते हो। सदा की तरह महादेव इसे अपने साथ ले जा रहा है। काश मैं खुद आया होता किन्तु मुझे नहीं आना चाहिए। सामान्य दिलचस्पी की सब बातों पर तुम मुझे साफ-साफ अपनी राय देना। यदि कोई अलंध्य अवरोध न हो तो अगले वर्ष तुम्हें कांग्रेस जलयान को अपने हाथ में लेना चाहिए। वहाँ पहुँचने पर तुम कमला की दशा का तार मुझे दोगे। तुम्हारी रिहाई की खबर से ही उसे काफी आराम पहुँचा होगा।

मुझे आशा है, तुम अच्छे होगे।

प्रेम

बापू

12 सितम्बर,1935

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

कैसा अच्छा हुआ, तुम कमला के पास पहुँच गये। उसके लिए यही सर्वोत्तम 'टानिक' (बल्य औषधि) है। इसके साथ में उसके लिए (भी) एक रुक्का रखूँगा। तुम्हारे संदेश यहाँ बाकायदा पहुँच रहे हैं। जो कुछ सरूप के पास आता है वह उसे दोहरा देती है। हमें आशा करनी चाहिए, अन्त में सब अच्छा ही होगा। कृपया डा० अटल को उनके सन्देशों और पत्रों के लिए धन्यवाद दो, जो बड़े उपयोगी साबित हुए हैं। जब तक खतरा बना है मैं तुमसे बराबर पत्र की आशा करता हूँ। टाइप किये हुए पन्ने मेरे पास हैं। जितनी जल्दी सम्भव होगा, मैं उन्हें पढ़ जाऊँगा।

किसी जाँच-कार्य में वल्लभ भाई को मदद देने के लिए महादेव को बम्बई जाना पड़ा। वह अब भी वहीं है। राजगोपालाचारी लक्ष्मी और उसके शिशु पुत्र अभी-अभी आये है। देवदास बुरी तरह बीमार था। अंसारी ने उसे शिमला भेज दिया है। मीरा मेरे पास है किन्तु दूषित ज्वर में चित्त पड़ी हुई है।

मैं चाहता हूँ कि अगले साल के लिए तुम अपने को अध्यक्ष निर्वाचित होने देने की अनुमति दोगे। तुम्हारी स्वीकृति से अनेक कठिनाइयाँ हल हो जाएँगी। यदि तुम ठीक समझो तो मुझे एक तार भेज दो।

क्या इन्दु का तय हो गया ?
खुर्शेद यहाँ है। वह तुम्हें मामूली डाक से (पत्र) लिखेगी।

हम सबसे प्रेम
वापू

22 सितम्बर, 1935

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे तीन स्वागत (सु-आगत) पत्रों ने हम सब को कमला के विषय में सही खबर दी। कुछ समय के लिए तुमसे इसी व्यवहार का अनुसरण करने की आशा करता हूँ। मैंने नित्य तार देने के लिए तार किया है क्योंकि जनता की वैसी माँग है। किन्तु जब परिवर्तन नहीं था तब कोई (तार) न भेजकर तुमने ठीक ही किया। प्रेषक का नाम निकालकर भी तुमने ठीक किया। वहाँ तुम्हारी उपस्थिति से यहाँ के तुम्हारे मित्रों को बड़ा सन्तोष मिला है, क्योंकि वह कमला के लिए अमृत का काम करेगी। इस हवाई डाक से मैं उसके लिए कोई अलग पत्र नहीं लिख रहा हूँ।

अब मैं तुम्हारी पाण्डुलिपि को लेता हूँ। जहाँ तक सिद्धान्तों की स्थापना का सवाल है, तुम्हारे साथ सहमत होने में मुझे कोई कठिनाई नहीं है। किन्तु जब हम ठोस जमीन पर उतरते हैं, तो आमतौर पर हम उसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं जिसे मैंने किया है। कांग्रेस ने जिस विराट संस्था का रूप ग्रहण कर लिया है, उसमें कोई एक आदमी तमाशे को जारी रखने की उम्मीद नहीं रख सकता। किन्तु किसी न किसी को तो कन्धे पर बोझ उठाना ही पड़ेगा और लोग कुछ पथ दर्शन चाहते हैं। मेरे पूछने का यही कारण है। यदि तुम चुने जाते हो तो तुम जिन नीतियों और सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हो उन्हीं के लिए चुने जाओगे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बता दो कि क्या कांटों के ताज के लिए तुम अपने नाम का प्रस्ताव किये जाने की अनुमति देते हो ?

मेरा ख्याल है कि अब इन्दु कमला की हालत सुधरने का इन्तजार करेगी।

मैं कांग्रेस का विधान भेज रहा हूँ। यदि तुम इस पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सको तो मैं चाहूँगा कि तुम इस पर अपनी सुविचारित आलोचना मुझे भेज दो।

जहाँ तक कांग्रेस की वर्तमान नीति का सम्बन्ध है, यद्यपि मैं किसी तरह भी इसके ब्यौरेवार अमल के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकता किन्तु प्रधानतः उसका

यह रूप मेरा ही दिया हुआ है। वह कोई विचलन की नीति नहीं है। वह इस केन्द्रीय धारणा पर निर्मित है कि शान्तिपूर्ण कार्रवाई के लिए जन-शक्ति को कैसे संगठित किया जाए। किन्तु तुम्हारी अनुपस्थिति में हम लोग बँधे-बँधे चल रहे थे। अब जब तुम मुक्त हो तब तुम्हें रास्ता दिखाना है और अपने साथ ऐसे साथियों को लेना है जो पूरे दिल से तुम्हारे साथ चल सकें। जहाँ तक मैं जानता हूँ, वे तुम्हारे रास्ते में रुकावट नहीं डालेंगे—वहाँ भी नहीं, जहाँ वे तुम्हारा अनुगमन करने में असमर्थ होंगे। जब तुम वहाँ कमला की सुश्रूषा में लगे हुए हो तब इस प्रकार की और बातें लिखकर मैं तुम्हें थकाऊँगा नहीं।

प्रेम

बापू

3 अक्तूबर, 1935

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे पत्र घड़ी की सी नियमितता से आते हैं और एक देन जैसे लगते हैं। देखता हूँ कि कमला बड़ी बहादुरी से प्रयत्न कर रही है। इसका फल मिलेगा। प्राकृतिक चिकित्सा के लिए मेरा पक्षपात तुम्हें मालूम है। स्वयं जर्मनी में अनेक प्राकृतिक चिकित्सालय हैं। सम्भव है, कमला का मामला उस मंजिल से गुजर गया हो। परन्तु कौन जाने कब क्या होता है। मुझे ऐसे मामले मालूम हैं जो चीर-फाड़ के योग्य बताये जाते थे, किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा से अच्छे हो गये। जैसा भी है, मैं अपना अनुभव तुम्हें लिख रहा हूँ। अगले वर्ष के लिए ताज पहनने के बारे में तुम्हारा पत्र हर्षदायक था। तुम्हारी स्वीकृति पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे विश्वास है कि इससे बहुत-सी कठिनाइयाँ हल हो जाएँगी और देश के लिए यही सबसे ज्यादा सही चीज हो सकती थी।

लाहौर में तुम्हारी अध्यक्षता लखनऊ की अध्यक्षता से बिल्कुल भिन्न वस्तु थी। मेरी राय में लाहौर में हर बात में रास्ता साफ था। लखनऊ में किसी भी बात में ऐसा नहीं होगा। परन्तु मेरे ख्याल से उस परिस्थिति का सामना जितनी अच्छी तरह तुम कर सकोगे और कोई नहीं कर सकेगा। भगवान तुम्हें यह भार उठाने की पूरी शक्ति दे।

मैं तुम्हारे अध्यायों को अधिक से अधिक तेजी से पढ़ रहा हूँ। वे मेरे लिए बड़े दिलचस्प हैं। इससे अधिक अभी नहीं कहूँगा।

इस पत्र के साथ तुम सबके लिए हम सबका प्रेम।

बापू

4 अक्टूबर, 1935

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मैं तुरन्त तुमको वह पत्र नहीं भेज सकता जिसे तुम मुझसे लिखवाना चाहते हो। यदि तुम पसन्द करते हो तो इसे अग्रसर कर देना। तुम 'हरिजन' में मेरा लेख दोगे जिसमें स्पेन का भी सन्दर्भ आया है।

मुझे आशा है, इन्दु तेजी से प्रगति कर रही है और सरूप परिवर्तन का पूरा लाभ उठा रही है।

सम्मान की कीमत पर कैसी शान्ति है।

काश, विस्तार से लिखने का समय मेरे पास होता।

महादेव पीछे विश्राम के लिए ठहर गया है। मैं सीमाप्रान्त जा रहा हूँ।

तुम तीनों को प्रेम

बापू

15 अक्टूबर, 1935

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मैं तुम्हें रविवार को लिखना चाहता था किन्तु मैं इतना व्यस्त था कि वैसा कर नहीं पाया। मैं तुम्हारे उस पत्र का जवाब लिखना चाहता था जिसके साथ तुमने अगाथा को लिखे अपने पत्र की प्रतिलिपि नत्थी की थी। तुमने अगाथा को जो कुछ लिखा उससे मुझे तुम्हारी मनःक्रिया की एक आन्तरिक झांकी मिली। मैं उसके लिए किसी तरह बुरा नहीं मानता। वह पूरी तरह इस स्पष्टता के योग्य थी। मैं तुम्हारी अधिकांश भावनाओं का अनुमोदन कर सकता हूँ। तुम नहीं जानते कि मैं उसे एक से अधिक बार इसी लय में, यद्यपि अपने ढंग पर और अपनी भाषा में, लिख चुका हूँ। फिर भी अगर कमला में निश्चित सुधार के लक्षण प्रकट होते हैं और तुम लन्दन जाने को मुक्त हो जाते हो और रास्ता खुल जाता है, तो मैं पसन्द करूँगा कि तुम वहाँ बड़ों-बड़ों से मिलो और अपना हृदय उसके सामने भी खोल दो, जैसा कि तुमने अगाथा के प्रति किया है।

किन्तु कल तुम्हारा जो पत्र मिला है उससे मालूम पड़ता है कि अभी तुम कमला की शय्या के पास से हट नहीं सकते। आखिर तुम उसी अभिप्राय के लिए तो छोड़े ही गये हो और यदि प्रभु तुम्हें कमला की शय्या के साथ बाँध रखना चाहते हैं, तो हमें कुढ़ना नहीं चाहिए। तुम वहाँ इसीलिए गये हो कि उसे भयानक कष्ट से बाहर निकलते देखो। मैं कितना चाहता हूँ कि मैं तुम्हारा बोझ

बँटाने और कमला को प्रसन्न करेन के लिए वहाँ होता। रवाना होने के पहले मैंने दो दिनों तक उसे बम्बई में देखा था। मैंने देखा कि उसके मन में ऐसी शान्ति थी जैसी कि पहले मैंने कभी नहीं देखी थी। उसने कहा कि ईश्वर की दया में उसका विश्वास कभी इतना ज्योतिर्मय नहीं था जैसा कि उस समय था। उसकी मानसिक अशान्ति लुप्त हो चुकी थी और उसे यह परवाह नहीं थी कि उसका क्या होता है। वह यूरोप इसलिए गई कि तुम सब वैसा चाहते थे और वैसा करना उसे अपना स्पष्ट कर्त्तव्य प्रतीत हुआ। यदि वह जीवित रहती है तो अभी तक जो सेवा उसने की है उससे कहीं बड़ी सेना के लिए जियेगी, यदि वह मरती है तो इसलिए मरेगी कि आज जो देह उसके पास है उससे अधिक समर्थ देह लेकर पुनः पृथ्वी पर आए।

यह भी अच्छा ही है कि इन्दु का साहित्यिक अध्ययन कुछ समय के लिए स्थगित हो गया है, क्योंकि वह इस समय जो प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है वह उससे कहीं ज्यादा मूल्यवान है जो वह किसी कालेज में प्राप्त करती। वह अपना प्रशिक्षण प्रकृति के विश्वविद्यालय में पा रही है। अपना साहित्यिक अध्ययन पूरा करके वह उसका अन्तिम शृंगार कर सकेगी।

मैं बड़ी दिलचस्पी के साथ तुम्हारा ग्रन्थ पढ़ रहा हूँ। मैं एक ही बैठक में उसे पूरा पढ़ना चाहता हूँ, जैसा कि महादेव ने किया था, या जैसा कि खुर्शेद करीब-करीब कर चुकी है। किन्तु मेरी किस्मत वैसी अच्छी नहीं है। अन्तिम अध्याय पढ़ने तक मैं अपनी सम्मति सुरक्षित रखता हूँ। मैं धन्यवाद करता हूँ कि तुमने उन्हें मेरे पास भेजा।

मैं तुमसे राजनीति के विषय में बात नहीं करूँगा। मेरे मतलब के लिए इतना ही बस है कि यदि बोझ तुम पर आ पड़ेगा, तो तुम उसे उठाओगे। वह तुम पर पड़ेगा, इस निष्कर्ष पर मैं पहले से ही पहुँच चुका हूँ।

अगर तुम ठीक समझो तो साथ की पंक्तियाँ कमला को पढ़कर सुना देना। जब तुम वहाँ नहीं थे, तब इन्दु चन्द लाइनें मुझे लिखा करती थी। अब शायद वह समझती है कि उस श्रम से उसे मुक्ति मिल गई है।

प्रेम

बापू

17 अक्टूबर, 1935

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा अत्यन्त महत्वपूर्ण पत्र मिला। स्वराज भवन के बारे में मैंने राजेन्द्र

बाबू को तार दिया है। मुझे नहीं मालूम कि क्या हो रहा है। मैं बिल्कुल तुम्हारे इस मत का हूँ कि कमेटी की नीति की स्पष्ट व्याख्या होनी चाहिए।

जहाँ तक वर्तमान विश्व परिस्थिति के विषय में हमारे रूख का सवाल है, मैं यह नहीं समझता कि उसकी समझ का अभाव है। किन्तु यह हमारी बेबसी है जिसके कारण हमें चुप रहना पड़ता है। कोई दुर्बलता भी नहीं है। अगर तुम कहना चाहो, तो इसे अपने सर्वोत्तम अर्थ में व्यूह-कौशल कह सकते हो। कुछ भी हो, मैं अपने अन्दर किसी प्रकार की दुर्बलता की भावना नहीं पाता। किन्तु मैं जानता हूँ कि इस समय मैं प्रभावपूर्वक कुछ कह नहीं सकता। यह जाने बिना कि लोग क्या कर सकते हैं, मैं नेतृत्व नहीं प्रदान कर सकता। मैं यह जानता हूँ कि उन्हें क्या करना चाहिए और जो कुछ मेरे बारे में सत्य है वही शायद हमारे कार्यकर्त्ताओं में से अधिकांश के बारे में भी सत्य है। किन्तु इन सब मामलों में मुझे तुम्हारे अन्दर बड़ा विश्वास है। निश्चय ही तुमको स्थिति पर उससे कहीं ज्यादा अधिकार प्राप्त है जितना हममें से किसी को है–बिलाशक जितना मैं कभी पाने की आशा कर सकता हूँ। इस बात को मानते हुए कि वर्तमान समय में सीधी कार्रवाई की कोई गुँजाइश नहीं है, वाणी और कार्य में राष्ट्रीय आत्माभिमान व्यक्ति का कोई सम्मानपूर्ण सूत्र निकालने में तुम समर्थ हो सकते हो।

कमला विषयक तुम्हारा अनुच्छेद कुछ चिन्ताजनक है। किन्तु इस प्रकार के ऊँच-नीच के लिए हम तैयार हैं।

कुछ कहने के पहले विधान पर मैं तुम्हारे और विचार जानने की प्रतीक्षा करूँगा। मुझे खुशी है कि विधान को जितनी जल्द सम्भव था तुम तक पहुँचाने के लिए मैंने पैसे खर्च किये। तुम सबको प्यार।

बापू

3 फरवरी, 1936

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

काश, मैं तुम्हारे साथ अजन्ता गया होता।

तुम्हारा पत्र प्राप्त होने के पहले ही मैं जोरदार ढंग पर खां साहब से कह चुका था और उनसे मेहर ताज को वकील के स्कूल में भेजने का अनुरोध किया था। किन्तु वह अडिग थे। वह नहीं चाहते थे कि वह किसी मिश्रित स्कूल में जाए। मैंने मेहर जात से भी बात की। निस्सन्देह वह बेचैन है। किन्तु खां साहब कठोर हैं और उनका विश्वास है मेहरताज अपनी सामान्य उत्फुल्लता पुनः प्राप्त

कर लेगी।

मैं आशा करता हूँ कि तुम अपनी हिफाजत रखोगे और अपने को थका नहीं दोगे।

स्मारक के विषय में मैंने सरूप से संक्षिप्त वार्ता की थी। मैं इस विषय में निश्चिन्त हूँ कि और कुछ करने के पहले कम से कम जमीन प्राप्त कर लेनी चाहिए। जिस प्लाट के बारे में तुमने मुझे बताया था उस पर या आनन्द भवन के पास किसी दूसरे प्लाट पर अड़े रहने की जरूरत नहीं है।

प्रेम

बापू

9 मार्च, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

तो तुम कमला को सदा के लिए यूरोप में छोड़कर लौट आये ! फिर भी उसकी आत्मा कभी भारत से बाहर नहीं थी और हममें से अनेक की भाँति सदा तुम्हारा रत्न-भण्डार बनकर रहेगी। मैं उस अन्तिम वार्तालाप को कभी नहीं भूलूँगा, जिसने हमारी चार आँखों को गीला कर दिया था।

यहाँ भारी जिम्मेदारी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। वह तुम पर डाली गई है, क्योंकि तुम उसे उठाने की क्षमता रखते हो। तुम्हारे पास आने का मेरा साहस नहीं होता। मेरे शरीर में मूल लचक वापिस आ गई होती तो साहस करता। मुझमें कोई तीसरी खराबी नहीं है। शरीर का वजन तो बढ़ा ही है। परन्तु तीन ही महीने पहले जो जीवन शक्ति इसमें थी वह जाती रही। आश्चर्य की बात यह है कि मुझे कभी बीमारी महसूस नहीं हुई। फिर भी शरीर कमजोर हो गया था और यन्त्र ऊँचा रक्तचाप बतलाता था। मुझे सावधान रहना पड़ेगा।

मैं आराम लेने के लिए कुछ दिन दिल्ली में हूँ। अगर तुम्हारी मूल योजना कार्यान्वित हो जाती तो मैं अपनी मुलाकात के लिए वर्धा में रह जाता। तुम्हारे लिए वहाँ अधिक शान्ति होती। किन्तु तुम्हारे लिए एक सी ही बात हो तो हम दिल्ली में मिल सकते हैं। यहाँ मैं कम से कम इस महीने की 23 तारीख तक रहूँगा। किन्तु यदि तुम्हें वर्धा ज्यादा पसन्द हो तो मैं वहाँ इससे पहले लौट सकता हूँ। यदि तुम दिल्ली आओ तो किंग्सवे में नये बनाये गये हरिजन निवास में मेरे साथ ठहर सकते हो। यह काफी अच्छी जगह है। जब बता सको मुझे बता देना कि हमारे मिलने की कौन-सी तारीख रहेगी। राजेन्द्र बाबू और जमनालालजी

तुम्हारे साथ हैं, या होंगे। वल्लभ भाई भी होते, परन्तु हम सबने सोचा कि वह दूर रहें तो ज्यादा अच्छा होगा। दूसरे दोनों वहाँ राजनीतिक चर्चा के लिए नहीं, मातमपूर्सी के लिए गये हैं। राजनीतिक चर्चा तब होगी जब हम सब मिलेंगे और तुम घरेलू कामकाज निपटा लेंगे।

आशा है, इन्दु ने कमला के निधन का और तुम्हारे तुरन्त के वियोग का दुःख भली प्रकार सहन कर लिया होगा। उसका पता क्या है ?

तुम सब प्रकार सकुशल होगे।

सप्रेम,

बापू

21 अप्रैल, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

टिप्पणियाँ अच्छी लिखी गई हैं। तुम्हारे उत्तर काफी पूर्ण हैं और सीधे तो हैं ही।

आगामी बैठक के बारे में चिन्तित क्यों होते हो ? यदि चर्चा हुई तो वह एक दूसरे को अपने विचारों के ठीक होने का विश्वास कराने को ही तो होगी। जब तुम समझो कि किसी प्रस्ताव पर पूरी तरह बहस हो चुकी तब चर्चा बन्द कर देना। आखिर तो तुम्हें एकता के साथ काम करना चाहिए और मुझे ऐसा होने की बड़ी आशा है।

मैं 23 तारीख की शाम को नागपुर पहुँच रहा हूँ।

मैं चाहता हूँ कि रनजीत अपनी देखरेख स्वयं कर ले। मुझे खुशी है कि वह (पटेल) खाली चले गये। आशा है, सरूप तुम्हारे साथ रहेगी।

सरदार अभी तक बीमार हैं और अभी तो सिर्फ छाछ पर हैं। 8 मई के बाद मैं उन्हें नन्दी पर्वत पर ले जा रहा हूँ। काश, तुम भी आ सकते।

सस्नेह

बापू

3 मई, 1936

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मेरा दाहिना हाथ आराम चाहता है। तुम शायद संलग्न (पत्र) पढ़ना पसन्द

करोगे। इसे लौटाने की जरूरत नहीं है।

कमला स्मारक की मर्यादा विषयक अपने नये सुझाव के बारे में खुर्शेद ने मुझे लिखा है। यदि वह अस्पताल का विकल्प है तो मेरी राय में अविचारणीय है और वह तीन लाख में हो भी नहीं सकता।

प्रेम

बापू

12 मई, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

अगाथा के नाम मेरा उत्तर मैंने तुम्हारे पास इस कारण भेजा कि मैं जान लूँ कि मैंने तुम्हारा रवैया ठीक-ठीक बयान किया है या नहीं।

किन्तु मुझे खुशी है कि तुम मुझी से निपट रहे हो। मैं किसी ऐसी प्रणाली का समर्थन करने का, जिसमें सतत और विनाशकारी वर्ग-युद्ध निहित है या ऐसी प्रणालियों को पसन्द करने का, जिसका वास्तविक आधार हिंसा पर है या कुछ लोगों के छोटे-मोटे अपराधों के लिए आलोचना और निन्दा करने का और जो दूसरे लोग कहीं अधिक महत्वपूर्ण दुर्बलताओं के अपराधी हैं, उनकी प्रशंसा करने का दोषी नहीं हूँ।

सम्भव है, अनजाने मुझसे तुम्हारे बताये हुए अपराध होते हों। ऐसा है तो तुमको मुझे ठोस उदाहरण देने चाहिए। मैं पहले ही स्वीकार कर चुका हूँ कि तुम्हारा काम करने का जो तरीका मुझे दिखाई देता है उससे मेरा ढंग भिन्न है। किन्तु वर्तमान प्रणाली सम्बन्धी दृष्टिकोण में कुछ भी अन्तर नहीं है।

डा० अंसारी की मृत्यु एक कठोर चोट है। मेरे लिए उनकी मित्रता राजनीतिक मैत्री से कहीं अधिक थी।

आशा है, तुम थोड़ी-सी ठण्डी हवा खाने के लिए खाली जा रहे हो या मेरे पास आ रहे हो।

सरूप से कह देना कि उसके दो पत्र मिले हैं। सर तेजबहादुर को मैं लिखूँगा।

सस्नेह,

बापू

21 मई, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

'हिन्दू' की दो कतरनें भेज रहा हूँ। मैंने यही माना है कि संवाददाता ने तुम्हारे विचार ठीक-ठीक से व्यक्त किये हैं। किन्तु दोनों विषयों पर तुम सही विवरण भेज सको तो मैं देखूँना चाहूँगा। स्त्रियों को न रखने का काम पूरी तरह तुम्हारा अपना ही था। सचमुच किसी और ने सोचा तक नहीं था कि मन्त्रिमण्डल में किसी स्त्री को न रखना सम्भव भी है। खादी के बारे में मैंने तुम्हारा कथन सही समझा है कि देश की वर्तमान अर्थ-व्यवस्था में वह अपरिहार्य है और जब राष्ट्र अपने स्वरूप में आएगा तब मिल के कपड़े का स्थान हाथ के बने कपड़े को देना पड़ सकता है।

सस्नेह

बापू

29 मई, 1936

प्रेय जवाहरलाल,

तुम्हारा 25 तारीख का पत्र मिला। भगवान तुम्हें आवश्यक शक्ति दें। खाली में एक सप्ताह रहना भी नियामत होगा।

मेरा इरादा खादी पर तुम्हारे बयान का सार्वजनिक उपयोग करने का है। मुझसे बहुत लोग पूछताछ कर रहे हैं। हमारे जो लोग खादी में विश्वास करते हैं, उनमें तोड़-मरोड़ कर भेजे गये सार से घबराहट फैल गई है। तुम्हारे बयान से स्थिति में कुछ सुधार होगा।

कार्य-समिति में किसी स्त्री के न लेने के बार में तुम्हारे स्पष्टीकरण से मेरा समाधान नहीं होता। यदि समिति में किसी स्त्री को रखने की तुमने जरा भी इच्छा प्रकट की होती तो बड़ों में से किसी को छोड़ देने के बारे में कुछ भी कठिनाई न होती। दबाव कहें तो केवल भूलाभाई के लिए था और जब उनका नाम पहली बार लिया गया तब तुम्हें कोई आपत्ति नहीं थी। और किसी सदस्य के लिए कोई दबाव नहीं था। फिर किसी समाजवादी का नाम छोड़कर किसी स्त्री को चुन लेने का अधिकार तो तुम्हारे हाथ में अबाधित ही था। परन्तु जहाँ तक मुझे याद है, तुम्हें स्वयं सरोजिनी देवी के स्थान पर किसी को चुनने में कठिनाई थी और सरोजिनी देवी को तुम रखना नहीं चाहते थे; तुमने तो यहाँ तक कहा था कि कार्य-समिति में सदा किसी न किसी स्त्री को और मुसलमानों को एक

निश्चित संख्या में रखने की परम्परा में तुम्हारा विश्वास नहीं है। इसलिए जहाँ तक किसी स्त्री को न लाने का सम्बन्ध है, मेरे विचार से, यह तुम्हारा अबाधित निर्णय था। इस परम्परा को तोड़ने की इच्छा या साहस और कोई सदस्य न करता। मैं तुम्हें यह भी बता दूँ कि कुछ कांग्रेसी हल्कों में सारा दोष मुझ पर थोपा जा रहा है, क्योंकि यह कहा जाता है कि मैंने सरोजिनी नायडू को नहीं रखने दिया और यह आग्रह किया कि कोई स्त्री न रखी जाए। यह बात, जैसा मैंने तुमसे कहा, ऐसी है जिसका मैं साहस भी नहीं कर सकता। किसी भी स्त्री की बात तो क्या, मैं श्रीमती नायडू को भी अलग नहीं कर सकता।

दूसरे सदस्यों के विषय में भी मेरा यह ख्याल रहा है कि तुमने उन्हें इसीलिए चुना कि कार्य की दृष्टि से ऐसा करना ठीक था। "बेहया" या "हयादार" का कोई सवाल नहीं था, जब सभी अपने-अपने अन्तःकरण के अनुसार सेवा की उच्च भावनाओं से प्रेरित होकर काम कर रहे थे। मैं बता दूँ कि तुम्हारे बयान से, जिसका समर्थन तुम्हारे पत्र से भी होता है, राजेन्द्रबाबू, राजा जी और वल्लभ भाई को बड़ा दुःख हुआ। उनका ख्याल है और मैं उनसे सहमत हूँ कि उन्होंने तुम्हारे साथी के रूप में सम्मान और पूर्ण निष्ठापूर्वक तुम्हारे साथ चलने की कोशिश की। तुम्हारे बयान से ऐसा प्रकट होता है कि तुम पीड़ित पक्ष हो। मैं चाहता हूँ कि तुम इस दृष्टिकोण को समझ लो और किसी भी तरह सम्भव हो तो इस समाचार में सुधार कर लो।

तीसरी बात के बारे में मैं उत्सुक हूँ कि सफाई हो जाए। मैं अनुमान नहीं कर सकता कि तुम क्या कहते हो, परन्तु उसे हमारे मिलने तक रहने दिया जाए। तुम जिस दबाव को सहन कर रहे हो, मैं उसे बढ़ाना नहीं चाहता।

डा० अन्सारी स्मारक के विषय में मैंने आसफ अली को अपनी स्पष्ट राय दे दी है कि पिताजी की तरह डाक्टर के स्माकर को भी राजनीतिक दृष्टि से अच्छे दिनों की प्रतीक्षा करनी चाहिए। तुम्हारा कुछ और ख्याल है ?

कमला स्मारक धीरे-धीरे प्रगति कर रहा है। राजकुमारी का पत्र साथ में है। इसमें इन्दु का उल्लेख है।

सस्नेह,
बापू

19 जून, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

मैं तुम्हारी जानकारी के लिए साथ का पत्र भेजने वाला था कि कल तुम्हारा

पत्र मिला।

मुझे खुशी है कि रनजीत पहले से अच्छे हैं। उन्हें स्वयं अपनी देख-रेख रखनी चाहिए।

मैं नहीं चाहता कि तुम अपनी कार्यसमिति में किसी स्त्री को न रखने के बारे में कोई विशेष वक्तव्य निकालो। मेरे ख्याल से स्त्री को न रखने की बात का वही महत्त्व नहीं है, जो दूसरों को रखने या न रखने का है। हममें से किसी को भी कार्यसमिति में से स्त्री मात्र को अलग रखने का न साहस था और न इच्छा। यदि तुम्हारे रवैये का यह ठीक-ठीक अर्थ है तो अवसर उपस्थित होने पर इसका स्पष्टीकरण हो जाना चाहिए।

दूसरों के बारे में मुझे अफसोस है कि तुम अभी तक जो हुआ, उस पर खिन्न हो। ध्येय के हित में भूलाभाईवाली गोली तुमने निगल ली और पहली चर्चा में, तुम्हारे जिक्र करने के पहले, मैंने निश्चित रूप से कह दिया था कि कार्यसमिति में समाजवादी होने ही चाहिए। मैंने नामों का जिक्र किया था। किन्तु मैं जिस बात पर जोर देना चाहता हूँ, वह यह नहीं है कि किसने किसका नाम लिया बल्कि मेरा जोर इस बात पर है कि सब समान ध्येय की सेवा से प्रेरित होकर ही काम कर रहे हैं।

जहाँ तक मुझे याद है, तुम्हारा भेजा हुआ बयान वह नहीं है, जो मैंने देखा था। तुम्हारी भेजी हुई चीज तो शायद मैं पहली ही बार देख रहा हूँ। डा० हार्डीकर से पूछ लो कि उन्होंने कोई और बयान जारी किया था क्या ? तुमने जो मेरे पास भेजा है वह भी उससे भिन्न है जो डाक्टर मुझे बताया करते थे। उनके विचार मेरी राय में दोषपूर्ण तो हैं किन्तु उनके प्रकट करने पर मुझे कोई ऐतराज नहीं है। मेरी शिकायत यह है कि उन्होंने मुझसे एक बात कही और प्रकाशित दूसरी बात कराई। तुम यह पत्र डा० हार्डीकर को बता सकते हो।

आशा है, तुम अच्छे होगे। तुम्हारे पंजाब के तूफानी दौरे का हाल मैं चिन्तित होकर पढ़ता रहा।

सस्नेह
बापू

8 जुलाई, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। वर्धा की घटनाओं को तुम्हें लिख सकने के लिए मैं

समय ढूँढ़ रहा था। तुम्हारे पत्र ने इसे कठिन बना दिया। परन्तु मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि हट जाने के पत्र का वह अर्थ नहीं है जो तुमने इसे लेते समय लगाया। वह मेरे देख लने के बाद तुम्हें भेजा गया था। त्यागपत्र के स्थान पर इस तरह का पत्र भेजन का सुझाव मेरा था। मैं चाहता हूँ कि तुम इस पत्र के विषय में अधिक न्यायपूर्ण विचार करोगे। हर हालत में मेरा यह दृढ़ मत है कि वर्ष के शेष समय में सारी खींचतान बन्द रहे और कोई त्यागपत्र न दिये जाएं। संकट का सामना करने में महासमिति का सब काम ठप्प हो जाएगा और वह सामना कर भी नहीं सकेगी। वह दो भावनाओं के बीच छिन्न-भिन्न हो जाएगी। लोकतन्त्र के नाम पर उस पर एक ऐसा संकट अचानक लाद देना अत्यन्त अन्यायपूर्ण होगा, जो पहले कभी उसके सामने नहीं आया। तुम उस पत्र के गूढ़ार्थ को बढ़ा-चढ़ा कर समझ रहे हो। मैं बहस नहीं करूँगा कि स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करो और अपनी शान के सामने उदासी की घड़ी में हथियार न डाल दो। कार्यसमिति की बैठकों में अपने विनोद को खुलकर क्यों न खेलने दो ? जिन लोगों के साथ तुमने वर्षों तक बेखटके काम किया है, उनका साथ निभाना तुम्हारे लिए इतना कठिन क्यों होना चाहिए। यदि वे असहिष्णुता के अपराधी हैं तो उनमें तुम्हारा हिस्सा अधिक है। तुम्हारी पारस्परिक असहिष्णुता के कारण देश की हानि नहीं होनी चाहिए।

आशा है, तुमने जर्मन डाक्टर की बहुत विवेकपूर्ण सलाह मान ली है।

सस्नेह,
बापू

15 जुलाई, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

1. आशा है तुमको 'टाइम्स आव इण्डिया' के पत्र के बारे में मेरा तार मिला होगा। मैंने कल प्राप्त करके उसे पढ़ा। इसके विषय में मुझे कभी किसी ने नहीं लिखा। पत्र को पढ़कर मेरी राय पक्की हुई कि तुम्हें इस पर मान-हानि की कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए।

2. यदि तुम मुझे गलत न समझो तो मैं चाहूँगा कि तुम मुझे नागरिक स्वातन्त्र्य संघ से मुक्त रखो। फिलहाल मैं किसी राजनीतिक संस्था में शामिल होना पसन्द नहीं करता और किसी पक्के सत्याग्रही के उसमें शरीक होने का कोई अर्थ भी नहीं। परन्तु इस संघ में मेरे सम्मिलित होने न होने के परिपक्व

विचार के बाद मेरी यह राय पक्की हुई कि सरोजिनी को या यों कहो कि किसी भी सत्याग्रही को अध्यक्ष बनाने में भूल होगी। मेरा अब यह मत है कि अध्यक्ष कोई प्रसिद्ध वैधानिक कानूनी वकील होना चाहिए। यदि यह बात तुम्हें न जंचती हो तो तुम्हें एक टिप्पणी-लेखक को, जो कानून भंग करने वाला न हो, रखना चाहिए। मैं यह भी कहूँगा कि सदस्यों की संख्या सीमित रखो। तुम्हें संख्या के बजाय गुणों की आवश्यकता है।

३. तुम्हारा पत्र मर्मस्पर्शी है। तुम ऐसा अनुभव करते हो कि तुम सबसे अधिक पीड़ित पक्ष हो। किन्तु हकीकत यह है कि तुम्हारे साथियों में तुम्हारे समान साहस और स्पष्टतवादिता नहीं है। परिणाम विनाशकारी हुआ है। मैंने सदा उन्हें समझाया है कि वे तुमसे साफ-साफ ओर निडर होकर बात कर लें। परन्तु साहस न होने के कारण जब कभी वे बोले, भद्दी तरह से बोले और तुम्हें उत्तेजना हुई। मैं तुम्हें बताता हूँ कि वे तुमसे डरते रहे, क्योंकि तुम्हें उनसे चिड़चिड़ाहट और अधीरता हो जाती है। वे तुम्हारी झिड़कियों और तुम्हारे हाकिमाना ढंग पर कुढ़ते रहे और सबसे अधिक इस बात से कि उनके ख्याल से तुम अपने-आपको अचूक और ज्ञानवाला समझते हो। वे महसूस करते हैं कि तुम उनके साथ शिष्टता से पेश नहीं आये और समाजवादियों के उपहास और गलत अर्थ लगाने में तुमने उनकी कभी रक्षा नहीं की।

तुम्हें शिकायत है कि उन्होंने तुम्हारी प्रवृत्तियों को हानिकारक बताया। इसका यह अर्थ नहीं था कि तुम हानिकारक हो। उनके पत्र में तुम्हारे गुणों या तुम्हारी सेवाओं की प्रशंसा करने को कोई अवसर नहीं था। वे पूरी तरह जानते हैं कि तुममें जीवट है और आम जनता तथा देश के युवकों पर तुम्हारा काबू है। वे जानते हैं कि तुम्हें छोड़ा नहीं जा सकता और इसलिए वे झुक जाना चाहते हैं।

मुझे यह सारा मामला दुःखद लगता है। साथ ही हास्यजनक भी। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम सारी बात विनोदवृत्ति के साथ देखो। मुझे इस बात की चिन्ता नहीं कि तुम ए० आई० सी० को अपने विश्वास में लो, परन्तु मैं नहीं चाहता कि उस पर तुम्हारे घरेलू झगड़े ठीक करने का या तुममें और उनमें चुनाव करने का असह्य भार डाला जाए। तुम कुछ भी करो, उनके सामने बनी-बनाई सी बातें रखनी चाहिए।

तुम इस बात पर रोष क्यों करते हो कि तमाम समितियों में उनका बहुमत प्रकट हो। क्या यह अत्यन्त स्वाभाविक चीज नहीं है ? तुम उनके सर्वसम्मत चुनाव से पदारूढ़ हो, किन्तु अभी तक सत्ता तुम्हारे पास नहीं है। तुम्हें पदारूढ़ करना तुम्हें शीघ्र सत्तारूढ़ करने का प्रयत्न था और किसी तरह ऐसा न होता। जो

हो, मेरे दिमाग में यही बात थी, जब मैंने काँटों के ताज के लिए तुम्हारा नाम सुझाया था। सिर पर घाव हो जाए तो भी इस पहने रहो। समिति की बैठकों में फिर से अपनी विनोद प्रियता दिखाओ। तुम्हारा यही अत्यन्त सामान्य स्वरूप होना चाहिए। न कि एक चिन्तामग्न क्षुब्ध व्यक्ति का, जो जरा-जरा सी बात पर उबल पड़ने को तैयार हो।

काश तुम मुझे तार से खबर दो कि मेरा पत्र पढ़ लेने के बाद तुम्हें उतनी ही प्रफुल्लता अनुभव हुई जितनी लाहौर में नववर्ष के दिन हुई थी, जब तुम तिरंगे झण्डे के चारों ओर नाचते बताये गये थे ! अपने गले को भी तुम्हें अवसर देना ही चाहिए।

मैं अपना बयान फिर से देख रहा हूँ। मैंने निश्चय किया है कि जब तक तुम इस देख न लो, मैं इसे प्रकाशित न करूँ।

मैंने यह भी निर्णय किया है कि हमारे पत्र-व्यवहार को महादेव के सिवा कोई और न देखे।

सस्नेह

बापू

30 जुलाई, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

मैं कितना चाहता हूँ कि तुम 'पागलपन' के कामों को बन्द कर दो और आम भलाई के लिए अपनी शक्ति को बचाओ।

अगर तुम अपना विनोद कभी न छोड़ो और अपना पूरा कार्यकाल पूरा करो तथा अपनी नीति वर्तमान साथियों के द्वारा ही अधिक से अधिक चलाने का प्रयत्न करो तो सब ठीक हो जाएगा। समय आ पहुँचा है कि भविष्य का अर्थात् अगले वर्ष की योजनाओं का विचार किया जाए। कुछ भी हो, तुम्हें विरोध में नहीं होना चाहिए। यह मेरी पक्की राय है। जब पिताजी की तरह तुम महसूस करो कि तुम कांग्रेस को अकेले ही संभालने को तैयार हो तब मेरे ख्याल से वर्तमान साथियों की ओर से कोई विरोध नहीं पाओगे। आशा है, बम्बई में तुम्हारा मार्ग साफ रहेगा।

कमला-स्मारक से मुझे बेचैनी हो रही है। मुझे मालूम नहीं कि चन्दे या योजना के विषय में क्या हो रहा है। अगर खुरशेद या सरूप या दोनों इस चीज पर पूरा ध्यान लगा रही हैं तो अच्छा है। सरूप से कहना है कि मैं आशा रखता

हूँ कि इस सम्बन्ध में वह जो कुछ करेगी उससे मुझे परिचित रखेगी।

मैं जहाँ समाजवाद के प्रश्न की चर्चा नहीं करूँगा। ज्योंही मैं अपनी टिप्पणी को दुबारा देख लेना समाप्त कर दूँगा, उसका मस्विदा तुम्हारे पास पहुँच जाएगा और अखबारों को बाद में भेजा जाएगा। मेरी कठिनाई सुदूर भविष्य के विषय में नहीं है। मैं तो सदा वर्तमान पर ही पूरा ध्यान लगा सकता हूँ और उसी की मुझे कभी-कभी चिन्ता होती है। यदि वर्तमान को संभाल लिया जाए तो भविष्य अपने-आप संभल जाएगा। किन्तु मुझे आगे की बात नहीं सोचनी चाहिए।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य सचमुच अच्छा रह रहा होगा।

सस्नेह,
बापू

28 अगस्त, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

कल की हमारी बातचीत ने मुझे विचार में डाल दिया है। क्या कारण है कि पूरी इच्छा होते हुए भी मैं उस चीज को नहीं समझ सकता, जो तुम्हारे लिए इतनी स्पष्ट है ? जहाँ तक मैं जानता हूँ, मुझे बौद्धिक ह्रास का मर्ज नहीं लगा है। तो फिर तुम्हें कम से कम यह समझाने के लिए तुम क्या चाहते क्या हो पूरा दिल क्यों न लगा देना चाहिए ? सम्भव है, मैं तुमसे सहमत न होऊँ किन्तु मेरी स्थिति तो ऐसा कहने की होनी चाहिए। कल की बातचीत से इस पर प्रकाश नहीं पड़ता कि तुम्हारे जी में क्या है ? और शायद जो बात मेरे लिए सही है वही और भी कुछ लोगों के लिए हो। मैं इस समय इसकी चर्चा राजा से कर रहा हूँ। तुम भी समय निकाल सको तो मैं चाहूँगा कि अपने कार्यक्रम की चर्चा उनसे कर लो। मेरे पास समय नहीं है, इसलिए विस्तार से नहीं लिखूँगा। तुम जानते हो, मेरा क्या मतलब है।

सस्नेह
बापू

28 दिसम्बर, 1936

प्रिय जवाहरलाल,

जैसी मुझे आशा है, तुम आज खत्म कर लो तो शायद मुझे कल दोपहर के

बाद चले जाने दोगे।

यदि भविष्य में कांग्रेस अधिवेशन गाँवों में करने के विषय में मेरा सुझाव तुम्हें पसन्द आ गया हो तो मैं चाहूँगा कि तुम कांग्रेस से फरवरी और मार्च के बीच में अधिवेशन करने के पुराने नियम को फिर से चालू कर देने के लिए कहो। सम्भव हो तो हजारों को जाड़े के मौसम के कष्टों से बचाना चाहिए। संसदीय लोगों को इस व्यवस्था के अनुकूल बन जाना चाहिए। यदि विधान मण्डलों में कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हो जाए तो कोई कारण नहीं कि बड़े दिन, ईस्टर आदि की तरह उन्हें छुट्टी क्यों नहीं रखनी चाहिए। मैंने सरूप से कहा है कि कमला स्मारक के लिए कहीं न कहीं जल्दी जमीन जुटा लेनी चाहिए और फिर उसके लिए घर-घर चन्दा इकट्ठा करने का काम शुरू कर देना चाहिए।

सस्नेह

बापू

5 अप्रैल, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हें बीमार क्यों होना चाहिए ? बीमार हो जाने पर तुम आराम क्यों नहीं करते ? मैंने सोचा था कि इन्दु के आने के बाद तुम चुपके से कहीं चले जाओगे। जब वह आ जाए तो उसे मेरा प्यार पहुँचा देना। इस पत्र के साथ उसे भी दो शब्द लिख रहा हूँ।

अब तुम्हारे रूठने की बात। किसी भी तरह सही, मैं जो भी कहता या शायद करता भी हूँ, वही तुम्हें खटकता है। चुप रहना असम्भ्व था। मेरा ख्याल था कि सन्दर्भ में शिष्टता और अशिष्टता शब्द बिल्कुल ठीक आ गए। बयान के बारे में कांग्रेस की ओर से शिकायत का पहला स्वर तुम्हारा निकला है। यदि सभी को शिकायत थी तो मैं क्या कर सकता था ? मुझे खुशी है कि तुमने लिख दिया। जब तक मेरी समझ साफ न हो जाए या तुम्हारे डर दूर हो न जाए तब तक तुम्हें मुझे बर्दाश्त करना होगा। मुझे अपने बयान से कोई हानि होने का अन्देशा नहीं है। क्या तुम्हारे दिमाग में कोई ऐसी चीज है जिसे मैं नहीं समझता?

कमला देवी ने वर्धा से मद्रास तक हमारे साथ सफर किया। वह दिल्ली से आ रही थी। वह मेरे डिब्बे में दो बार आई और लम्बी बातें कर गई। अन्त में वह जानना चाहती थीं कि सरोजनी देवी को क्यों नहीं शामिल किया गया लक्ष्मीपति को राजा जी अलग क्यों रख रहे हैं, अनुसूया बाई को क्यों बाहर रखा

गया ? तब मैंने उन्हें बताया कि अलग रखने के मामले में मैंने क्या भाग लिया और उस दिन मौनवार को मैंने तुम्हारे लिए जो नोट लिखा था उसका जितना भाग मुझे याद था, लगभग सारा उन्हें कह सुनाया। अवश्य ही मैंने उन्हें बताया कि शुरू में सरोजनी को न लेने और बाद में ले लेने में मेरा कोई हाथ नहीं था। मैंने उनसे यह भी कहा कि जहाँ तक मुझे मालूम है, लक्ष्मीपति को न लेने से राजा जी का कोई वास्ता नहीं था। मैंने सोचा तुम्हें यह सब मालूम होना चाहिए।

आशा है, इस पत्र के पहुँचने तक तुम फिर पूरी तरह तन्दुरुस्त हो जाओगे। माताजी के विषय में तुमने कुछ नहीं लिखा।

सस्नेह
बापू

22 जून, 1937

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मुझे अभी-अभी मिला है। यद्यपि तीन दिन बहुत थोड़े सिद्ध हो सकते हैं, फिर भी वे कुछ न होने से तो अच्छे ही रहेंगे। यह अफसोस की बात है कि इन्दु तुम्हारे साथ नहीं आ सकती। मैंने तो सोचा था कि उसने कई साल पहले टांसिल का जो आपरेशन करवाया था वह आखिरी था। मैं माने लेता हूँ कि यह भी पहले की भाँति ही सरल होगा।

तुम सबको प्रेम
बापू

25 जून, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

सीमा-नीति पर तुम्हारा वक्तव्य अभी मिला। खानसाहब ने और मैंने उसे पढ़ लिया। मुझे वह बहुत पसन्द आया। पता नहीं स्पेन वालों और अंग्रेजों की बमबारी बिल्कुल एक सी है या नहीं। क्या अंग्रेजों द्वारा की हुई हानि की मात्रा मालूम कर ली गई है ? अंग्रेजों की बमबारी का प्रकट कारण क्या बताया गया है ? इस बात पर हँसना भी मत और क्रोध भी न करना कि मैं इन चीजों को उतनी अच्छी तरह नहीं जानता जितना तुम जानते हो। अखबारों को जितना कम मैं देखता हूँ उससे मुझे बहुत कम ही जानकारी हो सकती है। किन्तु मेरे प्रश्नों

का उत्तर देने का कष्ट मत उठाना। तुम्हारे बयान पर होने वाली प्रतिक्रियाओं का मैं ध्यान रखूँगा। शायद उनसे कुछ प्रकाश पड़े और जो कमी रह जाए वह जब हम मिलेंगे तब तुम पूरी कर ही दोगे। आशा है, मौलाना आएँगे। लेकिन वह न आ सकें तो भी मैं चाहूँगा कि तुम तो उस तारीख पर अवश्य पहुँच जाओ। इन तीनों शान्त दिनों में हम साथ रहेंगे।

आशा है, इन्दु अच्छी तरह होगी।

सस्नेह
बापू

10 जुलाई, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

कल मौलाना साहब से मेरी लम्बी बातें हुई। यदि प्रान्तों में मुस्लिम मन्त्रियों का चुनाव उनकी सलाह से करना है तो मेरे विचार से इस आशय की सार्वजनिक घोषणा कर देना बेहतर होगा। मौलाना सहमत हैं। यदि तुम्हारे ख्याल में कार्य समिति से परामर्श लेना चाहिए तो मेरा सुझाव है कि तार से ले लिया जाए।

मैं आशा करता हूँ कि तुम हिन्दी उर्दू के विषय में जल्दी ही लिखोगे।

सस्नेह
बापू

15 जुलाई, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

आज चुनाव का दिन है। मैं निगाह रख रहा हूँ।

परन्तु यह पत्र मैं तुम्हें यह बताने के लिए लिख रहा हूँ कि मैंने कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों के कार्यकलाप और सम्बन्धित विषयों पर लिखना शुरू कर दिया है। मुझे हिचकिचाहट थी परन्तु मैंने देखा कि जब मेरी भावनाएँ इतनी तीव्र हो गई हैं तो लिखना मेरा कर्त्तव्य है। काश मैं तुम्हें 'हरिजन' के लिए अपने लेख की अन्तिम प्रति दे सकता ! यह महादेव देख लेंगे। यदि उनके पास नकल होगी तो भेज देंगे। तुम देख लो मुझे बताना कि मैं इस तरह लिखता रहूँ क्या ? सारी स्थिति से निपटने के तुम्हारे काम में मुझे हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि देश के लिए मैं तुम्हारा अधिक से अधिक उपयोग चाहता हूँ। यदि मेरे लिखने से तुम्हें

अशान्ति हो तो मेरे हाथों निश्चित हानि होगी।

आशा है, मौलाना सम्बन्धी मेरा पत्र तुम्हें मिला होगा।

सस्नेह
बापू

22 जुलाई, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

मौलाना साहब एक दिन वर्धा ठहर गये थे और हमारी लम्बी बातचीत हुई। उन्होंने मुझे विधान सभा के मुस्लिम लीगी और कांग्रेसी सदस्यों के समझौते का मस्विदा दिखाया। मेरे विचार से यह अच्छा दस्तावेज है। परन्तु उन्होंने मुझे बताया कि तुम्हें तो यह पसन्द है, टण्डनजी को नहीं है। मौलाना के सुझाव के अनुसार मैंने इसके विषय में टण्डनजी को लिखा है। आपत्ति क्या है ?

पाँच सौ रुपया वेतन, बड़ी-सी कोठी और मोटर पर कड़ी आलोचनाएँ हो रही हैं। मैं जितना ही सोचता हूँ उतना आरम्भ में ही इतनी फिजूलखर्ची बुरी मालूम होती है। इसके विषय में मैंने मौलाना से भी बातचीज की थी।

इन्दु कैसी है ?

सस्नेह
बापू

30 जुलाई, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

आशा है कि महादेव ने तुम्हारे हिन्दी सम्बन्धी निबन्ध की पहुँच के अतिरिक्त कल यह भी बता दिया होगा कि वाइसराय ने मुझे 4 तारीख को दिल्ली बुलाया है—किसी विशेष कारण नहीं, केवल मिलने की खातिर। मैंने उत्तर दिया कि उन्होंने मेरी इच्छा का पहले से ही अनुमान कर लिया क्योंकि खां साहब पर लगे प्रतिबन्ध और सीमाप्रान्त की अपनी यात्रा के विषय में उनसे मुलाकात मांगने की मेरी इच्छा थी ही। तदनुसार मैं 4 तारीख को दिल्ली पहुँच रहा हूँ। मुलाकात का निर्धारित समय 11-30 बजे है। इसलिए मुझे उसी दिन लौटकर 5 को सेगांव पहुँच जाने की आशा है।

परन्तु यह पत्र तो तुम्हें जाकिर के पत्र की नकल भेजन के उद्देश्य से है जो बम्बई के हाल के दंगे और हिन्दी-उर्दू के दुर्भाग्यपूर्ण विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया

व्यक्त करते हुए मैंने लिखा था। मैंने सोचा कि इस सुविचारित पत्र को मैं तुम पर भी प्रकट कर दूँ।

मैं झांसी के चुनाव को भयंकर पराजय नहीं मानता। यह एक सम्मानपूर्ण पराजय है और उससे यह आशा होती है कि यदि हम परिश्रम करते रहें तो मुसलमानों तक कांग्रेस का सन्देश कारगर ढंग पर पहुँचा सकते हैं। परन्तु मेरी यह राय अब भी कायम है कि केवल सन्देश ही पहुँचाया जाए और साथ-साथ देहात में ठोस काम न किया जाए तो अन्ततः हमारा उद्देश्य पूरा नहीं होगा। परन्तु यह सब इस पर निर्भर है कि हम शक्ति किस ढंग से पैदा करना चाहते हैं।

मेहरअली का मद्रास का भाषण मेरे लिए आँखें खोलने वाला है। पता नहीं, वह सामान्य समाजवादी विचार को कहाँ तक व्यक्त करते हैं। राजाजी ने मुझे उनके भाषणवाली एक कतरन भेजी थी। आशा है, उन्होंने तुम्हें भी एक नकल भेजी होगी। मैं इसे बुरा भाषण कहता हूँ। तुम्हें इस पर ध्यान देना चाहिए। कांग्रेस की नीति के, जैसी मैं समझता हूँ, यह विरुद्ध पड़ता है।

मद्रास में राय का भाषण भी हुआ है। मैं मान लेता हूँ कि तुम्हें ऐसी सब कतरनें मिलती होंगी। फिर भी तुरन्त तुम्हारे देखने के लिए कतरनें साथ में हैं, जो प्यारेलाल ने मेरे लिए तैयार की हैं। राय मुझे भी लिखते रहे हैं। तुम्हें उनका ताजा पत्र देखना चाहिए। मैंने फाड़ न दिया हो तो वह इस पत्र के साथ होगा। उनके रवैये पर तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया है ? जैसा मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, उन्हें समझना मेरे लिए कठिन हो रहा है।

खादी के लिए तुम्हारा दिया हुआ नाम 'आजादी की वर्दी' जब तक हिन्दुस्तान में अंग्रेजी भाषा बोली जाएगी तब तक जिन्दा रहेगा। इस मनोहर शब्द प्रयोग के पीछे जो विचार है उसका पूरी तरह हिन्दी में अनुवाद करने के लिए किसी प्रथम श्रेणी के कवि की आवश्यकता होगी। मेरे लिए वह केवल काव्य ही नहीं, परन्तु एक ऐसा महान सत्य का प्रतिपादन करता है जिसका पूरा अर्थ समझाना अभी शेष है।

सस्नेह

बापू

3 अगस्त, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

यह मैं दिल्ली ले जाने वाली गाड़ी में लिख रहा हूँ। मेरा प्राक्कथन, या जो

कुछ भी इसे कहो, साथ में है। मैं तुम्हें कोई लम्बी-चौड़ी चीज नहीं दे सका।

तुमने 'पख्तो' और पंजाबी के पहले 'शायद' रखा है। मेरा सुझाव है कि तुम यह क्रियाविशेषण हटा दो। मिसाल के लिए खानसाहब 'पख्तो' को कभी नहीं छोड़ेंगे। मेरा ख्याल है, यह किसी लिपि में लिखी जाती है, यद्यपि मैं भूल गया हूँ कि किस लिपि में और पंजाबी ? गुरुमुखी में लिखी हुई पंजाबी के लिए सिख तो मर मिटेंगे। उस लिपि में कोई शोभा नहीं है। किन्तु मुझे मालूम हुआ है कि सिन्धी की तरह वह भी सिखों को हिन्दुओं से अलग करने के लिए खासतौर पर ईजाद की गई थी। यह बात हो या न हो। फिलहाल तो सिखों को गुरुमुखी छोड़ने को राजी करना मुझे असम्भव लगता है।

तुमने चारों दक्षिण भाषाओं में से कोई सामान्य लिपि तैयार करने का सुझाव दिया है। मुझे उनके लिए चारों की मिली-जुली लिपि की तरह ही देवनागरी भी उतनी ही आसान मालूम होती है। व्यावहारिक दृष्टि से उन चारों में से मिली-जुली लिपि का आविष्कार हो नहीं सकता। इसलिए मेरा सुझाव है कि तुम केवल इतनी ही सामान्य सिफारिश करो कि जहाँ कहीं सम्भव हो, जिन प्रान्तीय भाषाओं का संस्कृत से सजीव सम्बन्ध है, वे यदि उसकी शाखाएँ नहीं है तो उन्हें संशोधित देवनागरी अपना लेनी चाहिए। तुम्हें मालूम होगा कि यह प्रचार जारी है।

बस अगर तुम मेरी तरह सोचते हो तो तुम्हें यह आशा प्रकट करने में संकोच नहीं होना चाहिए कि चूँकि किसी न किसी दिन हिन्दुओं और मुसलमानों को दिल से एक होना ही है, इसलिए जो हिन्दुस्तानी बोलते हैं उन्हें भी एक देवनागरी लिपि ही अपना लेनी चाहिए, क्योंकि वह अधिक वैज्ञानिक है और संस्कृत से निकली हुई भाषाओं की महती प्रान्तीय लिपियों के निकट है।

अगर तुम मेरे सुझाव आंशिक या पूरे स्वीकार कर लेते हो तो तुम्हें आवश्यक परिवर्तन मंजूर करते हुए स्थानों को खोज निकालने में कोई कठिनाई नहीं होगी। तुम्हारा समय बचाने की खातिर मैंने स्वयं ही ऐसा करने का इरादा किया था, परन्तु अभी मुझे अपने शरीर पर इतना भार नहीं डालना चाहिए।

मैं यह मान लेता हूँ कि तुम्हारे सुझाव के मेरे समर्थन का यह अर्थ नहीं है कि मैं हिन्दी सम्मेलन वालों से हिन्दी शब्द का प्रयोग छोड़ देने के लिए कहूँ। मुझे विश्वास है कि तुम्हारा यह मतलब नहीं हो सकता। मैं जहाँ तक सोच सकता हूँ, उस मतलब को अन्तिम सीमा तक ले गया हूँ।

यदि तुम मेरे सुझावों को स्वीकार नहीं कर सकते तो ठीक-ठीक बात बताने की खातिर 'प्राक्कथन' में यह वाक्य जोड़ देना बेहतर होगा। "बहरहाल मुझे

उनका सामान्य ढंग पर समर्थन करने में कोई संकोच नहीं है।"

आशा है, इन्दु का आपेरशन अच्छी तरह हो जाएगा।

सस्नेह

बापू

4 अगस्त, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

मैं मूर्ख हूँ। तुम्हारा पत्र मिलने पर मैंने अपनी फाइल देखी तो मेहरअली के भाषणवाली कतरन मिल गई। मैंने उनके भाषण का, न कि मसानी के भाषण का, हवाला दिया था।

यह पत्र मुझे वर्धा ले जानेवाली गाड़ी में लिखा जा रहा है। अब रात के 10-30 बज गये हैं। मैं नींद से जग उठा, भाषण का ख्याल आया और ढूँढ़ने लगा। कलवाला डिब्बा ज्यादा अच्छा था।

मैं वाइसराय से मिला। तुमने सरकारी विज्ञप्ति देखी होगी। उसमें मुलाकात का सार सही-सही दिया गया है। कुछ और प्रासंगिक बातें भी थीं, जिनका ज़िक्र कृपलानी तुमसे मिलने पर करेंगे। एक बात का उल्लेख यहाँ कर दूँ। जैसे मुझे बुलाया वैसे शायद वह तुम्हें भी बुलायें। मैंने उनसे कहा कि अगर निमन्त्रण भेजा जाएगा, तो शायद तुम इन्कार नहीं करोगे। क्या मैंने ठीक कहा।

मुझे अफसोस है कि मैंने राय के भाषण तुम पर थोपे। मैंने सोचा कि तुम उन्हें पढ़ोगे तो अवश्य ही। उन पर तुम्हारी राय जानने की जल्दी मुझे नहीं है। यदि तुम पहले ही पढ़ न चुके हो तो सुविधा से पढ़ लेना।

मैंने जान लिया कि तुम इन्दु का आपरेशन बम्बई में करा रहे हो।

सस्नेह

बापू

8 अगस्त, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

मेहरअली के भाषण सम्बन्धी तुम्हारे पत्र के एक मुद्दे पर लिखना मैं भूल गया था। मेरा मतलब ग्रीष्म-विद्यालय के कैदियों को छोड़ने के बारे में राजाजी की विज्ञप्ति से है। तुम्हारा पत्र प्राप्त होने से पहले मैं उसे पढ़ चुका था, परन्तु

उस पर मैंने बुरा नहीं माना। मेरा विचार है कि चूँकि तुमने तो ग्रीष्म-विद्यालय के छात्रों की कार्रवाई को पसन्द किया था और मैं किसी भी तरह से उसका समर्थन नहीं कर सकता था, इसलिए मेरे विचार से इस बात की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक था कि रिहाई का अर्थ इस कानून भंग का समर्थन करना नहीं है और कानून भंग तो था ही। मुझे अन्देशा है जब कांग्रेस सत्ता में होगी तब वह अक्सर वही भाषा काम में लेगी, जो उसके पहले शासन इस्तेमाल किया करते थे। फिर भी उसका हेतु दूसरा ही होगा।

आशा है कि बम्बई में आपरेशन के सिलिसिले में तुम्हारी अच्छी गुजर रही होगी। जब वह हो जाए, तो तार देना।

सस्नेह,
बापू

1 अक्तूबर, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, पट्टाभि भी अच्छा चुनाव है। परन्तु मेरे ख्याल से, समिति के सदस्यों की राय ले लेनी चाहिए।

पता नहीं, वर्धा में होने वाले शिक्षा सम्मेलन में शरीक होने का समय तुम निकाल सकोगे या नहीं। इसके लिए तुम्हें निमन्त्रण गया है; समय निकाल सको तो मैं चाहता हूँ कि आ जाओ। परन्तु मैं यह नहीं चाहता कि अधिक महत्वपूर्ण कार्य के कारण तुम्हारी कहीं और आवश्यकता हो तो भी तुम सम्मेलन के लिए समय निकालो। बेशक दो दिन तक जोर पड़ेगा, परन्तु तुम आ सको तो तुम्हारे रहने से शान्ति मिलेगी।

सस्नेह
बापू

12 अक्तूबर, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। 25 तारीख को यहाँ से चलकर कलकत्ता आने की कोशिश कर रहा हूँ। तब मुझे कांग्रेसी प्रान्तों में मन्त्रि-मण्डलों के कार्यकलाप का सब हाल बताना। आशा है गले की खराबी और जुकाम थोड़े ही दिन रहे होंगे

और तुमने पंजाब का श्रम बर्दाश्त कर लिया होगा। सरहद की जलवायु तो बहुत ही सुखद होगी। मैं कितना चाहता हूँ कि कम से कम कुछ ही समय के लिए तुम आराम कर लो।

सस्नेह,
बापू

18 नवम्बर, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

मेरा ख्याल है कि उस भयंकर रविवार की रात में और सोमवार के मौन में जब तुम मेरे आसपास मँडरा रहे थे, तब तुम्हारी आँखों में मैं वह खानगी पत्र पढ़ सकता था। कमजोरी ने अभी मुझे छोड़ा नहीं है। सारे मानसिक श्रम से मुझे लम्बे विश्राम की आवश्यकता है, परन्तु शायद वह मिल नहीं सकता। यह पत्र तुम्हें यह खबर देने को लिख रहा हूँ कि मैंने बंगाल के कैदियों के बारे में क्या किया है; मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि मेरा काम तुम्हें पसन्द आया है या नहीं। समझौते की बातचीत का दिमाग पर काफी बोझ रहा है। उसे शुरू करने से पहले मैंने दोनों भाइयों से परामर्श कर लिया था कि बातचीत के द्वारा राहत प्राप्त करना वांछनीय है या नहीं। परिणाम के बारे में उदासीन रहना और रिहाई के लिए जब भी हो जाए, लोकमत के विकास पर निर्भर रहना सम्भव था। जबकि सार्वजनिक आन्दोलन चल रहा है उसी समय दोनों भाई स्पष्ट बातचीत के पक्ष में थे। मैंने अपनी योजना भी बताई। वह उसी ढंग की थी जैसी अण्डमान के कैदियों के नाम मेरे तार में बताई गई थी। तदनुसार मैं देवली से वापस लाये गये नजरबन्दों को, जिन्हें वे 'गांव और घर में' नजरबन्द करते हैं, लगभग तुरन्त छोड़ देना स्वीकार कर लिया है और नजरबन्दों की छावनियों में, जिन्हें छोड़ना वे सुरक्षित समझेंगे उन्हें भी, चार महीने के भीतर रिहा कर दिया जाएगा। बाकी के लिए, यदि वे पहले से ही न छोड़ दिये गये हों तो मेरी सिफारिश मान ली जाएगी। मेरी सिफारिश नजरबन्दों के वर्तमान विश्वास का पता लगा लेने पर निर्भर रहेगी। यदि मैं सरकार से कह सकूँगा कि लोग स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए हिंसक उपायों में विश्वास नहीं रखते और समय-समय पर कांग्रेस द्वारा पसन्द की गई कांग्रेस की प्रवृत्तियों में लगे रहेंगे तो उन्हें छोड़ दिया जाएगा। नीति की घोषणा किसी भी समय की जा सकती है। कई जेलखानों में और हिजली की छावनी में कैदियों के साथ जो बातचीत हुई, उसका ब्यौरा देने की

मुझे आवश्यकता नहीं है। मुझे पता नहीं कि यह सब तुम्हें पसन्द है या नहीं। यदि बहुत नापसन्द हो तो मैं चाहूँगा कि तुम मुझे तार कर दो। नहीं तो मैं तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूँगा।

अहमदाबाद की हड़तालों से मुझे अशान्ति हुई। अखबारों से जो कुछ जानकारी होती है उसके सिवा उनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। शोलापुर के विषय में भी यही बात है। यदि हम स्थिति पर काबू नहीं रख सकते, या तो इसलिए कि कुछ कांग्रेसी लोग कांग्रेस के अनुशासन को नहीं मानना चाहते, या इसलिए कि जो लोग कांग्रेस के प्रभाव से बाहर है, उनकी प्रवृत्तियों का नियन्त्रण कांग्रेस नहीं कर सकती तो हमारा पदारूढ़ रहना कांग्रेस के हित में बाधक सिद्ध हुए बिना नहीं रहेगा।

'बन्देमातरम' का विवाद अभी तक शान्त नहीं हुआ है। कार्यसमिति के निश्चय पर अनेक बंगालियों को हार्दिक दुःख है। सुभाष ने मुझे बताया कि वह वातावरण को शान्त करने की कोशिश कर रहे हैं।

आने वाले गवर्नर के पद संभाल लेने के बाद शायद मुझे बंगाल लौट जाना होगा।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। सरूप के बारे में अखबारों की खबर चिन्ताजनक थी। उस पर जोर पड़ रहा है, क्या उसका स्वास्थ्य उसे सहन नहीं कर सकता ?

यह पत्र नागपुर के निकट आते-आते लिखा जा रहा है। हम आज शाम को वर्धा पहुँच रहे हैं।

सस्नेह
बापू

7 दिसम्बर, 1937

प्रिय जवाहरलाल,

मैंने मथुरा के प्रस्तावों या तुम्हारे भाषण को नहीं पढ़ा। मैं दोनों देखना चाहता हूँ।

महादेव के पत्र में तुम्हारी कोमल शिकायत पढ़ी। मैं क्या कर सकता हूँ ? मैं जैसा हूँ तैसा ही तुम्हें मुझको स्वीकार करना होगा। मैं जानता हूँ, तुम कर रहे हो। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे प्रति तुम कितने कोमल हो।

क्रिप्स को जब चाहो अपने साथ ला सकते हो।

सस्नेह
बापू

4 अप्रैल, 1938

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

यह अन्तिम मस्विदा नहीं है। मैं चाहता हूँ कि तुम इसे सहानुभूति पूर्वक पढ़ो। मैं महसूस करता हूँ कि जब तक हम ऐसा कोई काम नहीं करेंगे, तनातनी जारी रहेगी। खैर, मैं कैसे भी एक बजे रात तुम सबको आश्चर्य में डाल दूँगा। मैंने मौलाना के साथ इस विषय पर कुछ विस्तार से विचार-विमर्श किया है।

तुम्हारा सच्चा
बापू

25 अप्रैल, 1938

प्रिय जवाहरलाल,

महादेव के सीमाप्रान्त के दौरे के विवरण की प्रतिलिपि साथ में हैं। चूँकि मैं नहीं जा सकता था और हमें अशान्तिप्रद समाचार मिल रहे थे, इसलिए मुझे लगा कि उन्हें भेज दिया जाए। मैं यह विवरण सब सदस्यों में नहीं घुमा रहा हूँ। मैं मौलाना और सुभाष को नकलें भेज रहा हूँ। विवरण से मैं बेचैन हो गया हूँ। महादेव को अधिक कहना है। अवश्य ही एक प्रति भाइयों को भेज रहा हूँ। आशा है, तुमको भाइयों पर अपना बड़ा असर इस्तेमाल करने की प्रेरणा होगी। मैं तो तार-द्वारा उनके सम्पर्क में हूँ ही। मुझे जो आघात लगा है, उसके बावजूद अगर खान साहब चाहेंगे तो मैं कुछ दिनों के लिए उस प्रान्त में जा भी सकता हूँ। मालूम होता है, हम भीतर से कमजोर होते जा रहे हैं। इससे मुझे चोट लगती है कि हमारे इतिहास के इस बहुत नाजुक अवसर पर हम महत्वपूर्ण मामले में सहमत दिखाई नहीं देते। मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि यह जानकर मुझे कितना घोर अकेलापन होता है कि आजकल मैं तुम्हें अपने विचार का नहीं बना सकता। मैं जानता हूँ कि तुम प्रेमवश बहुत-कुछ करोगे। परन्तु राजनीतिक मामलों में स्नेह के आगे आत्मसमर्पण नहीं हो सकता, जब बुद्धि विद्रोह करती हो। तुम्हारी बगावत के कारण तुम्हारे प्रति मेरा आदर और भी गहरा है। परन्तु इससे

अकेलेपन का दुःख और भी तीव्र हो जाता है, लेकिन अब मुझे अपनी कलम रोकनी चाहिए।

प्यार,
बापू

30 अप्रैल, 1938

प्रिय जवाहरलाल,

जिन्ना के साथ 3 घण्टे की बातचीत का जो संक्षिप्त विवरण लिख डाला है, उसकी नकल साथ में है। सम्भव है, तुम्हें और दूसरे सदस्यों को बातचीत का आधार पसन्द न आये। स्वयं मुझे तो कोई चारा नहीं दिखता। आज मेरी कठिनाई यह है कि मैं तुम्हारी तरह देश में इधर-उधर घूमता नहीं और इससे भी गंभीर बाधा वह भीतरी निराशा है, जो मुझ पर छा गई है। मैं काम चला रहा हूँ, परन्तु यह सोचकर आत्मग्लानि होती है कि मेरा वह आत्मविश्वास जाता रहा, जो मुझमें एक महीने पहले था। मुझे आशा है कि मेरे जीवन में यह सिर्फ एक अस्थायी घटना है। मैंने यह जिक्र इसलिए कर दिया कि तुम्हें प्रस्तावों को उनके गुणों के आधार पर जाँचने में मदद मिले। मैं नहीं समझता कि पहले प्रस्ताव के बारे में कठिनाई पेश आयेगी। दूसरा प्रस्ताव अपने सारे गूढ़ार्थों सहित अनोखा है। अगर वह तुम्हें जंचे तो उसे यों ही अस्वीकार कर देने में संकोच न करना। इस मामले में तुम्हें आगे होना पड़ेगा।

मैं 11 तारीख को लौट आने की आशा रखता हूँ। मेरे इस तार के उत्तर में कि फिर सुभाष को जिन्ना के साथ जाब्ते से समझौते की बातचीत शुरू करनी चाहिए, उनका तार है कि वह 10 तारीख को बम्बई में होंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम भी वहाँ जल्दी जा सको। मैं मौलाना साहब को इसी ढंग से लिख रहा हूँ और इस पत्र की नकल भेज रहा हूँ।

प्यार,
बापू

7 मई, 1938

प्रिय जवाहरलाल,

गांधी-सेवा संघ के नये स्वरूप में ऐसी कौन सी बात है, जिसने तुम्हें अशान्त

बना दिया ? मैं स्वीकार करता हूँ की उसकी जिम्मेदारी मेरी है। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे निःसंकोच बताओं कि तुम्हें किस चीज से अशान्ति हुई है ? अगर मेरी भूल हुई है तो तुम जानते हो कि भूल मालूम होते ही मैं अपने कदम पीछे हटा लूँगा।

आम हालत खराब होने के बारे में मैं तुमसे सहमत हूँ, भले ही दुर्बल स्थानों के सम्बन्ध में हमारा मतभेद हो।

शेष मिलने पर।

प्यार,
बापू

26 मई, 1938

प्रिय जवाहरलाल,

तुम कितने काम से काम रखने वाले और मुस्तैद हो। मुझे खुशी है कि तुमने गुड़गांव जिला कांग्रेस कमेटी के मामले की जाँच कर ली है। आशा है, दोनों पक्ष तुम्हारी सलाह मान लेंगे। ऐसा ही होना चाहिए।

आज तुम्हारा पत्र मेरी और जिन्ना की बातचीत के मेरे विवरण के बारे में मिला और मेरा ख्याल है कि उनसे मेरी दूसरी बातचीत अनिवार्य थी। मुझे आशा है कि इससे कोई हानि नहीं होगी। तुम्हें समय मिल जाए तो जाल (नौरोजी) से मिलने के बाद मैं चाहूँगा कि तुम मुझे दो शब्द लिख भेजो। क्या अच्छा हो, यदि तुम अपने यूरोप के दौरे के दिनों में थोड़ा-सा आराम ले लो और यहाँ की तरह सारा समय भाग-दौड़ में ही न बिता दो।

प्यार,
बापू

31 अगस्त, 1938

प्रिय जवाहरलाल,

अपनी सीमित शक्ति के कारण मुझे मजबूर होकर तुम्हें लिखने की इच्छा को दबा देना पड़ा था।

इन्दू के बारे में मेरे तार के तुम्हारे जवाब की प्रतीक्षा है।

संघ के सम्बन्ध में तुम्हारी चेतावनी मैंने समझ ली हैं मैं इस खबर पर

विश्वास नहीं करता यानी अगर वह अफवाह से कुछ अधिक है तो। पहले कांग्रेस की अनुमति लिये बिना वे उसे आमन्त्रित नहीं करेंगे। अनुमति उन्हें मिल नहीं सकती।

फिर रही बात यहूदियों की, सो मेरा बिल्कुल तुम्हारे जैसा ही ख्याल है। मैं विदेशी माल का बहिष्कार करता हूँ; विदेशी योग्यता का नहीं और पीड़ित यहूदियों के लिए तो मेरी भावना तीव्र है। एक ठोस प्रस्ताव के रूप में मेरा सुझाव है कि तुम सबसे योग्य-व्यक्तियों के नाम इकट्ठे कर लो और उन्हें साफ बता दो कि उन्हें हमारे भाग्य के साथ अपना भाग्य मिला देने और हमारा जीवन-स्तर स्वीकार करने को तैयार होना पड़ेगा। बाकी महादेव लिखेंगे।

प्यार,

बापू

16 नवम्बर, 1938

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे आशा है कि तुम और इन्दु दोनों को समुद्री यात्रा से लाभ पहुँचा होगा। मैं आशा करता हूँ कि तुम 20 के लगभग वर्धा में होगे। किन्तु निश्चय ही तुम जितनी जल्दी तुम्हारी इच्छा होगी आ जाओगे। जटिल समस्याएँ हल के लिए तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं।

तुम दोनों को प्रेम

बापू

21 नवम्बर, 1938

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मैं आशा करता हूँ कि बम्बई में तुम्हें मेरी टीप मिली होगी। मैं दो बजे के पहले मौन नहीं ले सका। मुझे आशा है कि तब तक तुम्हें थोड़ी शान्ति मिल जाएगी और बम्बई में गुजरे कठोर समय के बाद तुम उसका आनन्द लोगे। इन्दु अच्छी है।

प्रेम

बापू

24 नवम्बर, 1938

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा खत मिला। मैं जानता था कि जहाँ घोड़े पर सवार हुए वहाँ फिर तुम अपने समय के मालिक नहीं रहोगे। मुझे जो कुछ मिल जाएगा उसी से सन्तोष कर लूँगा।

पत्र-वाहक द्वारा गुरुदेव से मिला हुआ एक खत भेज रहा हूँ। मैंने उत्तर दे दिया है कि मेरी अपनी राय यह है कि अगर उन्हें बंगाल को भ्रष्टाचार से मुक्त करना है तो अध्यक्ष के काम से छुटकारा पा लेने की जरूरत है। मुझे सन्देह नहीं कि गुरुदेव या तो तुम्हें सीधा लिखेंगे या तुमसे बात करेंगे। तुम अपनी ही राय देना।

आशा है, इन्दु को यात्रा से कोई हानि नहीं हुई होगी।

प्यार

बापू

30 नवम्बर, 1938

प्रिय जवाहरलाल,

चीनी मित्र आये और पाँच के बजाए पैंतीस मिनट ले लिए। अन्त में मुझे कोमलता से कहना पड़ा कि वे अपने समय से सात गुना अधिक ठहर गये।

अगाथा की वाइसराय से जो मुलाकात हुई उसके विवरण की तुम्हारी प्रति साथ में हैं। मेरा सन्देश इतना ही कहने को था कि वे मुझे अंग्रेज जाति का मित्र समझें और उसका राजनीति से कोई सरोकार नहीं।

आशा है, तुमको मेरा वह पत्र ठीक तरह मिल गया होगा, जिसमें मैंने सुभाष-सम्बन्धी गुरुदेव को पत्र भेजा था।

मैं आशा रखता हूँ कि तुम काम से अपने आपको मार नहीं रहे हो और इन्दु के हालचाल अच्छे हैं

सरूप जो भारी काम कर रही हैं उससे उसे छुड़ा देना चाहिए। उसे अपना जर्जर शरीर फिर से बना लेना चाहिए।

प्यार।

बापू

21-12-38

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मौलाना साहब काँटों का मुकुट नहीं चाहते। अगर तुम फिर उसे (पहनना) चाहते तो कृपया वैसा करो। अगर तुम न पहनोगे या वह न सुनेंगे, तब फिर चुनने को पट्टाभि ही एकमात्र व्यक्ति रह जाते हैं।

प्रेम
बापू

3 फरवरी, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

चुनाव के बाद और जिस ढंग से वह लड़ा गया उसे देखते हुए मैं महसूस करता हूँ कि मैं कांग्रेस के अगले अधिवेशन में अनुपस्थित रहकर देश की सेवा करूँगा। इसके अलावा मेरा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं है। मैं चाहता हूँ, तुम मेरी मदद करो, मुझे शरीक होने को दबाना नहीं।

आशा है, तुम्हें और इन्दु को खाली में आराम लेने से लाभ हुआ होगा। इन्दु को मुझे लिखना चाहिए।

प्यार,
बापू

9 फरवरी, 1939

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है। मैं तुम्हारे विश्लेषण को समझता हूँ। सुभाष ने तार दिया है कि वह वर्धा आना चाहता हैं। देखें, क्या होता है। निस्सन्देह, मैं जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं करूँगा। मुझे खुशी है कि सरूप जल्दी आ रही है। मैं आशा करता हूँ कि सेगाँव की शान्ति उसके अनुकूल सिद्ध होगी।

प्रेम
बापू

11 फरवरी, 1939

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा तार और पत्र मिल गया। मैं सम्मलेन और व० क० (वर्किंग कमेटी कार्य समिति) के विषय में तुम्हारी स्थिति को समझता हूँ। मैं किसी कार्य के विषय में उनको चलाने वाले आदमियों के बिना सोच ही नहीं सकता। मैंने तो जो कुछ बलवन्तराय मेहता से सुना था उसी के बल पर स्थगन के विषय में लिख दिया था। वह काठियावाड़ की लड़ाई में लगे हुए हैं। अचिन्तराम बिना उनके कुछ कर नहीं सकता। इसीलिए मैंने तुम्हें तार दिया। मैं लुधियाना की परिस्थिति के विषय में कुछ नहीं जानता।

सरूप के लिए मुझे अफसोस है। मैं तो उसके कुछ दिन अपने साथ बिताने की प्रतीक्षा कर रहा था।

प्रेम

बापू

20 मार्च, 1939

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

शौकत अभी-अभी तुम्हारा रुक्का ले आया है। जो खबर तुमने दी है वह हतबुद्धि कर देने वाली है। मैं तो सिर्फ इतनी ही आशा करता हूँ कि इसमें कोई गलतफहमी है। क्या तुमको उस कांग्रेसी का नाम मालूम हुआ ? मैं दरियाफ्त करता हूँ।

मुझे आशा है कि मौलाना साहब पहले से बहुत अच्छे हैं। कृपया मेरा प्रेम उनको दें और उनसे कहें कि मैं उन्हें देखने को उत्कण्ठित हूँ। जितनी जल्द मैं सुरक्षापूर्वक रवाना हो सकूँगा, ऐसा करूँगा।

प्रेम

बापू

30 मार्च, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे दो पत्र मिले। दोनों अच्छे थे। तुम्हें पत्र व्यवहार की नकलें भेज रहा हूँ। यू० पी० की घटनाओं से मुझे अशान्ति होती है। मेरा हल यह है कि या तो

तुम्हें प्रधानमन्त्री बन जाना चाहिए या मन्त्रिमण्डल को तोड़ देना चाहिए। तुम्हें उच्छृंखल तत्वों पर काबू पाना चाहिए।

जो समाजवादी यहाँ आये थे, उनसे मेरी तीन दिन दिल खोलकर बातें हुई। नरेन्द्र देव तुम्हें खबर देंगे। वह अपने आप न दें तो तुम मंगा लेना

प्यार,

बापू

6 अप्रैल, 1939

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

आज घटनाएँ जो रूप ले रही हैं उन पर व्यथित होने से कौन रह सकता है ? हमें आशा करनी चाहिए कि शीघ्र ही बादल छँट जाएँगे।

राजकोट निर्णय लक्ष्य की ओर एक कदम भर है। मैं अगले कदम की प्रतीक्षा करूँगा। मैंने आज डाक्टर खान साहब को टेलीफोन किया है। उन्होंने टेलीफोन करने और यदि उन्हें मेरी जरूरत है वैसा करने का वादा किया है। वायसराय से मिलना है। कमेटी के सिलसिले में मुझे राजकोट जाना पड़ सकता है।

इन्दु को मेरा प्यार। मैं समझता हूँ कि कृष्णा भी जा रही है। इसका मतलब यह होता है कि तुम 15 को बम्बई में होंगे ?

प्रेम

बापू

29 जुलाई, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

धामी के लोगों का पथ प्रदर्शन करने के बजाए मैंने उन्हें तुम्हें सौंप दिया है। मेरे ख्याल से मेरी तरफ से किसी हस्तक्षेप के बिना तुम्हीं को यह भार वहन करना चाहिए। राज्यों का यह विचार दिखाई देता है कि कांग्रेस को अलग रखा जाए और उसकी तथा देश राज्य परिषद की उपेक्षा की जाए। मैं 'हरिजन' में पहले ही सुझाव दे चुका हूँ कि तुम्हारी समिति से पूछे बिना किसी रियासती संघ या मण्डल को अपने आप कार्रवाई नहीं करनी चाहिए। मुझे खुद करना ही हो तो तुम्हारे मार्फत करना चाहए अर्थात् जब तुम मुझसे पूछो तो जैसे कार्यसमिति को

अपनी राय दे देता हूँ वैसे ही तुम्हें दे दूँ। कल ग्वालियर वालों को भी मैंने ऐसा ही कहा है। तुम्हारी समिति को ठीक ढंग से काम करना है तो उसे थोड़ा सा पुनर्गठित करना होगा।

आखिर मेरा कश्मीर जाना नहीं हुआ। शेख अब्दुल्ला और उनके मित्रों को मेरा सरकारी मेहमान बनने का विचार सहन नहीं होता। अपने पिछले अनुभव के आधार पर मैंने शेख अब्दुल्ला की अनुमति की आशा से राज्य का प्रस्ताव मंजूर कर लिया था। परन्तु मैंने देखा कि मेरी भूल हुई। इसलिए राज्य के आतिथ्य की स्वीकृति रद्द करके मैंने शेख का आतिथ्य स्वीकार किया। इससे राज्य को परेशानी हुई। इसलिए मैंने वहाँ जाने का विचार ही छोड़ दिया। मुझसे दोहरी मूर्खता का अपराध हुआ। एक तो तुम्हारे बिना वहाँ जाने का विचार करने का दुस्साहस किया और दूसरे राज्य का प्रस्ताव मान लेने से पहले शेख की इजाजत नहीं ली। मैंने सोचा था कि राज्य का प्रस्ताव मंजूर करके मैं प्रजा की सेवा करूँगा। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि शेख और उनके मित्रों से मुझे खुशी नहीं हुई। वे हम सबको बहुत ही बेतुके मालूम हुए। खान साहब ने उन्हें समझाया मगर कोई नतीजा नहीं निकला।

तुम्हारी लंका यात्रा शानदार रही। मुझे इसकी परवाह नहीं कि तात्कालिक परिणाम क्या हुआ। सालेह तैयब जी मुझसे अनुरोध कर रहे हैं कि तुम्हें बर्मा भेजूँ और एण्डरूज तुम्हारा विचार दक्षिण अफ्रीका के सम्बन्ध में कर रहे हैं। लंका के लिए तो कांग्रेस के शिष्टमण्डल की कल्पना मुझे स्वयं स्फूर्ति से हुई। इन दो स्थानों की प्रेरणा उकसाने पर भी नहीं होती। लेकिन ये बातें जब मिलेंगे, तब करेंगे। आशा है, तुम ताजे हो और कृष्णा मजे में है।

प्यार।

बापू

11 अगस्त, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

योजना समिति के बारे में (और समय न होने के कारण) कार्यसमिति की मौजूदगी में तुमसे बात करने को आधा ही मन था। शंकरलाल आज सुबह तुमसे बात करके आये थे। साथ में इस मामले पर कृपलानी को उन्होंने जो पत्र लिखा था उसकी नकल भी लाये थे। उनकी आपत्ति से मेरी सहानुभूति थी। इस समिति के कामकाज को न तो मैं कभी समझ सका हूँ और न उसकी कद्र कर सका हूँ।

पता नहीं, वह समिति को बनाने वाले प्रस्ताव की चहारदीवारी के भीतर ही काम कर रही है या नहीं। मैं नहीं जानता की उसके कार्यकलाप से कार्य समिति को परिचित रखा जा रहा है या नहीं उसकी अनेक उपसमितियों का हेतु भी मेरी समझ में नहीं आया है। मुझे ऐसा लगा है कि एक ऐसे प्रयत्न में जिसका कोई फल नहीं निकलेगा, बहुत-सा रुपया और परिश्रम बर्बाद किया जा रहा है। ये मेरी शकाएँ हैं। मैं प्रकाश चाहता हूँ। मैं जानता हूँ। तुम्हारा मन चीन में है। अगर तुम्हारे ख्याल से शाह तुम्हारे विचार प्रकट कर सकते हैं तो मैं उनसे जान लेने की कोशिश करूँगा। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे और तुम्हें मातृभूमि में सुरक्षित लौटा लाए।

प्यार,

बापू

18 सितम्बर, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

च्यांग काई शेक के नाम मेरा पत्र साथ में हैं। पत्र मैं चाहता था उससे लम्बा हो गया। शायद मूल के साथ टाइप की हुई प्रति भेजना अच्छा रहेगा। महादेव कल मद्रास गये।

प्यार।

बापू

24 सितम्बर, 1939

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

संलग्न तार तुम्हारे द्वारा कार्रवाई के लिए भेजता हूँ। यह तुम्हारा खास विभाग है।

मैं फिर शिमला जा रहा हूँ। मैं केवल माध्यम के रूप में काम करने वाला हूँ। यदि तुम्हें कोई आदेश देना हो तो मुझे भेज देना। मुझे उम्मीद है कि यदि निमन्त्रण तुम्हारे पास आता है तो उसका उत्तर देने को तैयार रहोगे।

प्रेम

बापू

25 अक्टूबर, 1939

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मैं अमरीकी चीज को देख रहा हूँ। यह बड़ी व्ययसाध्य है दूसरी दृष्टियों से भी यह मुझे आकर्षित नहीं करती।

मुझे आशा है, इन्दु के बारे में तुम्हें खुशखबरी मिली होगी।

प्रेम

बापू

26 अक्तूबर, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

मैंने देख लिया है कि यद्यपि मेरे प्रति तुम्हारा स्नेह और आदर कायम है, फिर भी हमारे बीच दृष्टिकोण का अन्तर दिन-दिन तीव्र होता जा रहा है। शायद हमारे इतिहास में यह सबसे नाजुक काल है। जिन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्नों पर हमारा ध्यान लगा हुआ है उन पर मेरे बहुत प्रबल विचार हैं। मैं जानता हूँ कि उन पर तुम्हारे भी प्रबल विचार हैं, परन्तु वे मुझसे भिन्न हैं। प्रकट करने का तुम्हारा तरीका मुझसे अलग है। मुझे भरोसा नहीं कि जिन विचारों को मैं बहुत प्रबल रूप में रखता हूँ उनमें दूसरे सदस्य मेरे साथ हैं या नहीं। मैं इधर-उधर घूम नहीं सकता। मैं आम लोगों के, कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं के भी, सीधे सम्पर्क में नहीं आ सकता। मुझे लगता है कि तुम सबको मैं अपने साथ नहीं रख सकता तो मुझे नेतृत्व नहीं करना चाहिए। मैं महसूस करता हूँ कि तुम्हें पूरी तरह काम संभाल कर देश का नेतृत्व करना चाहिए और मुझे राय प्रकट करने को स्वतन्त्र छोड़ देना चाहिए। अगर तुम सबका ख्याल हो कि मुझे पूरी तरह से मौन रखना चाहिए तो मुझे आशा है कि मुझे उसी के अनुसार करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। अगर जरूरी समझो तो आकर तुम्हें सारी चीज पर चर्चा कर लेनी चाहिए।

प्यार।

बापू

29 अक्टूबर, 1939

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

कल मैंने तुम्हें लिखा था। यह पत्र मेरठ से प्राप्त एक शिकायत तुम्हारे पास

भेजने के लिए लिख रहा हूँ। कृपया पता लगाकर पत्र लेखक को सीधे जवाब दे देना। मैंने उन्हें कह दिया है कि पत्र मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूँ

प्रेम
बापू

4 नवम्बर, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे चले जाने के बाद की कृपलानी ने मुझे बताया कि उत्तर प्रदेश में सविनय भंग के लिए बड़ा जोर शोर तैयारी है। उन्होंने यह भी कहा कि गुमनाम कागज घुमाये गये हैं और लोगों से तार काटने और रेलें उखाड़ने के लिए कहा गया है। मेरी राय यह है कि अभी सविनय भंग के लिए वातावरण नहीं है। यदि लोग कानून अपने ही हाथ में ले लेते हैं तो मुझे सविनय भंग की कमान छोड़ देनी होगी। मैं चाहता हूँ कि तुम इस सप्ताह का 'हरिजन' पढ़ो। उसमें इस सम्बन्ध में मेरी स्थिति बताई गई है। तुमसे इसकी चर्चा करने का मेरा इरादा था। परन्तु वह होना नहीं था। हमारे इतिहास के इस नाजुक वक्त में हममें कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए और सम्भव हो तो एक विचार होना चाहिए।

प्यार।
बापू

14 नवम्बर, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे पत्र नियमित आते रहते हैं। राजेन्द्र बाूब के नाम तुम्हारा खत मैंने देख लिया। उसे देखने से पहले उस पर मैं 'हरिजन' के लिए एक टिप्पणी लिख चुका था। मैं तुम्हारे पास पेशगी नकल भेजने की कोशिश करूँगा।

अगर इलाहाबाद में तुम्हें मेरी ज्यादा जरूरत हो तो रख लेना। हमारे यहाँ के बयानों के लन्दन में होने वाले स्वार्थपूर्ण सम्पादन की मुझे चिन्ता नहीं होती। समय मिला तो 'न्यूज क्रानिकल' के लिए एक संक्षिप्त सन्देश लिख डालूँगा।

उस पत्र की ओर से मुझे समूल्य अधिकार प्राप्त है।

शेष मिलने पर।

प्यार,
बापू

28 दिसम्बर, 1939

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं चीनी पत्र सुरक्षित रखूँगा।

मुक्ति दिवस को 'टाइम्स आव इण्डिया' में पूरे पृष्ठ का विज्ञापन मिला है। परन्तु यह सच है कि सब जगह उसका कोई असर नहीं हुआ दीखता।

फजलुल हक का अभियोग पत्र तुमने पढ़ा है ? इसके बारे में कुछ भी कहना या करना नहीं चाहिए ?

तुमने मुझे कुमारप्पा के पत्र नहीं भेजे, जिन पर तुमने सख्त ऐतराज किया था। वह यहाँ हैं। मैंने उनसे पूछा तो वह कहते हैं कि हाल में तो उन्होंने कुछ नहीं भेजा। तुम्हारे पास जो कुछ हो, जरूर मेरे पास भेज दो।

प्यार।

बापू

5 जनवरी, 1940

मेरे प्यारे जवाहरलाल

तुम्हारा पत्र मुझे दुखी करता है। तुमने नापसन्दगी के स्वर में कहा है कि कु० (कुमारप्पा) एक वाहियात आदमी है और यह भी तुमने नगण्य प्रमाण पर ही किया है। मैंने तुमसे वह पत्र व्यवहार मांगा था; तुमने कहा कि वह तुम्हारे पास नहीं है किन्तु (प्राप्त कर) मेरे पास भेज दोगे। अब मैं देखता हूँ कि तुमने दूसरों की व्याख्या मंजूर कर ली है। मेरा आशय यह नहीं है कि वह व्याख्या गलत थी किन्तु एक साथी कार्यकर्त्ता के बारे में ऐसी सुनी-सुनाई बातों से निर्णय करना गलत था। मेरा सुझाव है कि तुम पत्र-व्यवहार प्राप्त करके मेरे पास भेज दो।

यह रहा जेनरलिजमो (प्रधान सेनापति, च्यांग काई शेक) के नाम मेरा पत्र। मैंने उनका पत्र अखबारों को छापने के लिए नहीं दिया है। यदि तुम इसे जरूरी समझो तो वैसा कर सकते हो।

प्रेम

बापू

30 जनवरी, 1940

मेरे प्यारे जवाहरलाल

कानपुर के पद्मपन्त ने तुम्हें लिखे पत्र की प्रतिलिपि मेरे पास भेजी है। मुझे

आशा है कि तुम इस मामले की छानबीन करोगे।

क्या तुमने जमैयत उल्मा ए हिन्द की सबसे ताजा पुस्तिका देखी है ? वे लोग खतरनाक मित्र हैं। पता नहीं कि कार्यसमिति ने मौलवी किफायत उल्ला साहब से पूरी बातें कीं या नहीं।

प्रेम

बापू

जनवरी, 1940

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया। मैं गलतफहमियों की सम्भावना को जानता हूँ। इन्होंने तथा अज्ञान या स्वार्थपूर्ण आलोचना ने कभी मुझे प्रभावित नहीं किया। मैं जानता हूँ कि यदि हम अन्दर से शक्तिमान हैं तो सब कुछ अच्छा होगा। जहाँ तक बाह्य मामलों का सम्बन्ध है, तुम मेरे पथ प्रदर्शक हो। इसलिए तुम्हारा पत्र मुझे मदद देता है।

कुमारप्पा के बारे में तुमने अपने में काफी से ज्यादा संशोधन कर लिया है। तुम उनका पत्र देखना पसन्द करोगे। पढ़ने के बाद इसे नष्ट कर सकते हो। हाँ, हमारे पास उनके जैसे बहुत की कम कार्यकर्त्ता हैं।

प्रेम

बापू

23 मई, 1940

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

संलग्न को पढ़ो और मुझे रास्ता बताओ। मैंने लेखक से कहा है कि उसका सुझाव मुझे आकर्षित करता है और अगर मुझे अपना रास्ता साफ दिखाई देगा तो मैं अंशतः या पूर्णतः उस पर अमल करूँगा।

प्रेम

तुम्हारा बापू

29 मई, 1940

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मुझे श्री स्पाल्डिंग के संलग्न पत्र के साथ तुम्हारा पत्र मिला। थामसन का

(पत्र) उसमें नहीं था। मैं स० (स्पान्लिडग ?) को सामान्यतः तुम्हारे उत्तर की पुष्टि करते हुए पत्र लिख रहा हूँ।

सर सिकन्दर को दिये हुए उत्तर की तथा मौलाना को लिखे पत्रों की जो प्रतियाँ तुमने संलग्न की हैं, वे भी मुझे मिल गई हैं। तुम्हारे वक्तव्य अच्छे और पूर्ण हैं। मैं किसी तात्पर्य से ही वक्तव्य देने से बच रहा हूँ। किन्तु जब मैं देखूँगा कि आवश्यक है तब तो दूँगा ही।

मुझे आशा है, कश्मीर में तुम्हारा समय मजे में बीत रहा होगा।

प्रेम

बापू

8 अगस्त, 1940

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मौलाना साहब ने मुझे हैदराबाद की प्रारम्भिक रिपोर्ट दी है। पढ़ने में यह भयावह लगती है। मेरे लिए इसमें कुछ नया नहीं है किन्तु कोई बुरे से बुरे भय की पुष्टि नहीं चाहता। मैं खुद इसका उपाय ढूँढ़ता रहा हूँ। कल मैं कार्यकर्त्ताओं से मिलूँगा। अगर तुम्हारे पास कोई विचार हो तो मुझ तक पहुँचा देना।

प्रेम

बापू

6 अक्टूबर, 1940

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। जब हम मिलें तो तुम रजनी पटेल के विषय में मुझे और बातें बताओगे। नेपियर के बारे में, संलग्न कागज के साथ, तुम्हारा पत्र मैं वाइसराय को भेज रहा हूँ। यह करुणाजनक मामला है।

मैं ऊपर से नीचे तक काम से दबा हुआ हूँ। इसलिए और कुछ नहीं लिखता।

प्रेम

बापू

21 अक्तूबर, 1940

प्रिय जवाहरलाल,

तो विनोबा का निश्चय कर दिया गया उनकी चार दिन की वजारत मेरी दृष्टि से बिल्कुल सफल रही।

मैं टिप्पणी जारी कर रहा हूँ, जिसे तुम देखोगे। प्रोफेसर ने टेलीफोन पर कहा कि तुम तैयार हो। मैंने तुम्हारा बयान भी देख लिया। मैं अब भी तुमसे पूछना चाहूँगा कि मैं जो कुछ लिख रहा हूँ, उसमें तुम्हें कोई भी चीज पसन्द आ रही है या नहीं। मैं नहीं चाहता कि केवल अनुशासन-प्रेमी की तरह चलो। मेरी वर्तमान कल्पना में उन लोगों की जरूरत है, जो योजना में उसकी सब बातों में नहीं, परन्तु मुख्य वस्तु में विश्वास रखते हों। अक्लमन्द को इशारा काफी है।

सम्भव हो तो तार दे देना।

प्यार।

बापू

24 अक्तूबर, 1940

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा तार पाकर खुशी हुई। यदि मेरा बयान जाने दिया गया तो तुमने इससे पहले देख लिया होगा। अगर तुम तैयार हो तो अब अपना सविनय भंग बाकायदा घोषित कर सकते हो। मेरा सुझाव है कि तुम अपने श्रोताओं के लिए कोई गाँव चुन लो। मैं नहीं समझता कि ये लोग तुम्हें अपना भाषण दोहराने देंगे। जहाँ तक विनोबा का सम्बन्ध है वह अपनी योजनाओं के साथ तैयार नहीं थे। परन्तु उन्हें वे आजाद रहने दें तो मेरा सुझाव है कि तुम विनोबा के लिए निश्चित की गई योजना पर चलो। परन्तु तुम्हारा और कुछ खयाल हो तो तुम अपने ही मार्ग का अनुसरण करो। मैं इतना ही चाहता हूँ कि मुझे अपना कार्य-क्रम दे दो। अपनी तारीख आप ही तय कर लो, लेकिन इस तरह से कि तारीख और जगह का एलान करने का मुझे समय मिल जाए। सम्भव है, वे लोग तुम्हें अपना पहला कार्य-क्रम भी पूरा न करने दें। सरकार की तरह से ऐसे हरेक कदम के लिए मैं तैयार हूँ। हमारे कार्य-क्रम को प्रकाश में लानेवाले हर उचित उपाय का तो मैं उपयोग कर लूँगा, मगर मेरा आधार इसी पर रहेगा कि नियमित विचार अपना असर आप पैदा करता है। यदि यह मानना तुम्हारे लिए कठिन हो तो मैं तुमसे

कहूँगा कि निर्णय स्थगित रखो और परिणाम देखते रहो। मैं जानता हूँ कि तुम खुद धीरज रखोगे। और अपनी तरफ के लोगों को भी धीरज रखने को कहोगे। मुझे मालूम है, मेरे प्रति वफादारी रखकर तुम कितना जोर बर्दाश्त कर रहे हो। मेरे लिए वह अमूल्य है। आशा है, वह उचित साबित होगी, क्योंकि अब तो 'करने या मरने' की बातें हैं। पीछे तो लौटना नहीं है। हमारा पक्ष अकाट्य है। झुकने का सवाल नहीं। इतना ही है कि मुझे प्रत्यक्ष रूप में यह दिखा देने के लिए कि अहिंसा जब विशुद्ध होती है तब उसमें क्या ताकत है, अपने ढंग से चलने दिया जाए।

मौलाना साहब ने फोन से कहा कि दूसरी बार सत्याग्रह के लिए मुझे दूसरा आदमी चुनना चाहिए। मैंने उन्हें बताया कि तुम जाने को राजी हो तो मैं ऐसा नहीं कर सकता। 'हरिजन' के सम्बन्ध में मैंने जो कदम उठाया है, उस पर तुम्हारी प्रतिक्रिया जानना चाहूँगा।

प्यार।

बापू

20 जनवरी, 1941

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मुझे अभी पता चला है कि तुम दोनों और मौलाना साहब आ गये हो। मैंने मौलाना साहब से कहा था कि मैं दो बजे से मौन लूँगा। जब मैंने ऐसा कहा तब मैं भूल गया था कि मैंने 4-30 बजे तीसरे पहर प्रो० कोपलैण्ड को मिलने का समय दे रखा है। मैं उसे खत्म नहीं कर सकता था। इसलिए मैंने 5-25 बजे शाम को मौन लिया। मैं तुम्हारे और उनके लिए उस समय के बाद खाली रहूँगा। कृपया इसे मौलाना को भी पढ़कर सुना दें।

इन्दु को कल आना चाहिए।

प्रेम

बापू

26 जनवरी, 1941

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मुझे अस्पताल के बारे में तुम्हारा सन्देश मिला था। डॉ० मेहता इलाहाबाद

गये थे और उनकी राय है कि उसका उद्घाटन मेरे द्वारा 28 फरवरी को होना चाहिए। सब बातों का विचार करने के बाद मैं उनसे सहमत हूँ कि मुझे उसका उद्घाटन करना चाहिए और जल्दी-से-जल्दी वह तिथि 28 फरवरी हो सकती है। अगर मैं जाता हूँ तो सोची हुई रकम की बाकी राशि के एकत्र हो जाने की सम्भावना है और तब भविष्य की बहुत ज्यादा चिन्ता न करते हुए अस्पताल का आरम्भ किया जा सकता है। मैं जानता हूँ कि तुम सब आत्मा से मेरे साथ होगे। मैं समझता हूँ कि हमें सरूप तथा इन्दु के लिए प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है।

यदि तुम्हें अपनी राय को तार देने से ही छूट हो तो कृपया वैसा करना। तब मैं इलाहाबाद हल्के हृदय से जाऊँगा।

प्रेम
बापू

11 फरवरी, 1941

चि० जवाहरलाल,

काशी के भाषण के बाद तो मैं तुमको भी राष्ट्रभाषा में क्यों न लिखूँ ? सरूप को तो रा० भा० में लिखता हूँ। रणजीत को गुजराती में, तुमको क्यों अंग्रेजी में ?

यह है दो खत, अगर पसंद पड़े तो दे देना। मैं सभापति को तार भी भेजूँगा। यह खत तो रात को श्मशान भूमि से आकर लिख रहा हूँ ताकि कल सबेरे चला जाए।

जमनालाल जी का तो क्या लिखूँ ?

चन्द्र सिंह यहाँ जम गये हैं। खुश रहते हैं। खादी का काम अच्छी तरह से सीख रहे हैं। उनकी पत्नी विलासगृह में शांत नहीं रह सकती हैं। चन्द्रसिंह को खत लिखती है। मृदु को लिखा है कि दिल चाहे तब भेज देवे।

स्टेट्स पीपल की ओफिस तो आ रही है। जमनालाल जी के जाने से कुछ फरक होता है क्या ? अमृत की मदद से यहाँ चल तो सकता है, लेकिन तुम्हारे सोच लेना है। अब तो देर हो गई, ज्यादा नहीं लिखुँगा।

बापू के आशीर्वाद

5 दिसम्बर, 1941

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

जेल से बाहर तुम्हें लिखने योग्य होना अच्छा है। किन्तु यह खुशी केवल क्षणिक है। क्योंकि मैं इस प्रकार की रिहाइयों के प्रति अपने को अनुकूल नहीं कर पाता हूँ। खैर, हम इस नये संकट का सामना करते हैं।

यह सिर्फ तुम्हें जताने के लिए लिख रहा हूँ कि चूँकि तुम्हारी रिहाई की अफवाह से वातावरण पूर्ण था, मैंने तुम्हारे सवाल का जवाब देने में विलम्ब किया।

मैंने तुम्हारे पत्रों को बड़े मनोयोग से पढ़ा है। मैं तुम्हारे निष्कर्षों से सहमत हूँ और मैं उस अत्यन्त उदार ढंग को पसन्द करता हूँ जिसके साथ तुमने सारी बात को ग्रहण किया है। मेरी एफ० (फ०) से एक, केवल एक ही बार बात हुई है और उसने मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार किया है कि वह तुम्हारी सहमति एवं आशीर्वाद के बिना इन्दु से शादी करने की बात नहीं सोचेगा। इन्दु ने फ० को लिखा; वह आकर मुझसे मिल भी रही है। अब जब तुम बाहर आ गये हो, और ज्यादा नहीं तो सम्भवतः कुछ दिन तो रहोगे, तुम इस चीज को जैसी शक्ल देना चाहोगे, दोगे।

मुझे आशा है कि तुमने मेरे द्वारा जारी किए हुए हाल के वक्तव्यों को पसन्द किया होगा। तुम मुझे बताओगे कि कब आ रहे हो। आज मौलाना ने टेलीफोन किया और कहा कि वह दो या तीन दिनों बाद आने की सोच रहे हैं। मैं यहाँ से 9 मई को एक महीने के लिए बारडोली जाना चाहता हूँ। सरदार मुझसे चाहते हैं कि मैं गुजरात को एक महीना दूँ। वह चिकित्सा में हैं—मुख्यतः आहार-सम्बन्धी। मैंने ही उनके आहार का निश्चय किया है। मैं समझता हूँ कि इसके कारण उनकी वेदना सह्य हो गई है। जहाँ तक सम्भव है, हमारी वार्ताएँ और बैठकें बारडोली में होंगी। रिहाइयाँ एक चुनौती हैं। मैं महसूस करता हूँ कि हमें जितनी जल्द हो सके, कार्यसमिति तथा भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठकें करनी चाहिए। किन्तु इस विषय के सर्वोत्तम निर्णयकर्ता तो तुम और मौलाना हो। मैं यह समयाभाव के बीच लिख रहा हूँ।

प्रेम

बापू

6 दिसम्बर, 1941

जवाहरलाल नेहरू

कल लिखा था (कि) तुम्हारा तार (मिला)। जब भी आ सको आओ। सरदार ने बहुत पहले बारडोली कार्यक्रम तय कर दिया था। उनका शरीर टूट गया है। उनके शरीर की सेवा-सुश्रूषा में मैं ही उनका एकमात्र पथप्रदर्शक हूँ। उनको अशान्त करना नहीं चाहूँगा किन्तु तुम्हारी और मौलाना की राय ही चलेगी।

प्रेम

बापू

9 दिसम्बर, 1941

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र।

आज रात मैं राजेन्द्र बाबू के साथ बारडोली जा रहा हूँ।

जितनी जल्दी आ सको, आओ।

मौलाना साहब ने तार दिया है कि कार्यसमिति 18 को बारडोली में होगी। अगर उन्होंने सभी सूचना न प्रसारित की हो तो मैंने उन्हें 23 का सुझाव दिया है क्योंकि 17, 18, 19 को मेरी भारी बैठकें हैं। किन्तु मैंने निर्णय मौलाना साहब पर ही छोड़ दिया है।

आशा है तुम्हें मेरा पत्र मिल गया होगा।

प्रेम

बापू

13 दिसम्बर, 1941

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला है। मुझे खुशी है कि इन्दु तुम्हारे साथ आयेगी। यहाँ जाड़ा अपने नाम के लायक नहीं है। रातें ठण्डी हैं, दिन गरम हैं।

जिन प्रश्नों पर हमें विचार करना है, वे अनेक हैं। मुझे विश्वास है कि तुम और मौलाना साहब कार्यसमिति की तिथि के पूर्व ही यहाँ आ जाओगे।

17 से आल इण्डिया स्पिनर्स एसोसियेशन (भारतीय सूत्रकार संघ या चर्खा संघ) तथा गां० से० सं० की भारी बैठकें शुरू हो रही हैं। मैं 20 को सब खत्म

करने की आशा करता हूँ।

सरदार अपने को अच्छी तरह सहन कर रहे हैं।

प्रेम

बापू

23 फरवरी, 1942

चि० जवाहरलाल,

अब तो मुझको कुछ फुरसत होगी। स्टेट्स पीपल के दफ्तर का क्या करना है, अखबार का क्या करना है, पट्टाभी लिखते हैं वे मछलीपट्टम से अखबार निकाल सकते हैं, उनका खत इसके साथ है। दा० मेनन यहां है। मंत्री पद बलवंत राय नहीं ले सकते हैं। न जयनारायण व्यास ले सकते हैं। रंगीलदास है। बापा पसंद नहीं करते हैं। अगर यहाँ ही दफ्तर रखना है तो चल तो सकता है। पैसे की बात सोचना होगा।

बापू के आशीर्वाद

1 मार्च, 1942

चि० जवाहरलाल,

तुम्हारा खत कल मिला। मैं उत्तर नहीं देना चाहता था। न अब देना चाहता हूँ। आज़ तो गरमी पड़ रही है उसका खयाल देता हूँ। बहुत सख्त है। मैंने भीगा कपड़ा सर से लपेटा है। ऐसी गरमी में इन्दु को इस ओर नहीं आना चाहिये। मेरी तो सलाह है कि दोनों खाल (खाली ?) जाएँ या काश्मीर। जब बारिश शुरू होवे तब सेवाग्राम इ० जगह जाएँ। लेकिन इन्दु की हिम्मत अगर यहाँ की गरमी की बर्दाश्त करने की है तो मैं तो दोनों को देखकर खुश ही हूँगा।

एक और बात खुरशेद बहन ने तुमको लिखा था। वह लिखती है उसके जवाब में तुमने लिखा है "मैं तो महात्मा के निमंत्रण की राह देख रहा हूँ।" मेरा निमंत्रण क्यों ? मेरा निमंत्रण तो हमेशा है ही। खास तो कुछ नहीं था मैं यहाँ तक आने की तकलीफ दूँ। ओपन सिटी की बात मैं नहीं समझता हूँ इसलिये मैंने कहा अगर मैं कुछ कहूँ तो भी पहले तो जवाहरलाल की राय जानना होगा। ऐसी बातों में मैं जवाहरलाल पर निर्भर रहता हूँ। अब तो जल्दी मिलेंगे ही।

बापू के आशीर्वाद

4 मार्च, 1942

चि० जवाहरलाल,

तुम्हारा खत कल मिला। आशा है कि इस खत के अक्षर पढ़ने में मुश्किल नहीं होगी।

इंदु की शादी के बारे में मेरी तो पक्की राय है कि बाहर से किसी को न बुलाया जाए। इलाहाबाद में जो हैं उनमें से साक्षी के रूप में भले ही कुछ लोग को बुलाये जाए। लग्नपत्रिका दिल चाहे इतनी भेजो। सबसे आशीर्वाद मँगाओ लेकिन पत्रिका में साफ लिखना कि खासकर किसी को आने की तकलीफ नहीं दी गई है। अगर एक को भी बुलावे तो किसी को छोड़ नहीं सकेंगे। इंदु इतनी सादगी तक जाना चाहती है या नहीं यह सोचना होगा। तुम भी शायद इतनी सादगी तक जाना पसन्द न करो तो मेरी राय फेंक देना।

इंदु के बारे में तुम्हारा निवेदन मैंने देखा। अच्छा लगा। मेरे पर रोज खत आते हैं। कई तो विषाक्त हैं। सब फाड़ डाले। इन सबके उत्तर में मैंने एक नोध हरिजन के लिये भेजी है। उसकी नकल इसके साथ रखता हूँ। नोंध लिखी गई सोमवार को। कल से मुसलमानों के खत शुरू हुए हैं। हमले का मुद्दा सरूपवाला किस्सा है। ऐसा तो चलता ही रहेगा।

देशी राज्य के बारे में मैं हो सके वह करूँगा पैसे की मुश्केली बराबर पड़ेगी। जमनालाल जी ने सब बोझ उठा लिया था। किस तरह वह निश्चित नहीं हुआ था। अब मैं सोच रहा हूँ कि कैसे पैसे पैदा किया जाए। अखबार के बारे में पट्टाभी से मश्विरा कर रहा हूँ। बलवन्त राय नहीं आ सकेंगे। उससे बहुत फरक नहीं पड़ेगा। यहाँ से मदद मिलती रहेगी। यहाँ आओगे तब दूसरी बातें करेंगे। मेनन आज मुंबई जाते हैं—वहाँ का काम पूरा करने के लिए।

च्यांग काई शेक का बयान देखा था। अच्छा था। तुम्हारी इजाजत तो आई लेकिन मैंने सोचा, अब इस खत (को) प्रकट करने की आवश्यकता नहीं रही। बात पुरानी हो गई।

भागीरथी आ गई है। चन्द्रसिंह को रखना कठिन तो है। बहुत तामसी है। जहन कमजोर है। थोड़ी सा बात में लड़ बैठते हैं। किसी को पीटे तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। मेहनती तो है देखता हूँ तुम्हारे चिंता नहीं करना। मेरे खत पढ़ने में कठिनाई आवे तो मैं और भी साफ अक्षर लिखने की कोशिश करूँगा। लेकिन हमारा धर्म है कि हम एक दूसरों (दूसरे) से राष्ट्रभाषा में लिखते ही जायें (लिखने लगे) कुछ अर्से में इस तरह लिखने में हम ज्यादा आसानी महसूस करेंगे। गरीबों को बहुत लाभ होगा।

बापू के आशीर्वाद

6 मार्च, 1942

चि० जवाहरलाल,

तुम्हारा खत मिला। अगले खत का उत्तर मैंने तुरन्त दे दिया था। मिल गया होगा।

मुकरजी हमारा अच्छा और नेक कामदार हैं। उसके पास जमीन है। उसको मैंने पूछा था। उसने कहा मैं दान हरगिज नहीं चाहता हूँ। मुझे तो कुछ शक नहीं है कि वह पूरा रुपया वापस करेगा। सूद देने की भी उसकी तैयारी थी। हमने दूसरे कामदारों को काफी मदद दे दी है। मेरा तो निश्चित मत है कि हम भाई मुकरजी को रु० 3,000 छः मास के लिये दे।

बापू के आशीर्वाद

15 अप्रैल, 1942

चि० जवाहरलाल,

प्रोफेसर यहाँ आये हैं उनसे सब सुना। तुम्हारा प्रेस-इन्टरव्यू भी सुना। मैं देखता हूँ कि हमारे विचारों में तो भेद था ही लेकिन अब अमल में हो रहा है। इस हालत में वल्लभ भाई वगैरा क्या करें ? तुम्हारी नीति को स्वीकार किया जाय तो कमिटि जैसी आज है ऐसे नहीं रहनी चाहिए।

ज्यों-ज्यों मैं सोचता हूँ मुझे लगता है कि तुम कुछ गलती कर रहे हो। अमरीकी लश्कर, चीनी लश्कर हिन्दुस्तान में आवे और हम गुरिल्ला लड़ाई में पड़ें, इसमें मैं कुछ भी भला नहीं पाता हूँ।

मेरा धर्म है, मैं तुम्हें सावधान करूँ।

इन्दू फीरोज ठीक होंगे। मैंने कल सुना कि उत्कल में फारवर्ड ब्लाक वाले हथियारबन्द हैं और कम्युनिस्ट गुरिल्ला लड़ाई के लिए। सत्य कितना है, मैं नहीं जानता।

बापू के आशीर्वाद

19 अप्रैल, 1942

चि० जवाहरलाल,

मौलाना का खत आज आया। वे मुझे लिखते हैं मुझे इलाहाबाद जाना है। मैं कैसे जाऊँ ? मैंने वहीं कह दिया था मैं अब मुसाफरी के लायक नहीं रहा हूँ।

और मैं आकर भी क्या करूँगा। मेरे पास वही चीज है और मैंने यहाँ तीन मीटींग बुलाई है। एक तो कब से बुलाई गई थी। एक भी मैं छोड़ नहीं सकता हूँ। इसलिए तुम्हारे (तुम्हें) मुझे बचा लेना है। मौलाना से (को) लिखो कि मुझे रिहाई दे दें।

बापू के आशीर्वाद

24 अप्रैल, 1942

चि० जवाहरलाल,

मीरा बहन ने मान लिया कि मुझे कुछ न कुछ कदम उठाना होगा, और उसे कुर्बानी करना (करनी) होगा। मैं इलाहाबाद न जाऊँ तो भी वह जाना चाहती थी। इसलिये मैंने उसे यहाँ बुला ली (लिया)। उसके साथ मैं अपने ख्याल प्रस्ताव के रूप में भेजता हूँ। मौलाना साहब का आग्रह था कि मैं इलाहाबाद जाऊँ। मैंने लाचारी बताई। इन दिनों में मुसाफिरी करना मेरे लिए कठिन बात है। इतना ही नहीं, लेकिन मैंने उसी अरसे में तीन मीटिंग बुलाई है। इसलिये मैंने मौलाना से माफी मांग ली और लिखा कि मैं अपने विचार प्रस्ताव के रूप में भेजुँगा।

प्रस्ताव के समर्थन में दलील देने की आवश्यकता मैं नहीं समझता हूँ। अगर मेरा प्रस्ताव आप लोगों को अच्छा न लगे तो मेरा आग्रह हो नहीं सकता है। हमारे लिये मौका ऐसा आया है कि हरेक को अपना मार्ग सोच लेना है।

फनी वगैरह में सल्तनत का बर्ताव ऐसा चल रहा है कि वह बर्दाश्त के काबिल नहीं है। ऐसी सल्तनत बचकर भी क्या करेगी ? और आज तो वह बचने की कोशिश कर रही है। मेरा विश्वास हो गया है कि सल्तनत उठ जाने से हम जापान के साथ अच्छी तरह से हिसाब कर सकते हैं। यह दूसरी बात है कि सल्तनत उठ जाने पर हम आपस में लड़ मरेंगे। भले ऐसा भी हो। हम थोड़े सल्तनत की मेहरबानी से आपस-आपस के झगड़ों से बचना चाहते हैं ?

आचार्य नरेन्द्रदेव ने प्रस्ताव देखा है, और पसंद किया है।

बापू के आशीर्वाद

9 मई, 1942

चि० जवाहरलाल,

तुमारे खत की मैं रोज आशा रखता था। आज आया। तुमारे (तुम्हें) थोड़ा

तो आराम चाहिये ही। इंदु के काम का बयान मुझे बहोतों से मिला। हमेशा अच्छी तबीयत रहे तो इंदु बिल्कुल अच्छी हो जायगी।

फिरोज भी बहुत काम कर रहा है, ऐसा सबने सुनाया।

चन्द्रसिंह के लिए जो कुछ शक्य है, सो होता है। माधी को बड़ी खांसी हो गई है। मैं रोज देखने जाता हूँ। चन्द्रसिंह और भागीरथी खुश देखने में आते हैं। गरमी की भी अब तो बहुत शिकायत नहीं करते हैं। चन्द्रसिंह की पढ़ाई की समस्या कठिन है। मैं दीनबंधू स्मारक के लिये आठ दिने के लिये मुंबई जा रहा हूँ। वापस आने के बाद जो हो सके करूँगा। चिंता न करें।

मौलाना के खत आते रहते हैं। वे भी बीमार हैं। लिखते हैं इस महीने की आखरी में वर्धा आवेंगे। शायद उन्हीं के साथ तुम भी आओगे।

बा अच्छी है।

दोनों को
बापू के आशीर्वाद

5 जून, 1942

चि० जवाहरलाल,

तुम्हारा खत मिला। मौलाना से कुछ नहीं है। एक खत था जिसमें लिखा था तुम्हारे साथ आवेंगे।

फिशर आ गये हैं। रोज एक घंटा तो देता हूँ। आश्रम में ही रहता है। यहाँ तो गरम पवन फूँक रहा है।

बापू के आशीर्वाद

13 जुलाई, 1942

चि० जवाहरलाल,

मैं प्रस्ताव पढ़ गया हूँ। मैं देखता हूँ कि तुमने मेरी बात में से कुछ लेने की कोशिश की है। मैं कोई परिवर्तन नहीं चाहता हूँ।

हाँ मैं इतना जरूर चाहता हूँ कि हम सब जहाँ तक हो सके एक ही मानी इस दरख्वास्त के करें। अलग-अलग आवाज से बोलें तो अच्छा नहीं होगा।

जो चीज तुमने अपने बारे में कही और जिसमें मैंने 16 आना साथ दिया उस पर मैं कायम हूँ। बहुत विचार करने पर भी मुझे लगता है कि तुम्हारे निकलने से

तुम्हारी सेवाशक्ति बढ़ेगी। और इतना तुमको भी संतोष मिलेगा। जैसे मौके पर मैं कमिटी में आता रहा हूँ, नरेन्द्रदेव आते रहे हैं ऐसे तुम भी करोगे और तुम्हारी भरसक मदद मिलेगी और तुम्हारी आजादी बिल्कुल सुरक्षित रहेगी।

मौलाना साहब के बारे में मेरी यह दरख्वास्त है। मैं पाता हूँ कि हम दोनों एक दूसरे से दूर गये हैं। मैं उनको नहीं समझता हूँ न वे मुझको समझते हैं। हिंदू-मुस्लिम मसले के बारे में भी हम दूर जा रहे हैं। ऐसे ही बाकी ख्यालों में। मुझे कुछ ऐसा भी डर है कि मौलाना साहब को अब की कार्रवाई पसंद नहीं है। इसमें दोष किसी का नहीं है। हकीमत हम पहचाने। इसलिए मेरी दरख्वास्त है कि मौलाना सिदारत छोड़ दें, कमिटी में रहें, हंगामी सदर कमेटी चुन ले, वे और सब एक बन कर चले। यह भारी जंग एकमत के सिवाय और सोलह आना साथ देने वाले सदर सिवाय काम ठीक नहीं चलेगा।

यह खत मौलाना साहब को भी पढ़ा दो। इस वक्त तो तुम दोनों के लिये ही है। मेरी एक भी बात और दोनों (को) ठीक न लगे तो उसे फेंक देना। मैंने तो सिर्फ खिदमत के भाव से ही लिखा है। कबूल होवे न होवे। उसमें रंज की बात है ही नहीं।

तुम्हारे मुस्वीह में ए० आई० सी० सी० की तारीख और जगह नहीं दी गई है। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है दरख्वास्त प्रेस में भेज सकते हो।

प्रस्ताव की बहस के लिए तो यहाँ आने की भी जरूरत नहीं है लेकिन जैसा मौलाना साहब का हुक्म।

बापू के आशीर्वाद

25 जून, 1945

चि० जवाहरलाल,

कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट में कई नाम हैं, ट्रस्ट बनवाया गया तब तुम्हारा और सरदार का नाम उसमें दाखिल करने की इच्छा मैंने प्रकट की थी। सब ट्रस्टी राजी थे कि जब तुम बाहर आओगे तब मैं दोनों के नाम दाखल कर दूँ। तुमको पूछना भूल गया था। आज प्रातःकाल ख्याल आया। इसमें आना पसन्द करोगे ? बिल्कुल देहाती औरतों और उनके बच्चों का काम करना है। और वह मेरे ढंग से। इसमें दिलचस्पी ले सको तो मैं तुम्हारे देखने के लिए कागजात भेजूँ। यही बात मैंने सरदार को सुनाई है। वह विचार कर रहे हैं। मैंने कहा है कि इसमें मान की कोई बात नहीं है। काम की ही है।

ऐसे ही हिन्दोस्तानी प्रचार का है। अगर आ सकते हो तो उसमें मुझे तुम्हारे नाम की बहुत दरकार है। इस बारे में भी कहो तो देखने लायक कागजात भेजूँ। तुम्हारे सिर पर बहुत काम पड़ा है। इसलिए और बोझ डालने से डरता हूँ। लेकिन क्या करूँ ?

तुम्हारी गैरहाजिरी यहाँ सबको चुभती है।

बापू के आशीर्वाद

1 सितम्बर, 1945

चि० जवाहरलाल,

तुम्हारा खत मिला। मेनन ने ठीक खबर दी है। सरदार ने वह खत पढ़ा है। तुमने बहुत काम सरहद वगैरा में किया है।

सरदार 12 तारीख को पूना से नहीं जा सकेंगे। चार हफ्तों में तो पूना छूट ही नहीं सकता है। डाक्टर दीनशा को और उनके उपचार को इन्साफ करना है। यहाँ की हवा भी उनके लिए अच्छी है। आराम तो ठीक-ठीक है। उनका दरबार भरा रहता है।

बापू के आशीर्वाद

13 नवम्बर, 1945

चि० जवाहरलाल,

हमारी कल की बात से मुझे तो बड़ा आनंद हुआ। उससे अधिक बात कल तो कर नहीं सकते थे और मेरा ख्याल है कि हम एक ही वक्त मिलकर सब काम पूरा नहीं कर सकेंगे। समय-समय पर हमें अवश्य मिलना चाहिए। मैं तो ऐसे बना हूँ कि अगर मेरी शक्ति इधर-उधर जाने की रहें तो मैं तुमको ढूंढ़ लूँ, एक दो दिन साथ रह लूँ, कुछ वार्तालाप कर लूँ और भाग जाऊँ। ऐसी आज मेरी स्थिति नहीं रही है लेकिन ऐसा मैंने किया है इतना समझो। मैं चाहता हूँ कि हम एक दूसरे को समझें। ऐसे ही लोग भी हमको समझें। अन्त में ऐसा हो सकता है कि हमारा मार्ग ही अलग है तो अलग सही। हमारा हृदय तो एक ही रहेगा, क्योंकि एक है। कल की बात से मैं समझा हूँ कि हम दोनों में विचार श्रेणी में या वस्तु समझने में बड़ा अन्तर नहीं है। तुमको किस तरह से समझा हूँ यह बताना चाहता हूँ जिससे अगर फरक है तो मुझे बता दोगे।

(1) तुम्हारी दृष्टि से हर एक इन्सान की बौद्धिक, आर्थिक, राजकीय और नैतिक शक्ति कैसे बढ़े, वही सच्चा प्रश्न है। मेरा भी वही है।

(2) और उनमें भी हरेक इंसान को ऊँचे चढ़ने का एक सा हक और मौका होना चाहिए।

(3) इस दृष्टि से देखते हुए देहात की और शहर की एक ही हालत होनी चाहिए। इसलिए खाना, पीना, रहना, पहनना और रमत-गमत एक ही होनी चाहिए। आज जो यह स्थिति पैदा करने के लिए अपने कपड़े, खोराक और मकान अपने आप पैदा करना और बनाना चाहिए। और ऐसे ही अपना पानी या बत्ती भी अपने आप पैदा करना चाहिए।

(4) इंसान जँगल में रहने के लिए पैदा नहीं हुआ है, लेकिन समाज में रहने के लिए पैदा हुआ है। एक पर दूसरी सवारी न कर सके, यह विचार करते हुए पता चलता है कि युनिट एक काल्पनिक देहात या ग्रुप होना चाहिए, जो स्वावलंबी रह सके और उस ग्रुप में एक दूसरे पर अवलंबन तो होना ही होगा। इस तरह से सोचने से सारी दुनिया के इन्सानों के सम्बन्ध का नक्शा बन जाता है।

यहाँ तक अगर मैं ठीक समझा हूँ तो दूसरा हिस्सा मैं शुरू करूँगा। जो खत मैंने तुमको पहले लिखा था उसका अंग्रेजी राजकुमारी से करवा लिया था। वह मेरे पास पड़ा है। इनकी अंग्रेजी भी करवा लेता हूँ और उसे साथ में ही भेजता हूँ। अंग्रेजी करवाकर मैं दो काम कर लेता हूँ। एक तो मैं अपना कहना तुमको अंग्रेजी में ज्यादा समझा सकता हूँ तो समझाऊँ और दूसरा मैं तुम्हारी बात पूरी समझा हूँ कि नहीं, उसका भी अंग्रेजी करने से मुझे ज्यादा पता चलेगा।

इंदु को आशीर्वाद

बापू के आशीर्वाद

25 दिसम्बर, 1945

चि० जवाहरलाल,

इसके साथ एक पत्र भेज रहा हूँ क्योंकि लेखक ने लिखा है कि मैं भेजूँ। दक्षिण अफ्रीका में मिला होगा, लेकिन मुझे कुछ ख्याल नहीं है। मैंने तो उसे लिख दिया है कि उसके एड्रेस में बहुत बड़ा दावा किया है। आदमी दीवाना-सा लगता है।

बिहार में विद्यार्थियों के सामने तुमने जो कहा, उसे पढ़ने की यहाँ कुछ फुर्सत

मिली; मुझे बहुत अच्छा लगा।

तुम्हें थोड़ा आराम लेने की आवश्यकता है। लिया जाय तो अच्छा होगा।

कम्युनिस्टों के बारे में तुम्हें लिखने को मैंने राजकुमारी से कहा था। आज अखबार में दूसरा किस्सा पाता हूँ। कतरन इसके साथ है। यह क्या है ? इस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं ?

बापू के आशीर्वाद

18 जनवरी, 1948

चि० जवाहरलाल,

उपवास छोड़ो। साथ में पंजाब के स्पीकर के तार की नकल भेजता हूँ। सैयद हुसेन ने मैंने तुमसे कहा वही कहा था। बहुत वर्ष जीयो और हिन्द के जवाहर बने रहो।

बापू के आशीर्वाद

भाई जवाहरलाल,

प्रो० रामदास गौड़ के पाठ्य पुस्तकों के लिये मैंने कुछ यं० इं० में लिखा है। इसलिये अलग उत्तर नहीं देता—अ० सौ० कमला की तबीयत अच्छी होगी। मैं पंजाब जा रहा हूँ।

मोहनदास गांधी के आशीर्वाद

तिथि अज्ञात

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे खत मुझे अच्छे लगते हैं। उनसे जो जानकारी मुझे होती है वह मुझे अन्यथा नहीं मिलती। इस्लाम-पक्षी आन्दोलन का मुझे भी पता नहीं था। उस पर मुझे आश्चर्य नहीं होता। मुलाकात पर तुमने मेरा बयान देखा होगा।

मेरा तरीका तुम्हें मालूम है। मुझे इन मुलाकातों से बल मिलता है। यह देखना तुम्हारा और दूसरे साथियों का काम है कि देश को, मैं जो कुछ करता हूँ उसका, ठीक-ठीक अर्थ प्राप्त हो। मैं चाहता हूँ कि तुम राजाजी के बारे में कोई चिन्ता नहीं करोगे। वह बिल्कुल ठीक हैं। फिर भी मैं चाहूँगा कि तुम अपनी

शंकाएँ उन पर प्रकट कर दो। मैं 15 तारीख की शाम को शान्ति-निकेतन के लिए और उसके बाद 19 तारीख को मलिकन्दा के लिए रवाना हो रहा हूँ।

सस्नेह

बापू

तिथि अज्ञात

चि० जवाहरलाल,

खुरशेद बहन बहुत दुखी है। उसे लगता है उसके प्रति तुम्हारा दिल सूख गया है। उसे बुलाओ, प्यार करो। तुम्हें मालूम है, तुमको पूजती है।

आज दो बजे जागा। तुम्हारा और राजा जी का ही ख्याल रहा। मेरी राय निश्चित है कि हम इस 'आफर' का स्वीकार नहीं कर सकते हैं। उसमें मुलक का नाश है। अगर तुम्हारी भी यही राय है तो राजाजी से बात करो और आखरी निर्णय कर लो। अगर तुम्हारी राय राजा जी की सी है तो सोचने जैसा रहता है।

बापू के आशीर्वाद

तिथि अज्ञात

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिलने पर मैंने तुम्हें प्रकाशन स्थगित करने की सलाह देते हुए तार किया है। देखो, नवाब मु० इ० खाँ क्या कहते हैं। इन्हें इस बात से चोट पहुँची है कि तुम पत्र-व्यवहार प्रकाशित करना चाहते हो। इस स्थिति में सबसे अच्छा यही होगा कि जब तक मैं इ० से मिल नहीं लेता तब तक प्रकाशन पर तुम्हें जोर नहीं देना चाहिए। उनके मुझे लिखने का भी यही अर्थ है। यदि पत्र-व्यवहार छापने से विरोधभाव बढ़ता है तो उसे छापना निरर्थक है। क्या तुम नहीं सोचते कि प्रतीक्षा करना ज्यादा बुद्धिमत्तापूर्ण होगा ?

प्रेम

बापू

तिथि अज्ञात

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

जे० (जिन्ना ?) से अपनी वार्ताओं के विषय में मैं उद्विग्न होता जा रहा हूँ। क्या तुम मामले में शीघ्रता कर रहे हो ? मैं अपनी कुछ कार्रवाइयाँ उसी के लिए

रोके हुऐ हूँ।

मुझे आशा है कि इन्दिरा के विषय में खुशखबरी का क्रम जारी होगा।

प्रेम

बापू

तिथि अज्ञात

मेरे प्यारे जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र : तनख्वाहों के विषय में तुम्हारा वक्तव्य मुझे पसन्द आया। मेरी सुविधा की बात छोड़ दें तो भी मैं समझता हूँ कि कार्य-समिति की बैठकों के लिए वर्धा सबसे अच्छी और सबसे शान्तिपूर्ण जगह है।

नरीमन से मेरा निरन्तर पत्र-व्यवहार जारी है। उसका पत्र अविवेक का एक अद्‌भुत नमूना है। मैंने जो अन्तिम दो पत्र उसे लिखे हैं उन्हें देखना। म० (महादेव) उनकी प्रतियाँ तुम्हारे पास भेजेगा। यदि वह मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं करता, तो मैं अपना बयान प्रकाशित करूँगा। उसमें मैं उससे कहना चाहता हूँ कि तुम्हें कार्यसमिति और उसके बीच हुए पूरे पत्रव्यवहार को प्रकाशित करने में कोई आपत्ति नहीं है। तुम्हें भी एक वक्तव्य देना होगा। यदि मेरा वक्तव्य देना अनिवार्य हो जाता है तो तुम्हारा वक्तव्य मेरे वक्तव्य के बाद आयेगा। तुमने हिन्दी में जो निबन्ध लिखा है उसके बारे में लिखने के लिए मैं समय निकालने की कोशिश कर रहा हूँ।

प्रेम

बापू

•••